प्रजातंत्र के पकौड़े

राकेश कायस्थ

प्रजातंत्र के पकौड़े

राकेश कायस्थ

© राकेश कायस्थ

पहला संस्करण: मार्च 2018

प्रकाशक

किस्सागो, 103 मीडिया अपार्टमेंट, इंदिरापुरम
अभयखंड-4 गाज़ियाबाद, यूपी 201012

publicationkissago@gmail.com

आवरण चित्र: राजीव कुमार

कला निर्देशन: कुमार अमित (Zodel Studios)

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form by any means, electronic, mechanical, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise without the prior written consent of the writer.

Prajatantra Ke Pakaude

A fantasy novel by Rakesh Kayasth

इस किताब में वर्णित कालखंड, घटनाएं, स्थितियां और सभी पात्र पूरी तरह काल्पनिक हैं। पात्रों की किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से समानता मात्र संयोग है। किताब का उदेश्य पाठकों का मनोरंजन करना है। पढ़ने वाले अपने निष्कर्षों के लिए स्वतंत्र है। लेखक इन निष्कर्षों के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

**उपर के वाक्यों में जो लिखा है, उसके वही मायने हैं। ठीक से समझने के लिए कृपया आराम से पढ़ें, म्यूचुअल फंड के विज्ञापन की तरह नहीं।*

मेरा देश तल रहा है

रक्त वर्षों से नसो में खौलता है
आप कहते हैं क्षणिक उत्तेजना है

अंकल दुष्यंत ने यह सवाल बहुत पहले पूछा था। दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र तब भी खौल रहा था, अब भी खौल रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि हमारी थिंकिंग अब पॉजेटिव है। यह रक्त नहीं है बाबू, खौलता हुआ तेल है, क्योंकि व्यापार हमारी रग-रग में है। अपने ही तेल में पकौड़े तलकर हम खुद खा रहे हैं और पूरी दुनिया को भी खिला रहे हैं। पेट तो भर ही रहा है, तिजोरी भी भर रही है।

हरित क्रांति, आर्थिक उदारीकरण और संचार क्रांति के बाद पकौड़ा क्रांति इस देश की सबसे बड़ी घटना है। लेकिन इसका प्रभाव बाकी क्रांतियों से कई गुना ज्यादा है। पकौड़ा क्रांति ने अर्थ नीति, राजनीति और विदेश नीति को पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। अब पूरी दुनिया में शांति और समृद्धि है। भारत ने विश्व गुरू होने का अपना फर्ज फिर से निभाया है। यह किताब पकौड़ा क्रांति के महानायक बाबू रामभरोसे और उनके साथियों की उपलब्धियों की महागाथा है।

प्रजातंत्र के पकौड़े एकदम गर्मा-गर्म हैं। चखिये और दोस्तो को भी चखाइये।

अथश्री पकौड़ा कथा

लांग लिव इंडियन पकौड़ाज़

पकौड़े के साथ मेरे प्रयोग

गार्ड का टशन और ठेलेवाले की ट्रेजेडी

चाय वाला समझता है पकौड़े वाले का दर्द

तुम भी रामभरोसे मैं भी रामभरोसे

हमार दुलहवा पगला गईल हे देवी मईया ...

विजन बड़ा करो रामभरोसे

डोकलाम में टेंशन है और आप चाइनीज़ खा रहे हैं

तुम मुझे बेसन दो , मैं तुम्हे पकौड़े दूंगा

पकौड़ाज़ हैव ग्रेट पोटेंशियल

मन के पकौड़े

महापुरुष बनने के लिए मेहरारू को निकालना जरूरी है ?

हो रहा है पकौड़ा निर्माण

अब देश जलता नहीं तलता है

पकौड़ी मेरी मां है

मंदिर वहीं बनाएंगे

सर आप तो विवादास्पद ढांचा बन गये

असली पकौड़ेश्वरनाथ तो पीएम जी हैं

रामभरोसे बोले — मैं उपराष्ट्रपति बना तो पकौड़ा कौन छानेगा

पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट

लोकतंत्र को लॉकर में रख दीजिये

बहुत तगड़ी चीज है इमरजेंसी

यह प्रजातंत्र नहीं पकौड़ो पर हमला है

यह पकौड़ातंत्र की जीत है

बुलेट ट्रेन में कैसे बिकेंगे पकौड़े ?

अमेरिका फर्स्ट नहीं पकौड़ा फर्स्ट

भारत का नर्क भी स्वर्ग है

पाकिस्तान बनेगा पकौड़िस्तान

एटम बम नहीं पकौड़े चाहिए

चाय से पकौड़े तक का कालचक्र

पकौड़ेश्वरम वंदे जगदगुरूम्

अपनी तरह के सभी आशावादी भारतवासियों को समर्पित

महान कल्पनाएं सच हो जाती हैं, अगर हम उन्हे सच मान लें

लांग लिव इंडियन पकौड़ाज़

2 जनवरी 2022, वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम, दावोस

उन्हे फेंकना आता था, हमे फेंटना आता था। उन्होने एक आइडिया फेंका, हमने लपक लिया और फटाफट उसे बेसन के साथ फेंट दिया। बस बन गई दुनिया की सबसे अनमोल चीज़। तलते हम पहले भी थे। कड़ाही हमेशा गर्म होती थी, तेल हमेशा खौलता था। लेकिन वैसे पकौड़े नहीं बन पाते थे, जो दुनिया पर राज कर सकें। कारण क्या था? कारण सिर्फ एक ही था— हमारे पास टेलिविजन तो था लेकिन कोई विजन नहीं था।

तलने का विजन आया तो सबकुछ बदल गया। 60 मिनट का काम पांच 5 मिनट में होने लगा। बेसन उतना ही तेल भी उतना लेकिन पकौड़े फूलने लगे पहले 200 परसेंट ज्यादा। पकौड़े बड़े हुए तो हौसले बड़े हुए, हौसले बड़े हुए कारोबार बड़ा हुआ, कारोबार बड़ा हुआ तो इकॉनमी बड़ी हुई। इकॉनमी बड़ी हुई तो भारत बड़ा हुआ। यही बड़ा भारत आज पूरी दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। यह सब हुआ केवल एक आइडिया की वजह है... क्योंकि एक आइडिया दुनिया को बदल देता है। आइडिया किसका था? हमारे विश्व नेता का, जिन्हे तारीफ सुनना बिल्कुल पसंद नहीं है।

लेकिन तारीफ तो करनी पड़ेगी। उनकी हो या पकौड़ो की, बात एक ही है। लांग लिव प्रजातंत्र के पकौड़े।

हॉल तालियां से गूंज उठा। तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्ष अपनी-अपनी कुर्सियों से उठ खड़े हुए हुए। दुनिया के इतिहास में बहुत कम ऐसे मौके आये होंगे जब किसी वक्ता को इस तरह का स्टैंडिंग ओवेशन मिला हो। तालियां लगातार बज रही थी। लेकिन रामभरोसे निर्विकार भाव से खड़े थे। आसियान से लेकर यूएएन तक पिछले चार साल में वे जहां-जहां गये उन्हे ऐसी ही तालियां मिली हैं। उन्हे इन तालियों की आदत है। वे चुपचाप खड़े इस बात का इंतज़ार करते रहे कि तालियां थमे और लोग बैठे तो वे आगे अपनी बात कहें, लेकिन तालियां भला कहां थमने वाली थीं!

रामभरोसे ने दुनिया के सबसे ताकतवर लोगो की भीड़ को देखा फिर सामने लगे जाइंट स्क्रीन में खुद को। सिर पर चमकता कड़ुआ तेल और चेहरे पर दमकता गौरव। वेशभूषा वही जो हमेशा से उनकी पहचान रही है। यानी चेक वाली नीली-सफेद लुंगी और उपर लाल रंग का टी शर्ट, जिसपर यहां-वहां फैले थे बेसन के दाग। रामभरोसे भले ही किसी इंटरनेशनल कांफ्रेंस में जायें, उन्हे देखकर कोई भी कह सकता था कि अभी-अभी कड़ाही से पकौड़ो की नई खेप निकालकर आये हैं। पोशाक के मामले में वे बिल्कुल गांधी की तरह है, जो लंदन के मौसम की परवाह किये बिना राउंड टेबल कांफ्रेस में भी अधनंगे ही शिरकत करने गये थे। रामभरोसे गांधी की तरह अधनंगे फकीर ना होकर पकौड़ा टाइकून हैं। लेकिन अपने उद्देश्यों को लेकर गांधी की तरह ही प्रतिबद्ध हैं। वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनकी पुरानी पहचान धूमिल ना होने पाये। सेक्रेटरी हमेशा उनके फॉरेन टूर पर पुराने कपड़ों का वार्डरोब लेकर चलती है, वे कपड़े जिन्हे पहनकर रामभरोसे टाइकून बनने से पहले नोएडा की फिल्म सिटी में पकौड़े तला करते थे। लुंगी और टी शर्ट पर बेसन के घोल का ताजा छिड़काव धारण करने से ठीक पहले किया जाता है, ताकि मामला एकदम ऑथेंटिक लगे।दुनिया को यह बताने के लिए कि वे फॉरच्यून फाइव हंड्रेड में शामिल दुनिया की पहली पकौड़ा कंपनी के मालिक हैं, रामभरोसे इसी वेशभूषा के साथ कई बार टाई पहन लेते हैं। आज भी उन्होने टाई पहन रखी है।

बहुत देर बजने के बाद आखिरकार तालियां थम ही गईं। अर्थशास्त्री, राष्ट्राध्यक्ष और कई अमीर देशों के वित्त मंत्री जब अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गये तो रामभरोसे ने अपनी बात आगे बढ़ाई— फ्लेमिंग ने पेंसिलिन ढूंढी तो इस दुनिया में लाखों लोगो की जिंदगियां बचनी शुरू हो गईं। न्यूटन ने ग्रेविटी का पता लगाया तो पूरी दुनिया के सोचने का तरीका बदल गया। मिडिल ईस्ट ने तेल के कुएं ढूंढे तो उनपर पैसे बरसने लगे। लेकिन हमने ऐसा कुछ नहीं ढूंढा। हम क्यों ढूंढते हमारे पास तो सबकुछ पहले से था। बात सिर्फ इतनी है कि हम भूल चुके थे। हमें कोई यह बताने और याद दिलाने वाला नहीं था कि पकौड़ा बनाना एक काम है। प्लास्टिक सर्जरी की तरह यह भी एक विज्ञान है। मधुबनी पेटिंग की तरह यह भी एक आर्ट है। कभी देखिये तेल में तैरते पकौड़ो को, जैसे सागर में तैरती मछलियां। खजुराहो के भित्ति चित्र नज़र आएंगे आपको इन पकौड़ो में और दुनिया के तमाम देशों के नक्शे भी। पिछले चार साल में भारत में रोजगार के आंकड़े देख लीजिये आप। ओवर इंप्लायमेंट है। मैन पावर कम पड़ रहा है, इसलिए अब हमें यूरोप से भी पकौड़ा बनाने वाले कारीगर बुलाने पड़ रहे हैं। उन्हे हम अपनी स्किल्ड इंडिया स्कीम में ट्रेनिंग दे रहे हैं और

उसके बाद रोजगार भी। हमारा पकौड़ा विश्व को जोड़ता है। यही वजह है कि यूएन ने इसे इंटरनेशनल फूड ऑफ पॉवर्टी इरैडिकेशन एंड हार्मोनी घोषित किया है।

तालियां फिर से बजने लगीं। वर्ल्ड बैंक के वाइस चेयरमैन ने पास बैठे अमेरिका के वित्त मंत्री से फुसफुसाकर पूछा— भारत के पकौड़े वाले के पास ऐसी जानकारी और ऐसा विजन है तो फिर थिंक टैंक के पास कैसा होगा?

अमेरिकी वित्त मंत्री ने कहा— ये लोग विश्व गुरू ऐसे ही थोड़े ना है। रामभरोसे जी के अधिग्रहण के बाद पिज्जा हट अब `पकौड़ा हट' बन चुका है। मैकडोनल्ड ने भी अपने आपको हंड्रेड परसेंट पकौड़ा आउटलेट घोषित कर दिया है।

होंडुरास के राष्ट्रपति खड़े हुए और उन्होने रामभरोसे से पूछा लिया- आपलोगो ने पकौड़े के ज़रिये अपने यहां की बेरोजगारी कैसे दूर कर ली? भारत जैसे बड़े देश में इतना मुश्किल प्लान इंप्लीमेंट कैसे हो पाया?

रामभरोसे जी बोले— इसके लिए बड़ी सोच चाहिए। एक समय हमारे देश में काम बहुत तेजी से हो रहा था। जितनी आबादी थी, उससे ज्यादा टॉयलेट बन चुके थे। जितने हाउस होल्ड थे लगभग उससे थोड़े से ज्यादा कुकिंग गैस सिलेंडर मुफ्त में बांटे जा चुके थे। लेकिन इंप्लायमेंट का इश्यू फिर भी था। चार साल पहले हमने पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट-2018 तैयार किया था। हमने अपना रास्ता चुना और ईमानदारी से उस पर आगे बढ़े और नतीजा दुनिया के सामने है। डाउ जोंस में पिछले एक साल में सबसे ज्यादा बढ़ने वालों में पांच शेयर पकौड़ा कंपनियों के हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश की जीडीपी से कहीं ज्यादा वैलुएशन भारत की पकौड़ा कंपनियों के हैं।

हॉल एक बार फिर तालियों से गूंजने लगा। एक और गरीब अफ्रीकी देश के प्रतिनिधि ने पूछा— लेकिन आपलोगो ने इतनी बड़ी नौजवान आबादी को पकौड़ा बनाने के लिए प्रेरित किस तरह किया? वे कुछ और भी तो कर सकते थे?

रामभरोसे ने अपनी टाई ठीक की— इंडिया इज़ ए पॉलिसी ड्रिवेन स्टेट। हमने हर साल एजुकेशन बजट घटाया ताकि सरकारी स्कूल और कॉलेजो को कम फंड मिले। फंड कम मिले तो सीटें कम हुई और टीचर भी कम हुए। इस तरह ड्रॉप आउट बढ़े। ड्रॉप आउट पॉपुलेशन हमारी इंडस्ट्री का बैक बोन है। मेरी किस्मत अच्छी थी कि मेरे मां-बाप ने मुझे पढ़ाया नहीं वर्ना मैं आज क्लर्क होता, इतने बड़े एंपायर का मालिक नहीं। ऑल इंडिया पकौड़ा फेडरेशन की हमेशा से यह डिमांड रही है कि

कक्षा आठ के बाद की पढ़ाई इतनी महंगी कर दी जाये कि अमीर लोगों के अलावा कोई अफोर्ड ना कर पाये। अमीर लोगो के पास ज़रूरत से ज्यादा पैसा होता है। एजुकेशन महंगा होगा तो सरकार को ज्यादा पैसा मिलेगा और हमें चीप मैन पावर।

तालियों और हवा में तैरती जिज्ञासाओं के बीच रामभरोसे जी ने अपनी बात खत्म की — दोस्तो हमारा मिशन अभी अधूरा है। कम या थोड़ा दुनिया के हरेक प्लेट में होना चाहिए पकौड़ा। लीजिये मैं आपके लिए कुछ पेश करता हूं—

मैं हर रोज जो तलता और तलवाता हूं
वही पकौड़े आज आपको खिलाता हूं

हॉल में धड़ाधड़ पकौड़े सर्व होने लगे। बाबा दिव्यलोचन चंदनदेव की कच्ची घानी में बने करारे भारतीय पकौड़े। गोभी वाले, मिर्ची वाले, पालक वाले, प्याज़ वाले, तरह-तरह के पकौड़े। देश के लिए अभूतपूर्व गौरव के क्षण। भारतीय पकौड़े खाते, तोंद पर हाथ फेरते इंडिया का डेवलपमेंट मॉडल पूछते इंटरनेशनल डेलीगेट्स। आईमएफ के चेयरमैन ने तीसरी प्लेट खत्म करने के बाद डकार ली और फिर एक गगनभेदी आवाज़ के साथ भारतीय पकौड़ो को इस्तकबाल किया।पास बैठे बाबाजी ने कहा— हींग ज्यादा पड़ा होता है, इन पकौड़ो में। बहुत महंगा आता है लेकिन हमें क्या फिक्र? हम तो दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी हैं। भारतीय पकौड़े स्वास्थ्य वर्धक हैं। इनके सेवन से शरीर में वायु का संचय नहीं होता है। आईएमएफ प्रमुख ने एक बार फिर भारतीय पकौड़ो की शान में कुछ कहा। बाबाजी ने फौरन कुछ निकाला— यह लीजिये मेरे पास दुर्गंध नाशक वटी भी है।

आईएमएफ प्रमुख ने कृतज्ञता से बाबाजी की तरफ देखा और पूछा— आपकी कंपनी पकौड़े नहीं बनाती है? बाबाजी हंसकर बोले— जब से भारत में पकौड़ा क्रांति हुई है, हमें वटी बनाने से ही फुर्सत नहीं है। कोई विदेशी कंपनी होती तो हम उसे परास्त करने के लिए मैदान में अवश्य आते। यहां तो पूरा मामला स्वदेशी है, अपना ही बच्चा है रामभरोसे। पीछे वाली कुर्सियों से भी पकौड़ो के आफ्टर इफेक्ट वाली कई धमाकेदार आवाज़े आईं। 21 तोपो की सलामी को मात करती हर आावाज़ कह रही थी— इंडिया हैज एराइव्ड। लांग लिव इंडियन पकौड़ज़, लांग लिव वर्ल्ड लार्जेस्ट डेमोक्रेसी।

पकौड़े के साथ मेरे प्रयोग

यह साल 2022 है। रामभरोसे जी ने दावोस में वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम की मीटिंग खत्म की और सीधे दुबई जा पहुंचे जहां उन्हे एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्धे पर लेक्चर देना है। विषय है— पकौड़ा इकॉनमी किस तरह भविष्य में ऑयल इकॉनमी का विकल्प बनेगी। शेखो की नींद वैज्ञानिकों की इस भविष्यवाणी ने उड़ा रखी है जिसमें कहा गया है कि अगले सौ साल में तेल के सारे कुंए सूख जाएंगे। तब मिडिल ईस्ट के लोग क्या करेंगे? आलम-ए- अरब के बड़े-बड़े शेखचिल्ली भी अपने शेखों की चिंता दूर नहीं कर पाये। वास्तविक समाधान हासिल करने के लिए अरब वर्ल्ड

अजीज़ दोस्त हिंद की तरफ देख रहा है। मामले के सबसे बड़े एक्सपर्ट यानी रामभरोसे जी को खास तौर से बुलाया गया है। दुबई में रामभरोसे को एक और ज़रूरी काम है। उनकी बेस्ट सेलर आत्मकथा `पकौड़े के साथ मेरे प्रयोग' के अरबी और फारसी संस्करणों का विमोचन किया जाना है। यह किताब नोबेल प्राइज़ के लिए भी प्रस्तावित है। वैसे साहित्य के अलावा रामभरोसे जी का नॉमिनेशन नोबेल पुरस्कार के लिए दो और कैटेगरी में हुआ है। ये कैटेगेरी हैं - अर्थशास्त्र और शांति। लगभग चार साल में भारत की पकौड़ा क्रांति का जो ग्लोबल इंपैक्ट हुआ वह फ्रांस या रूस की महान क्रांतियों से बड़ा नहीं है तो कई कम भी नहीं है। गृह-युद्ध में उलझे दुनिया के कई हिस्सों शांति है। आप दुनिया के किसी भी कोने में जाइये आपको `पकौड़ामैन ऑफ इंडिया' की तस्वीर वाले टी शर्ट पहनकर घूमते नौजवान बड़ी आसानी से मिल जाएंगे।

रामभरोसे जी अल-बुर्ज के टॉप फ्लोर पर ठहरे हुए हैं। वे इस समय अपनी बालकोनी से सैकड़ो मील तक फैली एक चमकती हुई दुनिया देख रहे हैं। लेकिन संघर्ष की पथरीली राह से निकली उनकी सफलता की कहानी दुबई की इमारतों से निकलने वाली रौशनी से कई गुना ज्यादा चमकीली है। नोएडा के एक मामूली ठेले से लेकर दुनिया की सबसे ऊंची इमारत के सबसे महंगे सुइट तक। कहां से कहां पहुंच गये रामभरोसे और 2018 से 2022 तक के चार साल में कहां से कहां पहुंच गया उनका देश भारत। एक समय उन्हे खड़ी बोली में ठीक से अपनी बात कहनी नहीं आती थी, लेकिन आज पूरी दुनिया उन्हे सुनने को बेताब है। बेशुमार शोहरत

और अति व्यस्त दिनचर्या के बावजूद रामभरोसे जी के जीवन में बहुत कुछ वैसे का वैसा है। प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के मेंटॉर के रूप में ढेर सारी कॉरपोरेट मीटिंग, कई कार्यक्रमों की अध्यक्षता और चैरिटी वगैरह से वक्त निकालकर भी वे रोजाना कम से कम आधा किलो पकौड़ा ज़रूर छानते हैं। हथेलियों पर चेहरा टिकाये रामभरोसे बुर्ज खलीफा से नीचे देख रहे थे, जहां की रौशनियों के बीच से उन्हे अपना अतीत और पकौड़ा क्रांति से पहले का अंधकारमय भारत दोनो एकदम साफ दिखाई दे रहे हैं। इस तरह 7 जनवरी 2022 को दुबई के बुर्ज खलीफा की चोटी पर खड़े पकौड़ा टाइटकून रामभरोसे की कहानी फ्लैश बैक में दाखिल हो गई—

क्योंकि टाइकून भी कभी कंगला था। कंगला इसलिए था क्योंकि उसके दादा, परदादा, लकड़दादा सब कंगले थे। वह 18 साल का एक अबोध नौजवान था, जब काशी विश्वनाथ में बेटिकट लटककर बनारस से दिल्ली आया था। बाप मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते थे। जब रामभरोसे पैदा हुए का बाप का पुश्तैनी धंधा अंतिम सांस ले रहा था। ग्लोबल हो रही काशी नगरी में मिट्टी के बर्तन भला कौन खरीदता? रामभरोसे के बाप ने बहुत दिमाग दौड़ाने के बाद अपने बिजनेस का फारवर्ड इंटीग्रेशन किया। एक छोटी सी चाय की टपरी लगा ली और अपने हाथ के बने कुल्हड़ में चाय बेचने लगे। लेकिन कुल्हड़ दिल्ली और मुंबई जैसे मेट्रो में कूल है, बनारस से लगे किसी कस्बे में नहीं। नया धंधा नहीं चला उल्टा उसके चक्कर में पुराना भी बैठ गया। ऐसे में घर में पैदा हुई छठी औलाद जिसे हवा में लटकाकर उसके दादा ने नामकरण किया- ई देश में परजातंतर से लेके सरकार तक सब भोसड़ी के रामे भरोसे हउए, जा बचवा तूहो राम भरोसे कहाव। होई वही जे राम रचि राखा।

तो दादा से नाम लेकर बालक राम भरोसे अपने बाप के नक्शे कदम पर चलने लगा। भगवान राम की तरह रामभरोसे भी शिवजी का अनन्य भक्त था। नौ साल की उम्र में खेत में बैठे रामभरोसे के बायें चूतड़ पर करैत ने काट लिया था। लेकिन कृपा बाबा भोलेनाथ नाथ की समय पर इलाज हो गया और जिंदगी बच गई। जिंदगी आगे भी बचाये रखने के लिए रोजगार चाहिए था। बालक से नौजवान हो चुका रामभरोसे ने एक दिन बाबा विश्वनाथ को गोड़ लागके रेलागाड़ी पर लटक गया। राजधानी में उतरते ही पता चला कि उस जैसे लोगो के लिए दिल्ली जमुना पार ही नहीं बल्कि अब हिंडन पार से शुरू होती है। दिल्ली से कुछ दूर उसे नोएडा में एक चाय वाले के यहां हेल्पर काम मिला पुराने एक्सपीयिरंस के आधार पर। लेकिन नौकरी दो ही

महीने चल पाई। अगली नौकरी मिली एक हलवाई के यहां। काम शुरू में बर्तन धोने का था लेकिन बाद में वह उस्ताद जी का हाथ बंटाने लगा। बेसन फेंटते-फेंटते एक दिन उसे पकौड़े छानने की अनुमति मिल गई। रामभरोसे ने जिस अंदाज़ में बेसन का घोल खौलती कड़ाही में डाला उसे देखकर उस्ताद की आंखे फटी रह गईं, रीयेक्शन कुछ वैसा ही था जैसा पहली बार सचिन तेंदुलकर को खेलते देखकर कोच रमाकांत अचरेकर का रहा होगा। लौंडे तू बहुत आगे जाएगा एक दिन— उस्ताद से स्नेह से कहा।

शागिर्द जल्द आगे निकल गया। नया ठेला ठेलते हुए नोएडा के नया बांस से फिल्म सिटी जा पहुंचा। फिल्म सिटी यानी राष्ट्र निर्माण में लगे टीवी एंकर और हर पीटीसी में न्यूज़ ब्रेक करने वाले रिपोर्टरो की ग्लैमरस दुनिया। तो फिल्म सिटी में लगा रामभरोसे का किराये का ठेला साथ में था एक दिहाड़ी चेला। चेला बेसन फेंटता और गुरू पकौड़े निकालता। गुरू प्लेट में पकौड़े सजाता और चेला खाली प्लेट उठाता। आसपास चाइनीज़ बेचने वाले ठेले थे और मैगी बनाने वाले भी। कंपीटिशन बहुत तगड़ा था। रात को रामभरोसे पैसे गिनने शुरू करता। ठेले का किराया एक तरफ, जहां से कच्चा माल उठाया उसका पेमेंट एक तरफ। फिर चेले की दिहाड़ी। सबकुछ निकालकर अपनी आमदनी गिनना शुरू करता तभी सिपाही जी आ धमकते थे। रोज का नियम था-

सूरज टरै, चांद टरै, टरै जगत व्यापार
लेकिन ना कभी टरै नोएडा के हवलदार

नाम भले हफ्ता हो लेकिन वसूल किसी भी वक्त किया जा सकता है। रामभरोसे दुनियादारी के खेल तेजी से सीख रहा था। उसके लिए जिंदगी का सबसे बड़ा सबक था... `सामने वाले को इतनी इज्ज़त दे दो कि भोसड़ी के बेइज्ज़ती करने से पहले दस बार सोचे'। रामभरोसे जानता था कि सिपाही को हवलदार साहब और हवलदार को दरोगा जी कहना चाहिए। दारोगा जी को क्या कहना चाहिए यह पता नहीं। दारोगा जी बहुत बड़े आदमी हैं। खुद वसूली के लिए क्यों आएंगे भला! उनका काम पॉलिसी बनाना है, दिशा दिखाना है। ठीक वैसा ही काम जैसा पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी में प्रधानमंत्री का होता है।

जिस तरह रामभरोसे सिपाही को हवलदार साहब कहता था, उसी तरह वह अलग-अलग चैनलों के प्रोड्यसूर्स को एडिटर जी कहता था।हरेक इंटर्न को वह प्रोड्यूसर

साहेब कहता था। एंकर्स के लिए उसे कुछ और कहने की ज़रूरत नहीं थी। नाम ही काफी थे विज्ञापन के लिए—- सईद अंसारी जी इतने बड़े आदमी हैं, फिर भी पकौड़े किसी से मंगवाते नहीं हैं, ठेले पर अपने आप चले आते हैं। प्रसून जी को मिर्ची वाले ज्यादा पसंद है। अजित अंजुम जी मिर्ची बिल्कुल नहीं खाते हैं। सुमित अवस्थी कहते हैं कि एकदम लाल-लाल करके दो।

रामभरोसे की सहज बुद्धि तेज थी। `होनहार बीरवान के होत चिकने पात' टाइप मामला था। वह जानता था कि किस्मत के खेल ने उसे यहां ला पटका है। इसलिए बार-बार बनारसी अंदाज़ में कहता था...

जब किस्मत में लिखे हो...
तो काहे नहीं बेचे पकौड़े

पत्रकारों के बीच में रहकर उसे खबरे सुनने, सूंघने और समझने की आदत हो गई थी। वह सुनता सबकुछ था लेकिन समझता अपने ढंग से था। जब ब्रेकिंग न्यूज़ चली कि गाय सांस में ऑक्सीजन लेकर ऑक्सीजन ही छोड़ती है, तो बहुत ज़ोर-ज़ोर से हंसा— ज़रूरत से ज्यादा सप्लाई हो गई है ससुरी ऑक्सीजन की। टीवी वालो को बताना चाहिए कि गइया गोबर में नोट दे रही कि नहीं।

लेकिन जब ख़बर 2000 रुपये के नये नोट की खूबियों वाली आई तो रामभरोसे सीरियस हो गया। उसने घर जाकर बीवी को बताया कि देश के दुश्मनों की अब खैर नहीं है। ब्लैक की कमाई जहां भी छिपा के रखेगे सैटेलाइट से सरकार को ख़बर हो जाएगी काहे कि नये नोट मा एक ठो नैनो चिप लगी है। चिप जानती हो पगली.. मोबाइल फोन के अंदर लगा रहता है, समझो वही वाला। बचपन से ही गजब का टेक्नो सैवी था रामभरोसे।

कायदे-कानून का पाबंद होना उसकी एक और बड़ी खासियत थी। जब नोटबंदी हुई तब उसने वसूली वाले सिपाही से पूछा— हवलदार साहेब हफ्ता पेटीएम कर दें का? बदले में सिपाही नाराज़ होकर लाठी पटकने लगा। रामभरोसे बोला— हम कौन ससुर पार्लियामेंट जाके आपका कंप्लेन करेंगे, जो इतना गरमा रहे हैं, पूरा देश सिस्टम से चल रहा है तो आपको का दिक्कत है?

लेकिन सिपाही जी नहीं माने। उन्हे वसूली में सौ-सौ के नोट में चाहिए थे जो रामभरोसे फिलहाल दे नहीं सकता था। नियमित रूप से हफ्ता चुकाने की हालत

किसी ठेलेवाले की नहीं थी। नतीजा यह कि क्रेडिट बढ़ने लगा और नोएडा पुलिस की पूरी इकॉनमी चरमराने लगी। आखिरकार जब हालात सुधरे तो रामभरोसे ने नैनो चिप वाले 2000 के नये नोट के साथ नोएडा पुलिस का कर्जा चुकाया। फिल्मों की तरह हमारी जिंदगी में भी आखिर में सबकुछ ठीक हो ही जाता है। लेकिन यह रामभरोसे की जिंदगी की शुरुआत थी, असली पिक्चर अभी बाकी था।

गार्ड का टशन और ठेलेवाले की ट्रेजेडी

एक बुरा सपना अब भी अक्सर बिजनेस टाइकून रामभरोसे का पीछा करता है। उन्होने मेहनत से जो बेसन फेंटा था, बीवी ने उसे नाली में बहा दिया है। रामभरोसे के कानो में गूंज रही है वही कर्कश आवाज़—कुछ काम पकड़ लो इज्ज़त वाला। ई कौनो जिंदगी है?

अपनी जवानी के अनमोल साल रामभरोसे ने घरवाली के इन्ही चुभते हुए तानों के बीच काटे थे।

`इज्ज़त वाला काम'— हथौड़े की तरह दिल पर लगता था नौजवान रामभरोसे के। बाप के अनगिनत कंटाप मिलकर जितना दर्द नहीं दे पाये उससे कहीं ज्यादा दर्द होता था — `इज्ज़त वाला काम' सुनकर। उस दिन सुबह भी फिर से तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई थी।

`पकौड़े छान रहे हैं, बड़े-बड़े टीवी वाले साहब लोग खिला रहे हैं और का होता है, इज्ज़त वाला काम? सुंदर-सुंदर एंकर सब घेर के खड़ी रहती रहती है, हमको सुबह से शाम तक— भरोसे जी दे दो ना प्लीज... भरोसे जी मजा नहीं आया, थोड़ा चटनी और डालो ना प्लीज।' देख लोगी तो बेहोश हो जाओगी। गोड़ की धोवन भी नहीं हो तुम उनकी और कहती हो कि काम इज्ज़त वाला नहीं है।'

नारी के अस्तित्व पर चोट करने वाला रामभरोसे का दांव बेकार गया। घरवाली ने तुनकर कहा— काहे नहीं चले जाते हो कोनो सुंदर एंकरी के साथ। जान छूटे तो हम भी गंगा नहायें। तुमसे ज्यादा पैसा सामने वाले गेट पर खड़ा गार्ड कमाता है। पर्सनैलिटी देखी है उसकी— एकदम टिप टॉप। आयरन वाली वर्दी के उपर पुलिस वाली टोपी पहनता है। हर महीने बंधी पगार मिलती है, मकान खाली है या नहीं यह बताने का कमीशन लेता है अलग से। नीचे जो कपड़ा प्रेस करता है, उ भी जादा कमाता है तुमसे, बात करते हो! तुमरे काम में ना तो इज्ज़त है और ना पइसा।

कौन दीहि हमके इज्ज़त वाला काम, तोहार भिखमंगा बाप?

जवाब सुने बिना रामभरोसे पांव पटकता हुआ घर से निकला था। मूड बहुत खराब था। घर से निकलते ही गार्ड पर नज़र पड़ी जो उसे देखकर अजीब तरीके से अपनी मूंछें सहला रहा था। आज उसकी वर्दी कुछ ज्यादा चमकदार लग रही थी। रास्ते में

ख्याल आया कि कहीं बीवी का गार्ड या प्रेस वाले से कोई चक्कर तो नहीं चल रहा है। सोचा बीवी को घर से निकाल दूं। रामचंद्र जी भी मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए सीता माता को घर से निकाले थे। उनकी कहानी लिखने वाले बाबा तुलसीदास भी घरवाली समेत घर-बार छोड़ आये थे। घरवाली ससुरी होती ही है, जी का जंजाल। गुस्से से भभकता रामभरोसे ठेले पर पहुंचा। दिहाड़ी चेले को तीन बार बिना बात डांट लगाई और एक बार बिना देखे गर्म कड़ाही छू बैठा। फिर उसे एहसास हुआ कि मूड खराब करना गरीब का काम नहीं है, ये सब अमीरो के चोंचले हैं। हथेली की जलन के बावजूद अपने रोज के काम में जुट गया। धंधा चाहे दिनभर जैसा भी हो शाम को उसके ठेले के सामने बहुत भीड़ रहती थी। उस दिन भी कई लोग ठेले को घेरे खड़े थे। भीड़ में यह पहचान पाना मुश्किल था कि इनमें से कौन पकौड़े लेने आया है, कौन पास के खोखे से चाय-सिगरेट और कौन केवल गॉसिप करने आया है। रामभरोसे के हाथ बिजली के रफ्तार से चल रहे थे। चेला फटाफट प्लेटे आगे बढ़ा रहा था। अचानक एक मिमियाती हुई तेज आवाज़ आई— अबे ओय पकौड़े तल रहा कि बीरबल की खिचड़ी बना रहा है। आधा घंटे हो गया यहां खड़े-खड़े।

सॉरी सरजी भीड़ में हम देखे नहीं आपको। आप बताये भी तो नहीं पहले, अभी देते हैं दो मिनट में?

`देखे नहीं क्या मतलब यहां आधे घंटे से खड़ा हूं।'

यार वहां सीमा पर जवान खड़ा है और तुम हो कि यहां आधे घंटे भी खड़े नहीं हो सकते— बाजू में खड़े किसी आदमी ने कहा।

यह सुनते ही डेढ़ पसली वाला वह अधेड़ आग-बबूला हो गया। उसने उछलकर सीधे कॉलर पकड़ ली— क्या बोला हराम के फिर से तो बोल...

अरे वर्माजी ठीक ही तो कहा उसने, जब सीमा पर जवान खड़ा हो सकता है तो फिर आप यहां थोड़ी देर खड़े क्यों नहीं हो सकते?

वर्माजी ने रामभरोसे की कड़ाही से बिजली की रफ्तार से कलछी निकाल ली और तलवार की तरह घुमाने लगे। टिप्पणी करने वाला दूर हट चुका था। वर्माजी ने गुस्से में रामभरोसे के कूड़ेदान को लात मारी और पल भर में स्वच्छ भारत 2014 से पहले वाली हालत में लौट आया। मजबूरन रामभरोसे को ठेला छोड़कर वर्माजी की तरफ लपकना पड़ा। लेकिन वर्माजी के माथे पर खून सवार था। उन्होने रामभरोसे को धक्का दिया। रामभरोसे चाहता तो उन्हे दो मिनट में तारे दिखा देता। लेकिन उसे

अट्टा चौराहे के बस स्टॉप पर लगे एक सरकारी बैंक का बोर्ड याद आ गया— ग्राहकों की संतुष्टि हमारा कर्तव्य है। वही बोर्ड जिसके नीचे रात को बिना नागा लड़कियों की तरह सज-धजकर दो हिजड़े खड़े होते थे और घर लौटते रामभरोसे को देखकर भद्दे इशारे करते थे।

लेकिन रामभरोसे ने वर्माजी के साथ कुछ भी भद्धा नहीं किया। पिटकर भी चुप रहा। साथी पत्रकार वर्माजी को किनारे ले जा चुके थे और बाकी लोग रामभरोसे की मिजाज पुर्सी कर रहे थे। ऐसा सीन कभी-कभी रात के नौ बजे के बाद होता था जब अपनी कार को बार बनाने वाले पत्रकार उससे पकौड़े मंगवाते थे और एक-दूसरे की गाड़ी में उल्टी करने के बाद गुत्थम-गुत्था हो जाते थे। लेकिन यह पहला मौका था जब किसी ने रामभरोसे पर बिना बात हाथ उठाया और वो भी तिनके जैसा एक आदमी।भीड़ छंटी तो ठेले के पास सिर्फ रामभरोसे के दो हमदर्द रह गये।

उन्होने रामभरोसे को वर्माजी की ट्रैजिक कहानी सुनाई। उम्र 41 साल की हो चुकी थी लेकिन अज्ञात कारणों से शादी नहीं हो रही थी। बड़ी मुश्किल से पिछले साल घोड़ी चढ़ने का योग बना। घोड़ी तो चढ़ गये लेकिन उसके बाद... पता नहीं। ऑफिस से छुट्टी लेकर नीम-हकीमों के चक्कर काटते रहते हैं। कहीं कोई फायदा नहीं हुआ तो किसी ने शर्तिया इलाज वाले एक लखनवी डॉक्टर का पता दिया। गरीब रथ उनके लिए उम्मीदों का रथ बन गई। चारबाग रेलवे स्टेशन पर वर्माजी को पिक करवाने के लिए गाड़ी डॉक्टर साहब ने भेज दी थी। दो लाख रुपये की एफडी तुड़वा कर गये थे वर्माजी क्योंकि डॉक्टर साहब ने फायदा ना होने पर पैसे वापस करने की गारंटी दी थी।

लखनऊ से लौटने के बाद वर्माजी के जीवन में सचमुच चमत्कार हो गया। वे नये आत्मविश्वास से लबरेज थे। लेकिन यह खुशी ज्यादा समय नहीं टिकी। वर्माजी दोबारा लखनऊ भागे फिर वापस आये और कुछ समय बाद फिर गये। यह सिलसिला लगातार चलता रहा। एक रात कार में दारू पीते वक्त उनके एक करीबी दोस्त ने अपने दूसरे दोस्त के सामने खुलासा किया— वर्माजी बहुत सीधे हैं। डॉक्टर ने उन्हे यह कहकर फुसला दिया कि आप बहुत स्वार्थी हो रहे हैं। इलाज में वक्त लगता है। आपको अपनी पड़ी है और वहां कड़कती सर्दी में भी सीमा पर जवान खड़ा है, उसका कुछ नहीं? बेचारे वर्माजी जी यह नहीं कह पाये कि सारा जद्धोहद्ध तो कड़कती सर्दी में खड़े होने का ही है। वे चुपचाप वापस घर लौट आये और डॉक्टर की तजवीज बीवी को बताई। धर्मपत्नी ने जवाब दिया—आग लगे तुम्हारे

डॉक्टर और सीमा पर खड़े जवान को। तुम जो हो, वो तो हो ही, एक नंबर के गधे भी हो। फोकट में दो लाख रुपया डुबा आये। मुझे किसी और चीज़ से मतलब नहीं है, जैसे भी हो डॉक्टर से दो लाख वापस मांगो। वर्माजी एक बार फिर गये, लेकिन डॉक्टर पैसे लौटाने को तैयार नहीं हुआ। अब कॉन्फिडेंशियल वकील ढूंढ रहे वर्माजी। वकील भी इतने कमीने कि पूरी कहानी तफसील से सुनने के बाद वर्माजी को टहला देते हैं। बेचारे वर्माजी! इस क्राइसिस ने उनका इमोशनल बैलेंस बिगाड़ दिया है। किसी भी खड़ी चीज़ का जिक्र आते ही उन्हे दौरा पड़ जाता है।

साथ काम करने वाले भी साले सब के सब नंबरी हरामी। पहलाज निहलानी फिल्म सेंसर बोर्ड के चेयरमैन बने तो न्यूज़ रूम कोई वर्माजी से पूछ बैठा कि उनका सबसे मशहूर गाना कौन सा है? वर्माजी ने दिमाग दौड़ाया लेकिन याद नही आया फिर एक कलीग ढूंढकर लाये यू ट्यूब से— खड़ा है खड़ा है, खड़ा है... दर पे तेरे आशिक खड़ा है। सिनेमा हॉल में राष्ट्रगान अनिवार्य हुआ तो किसी ने न्यूज़ रूम में आकर वर्माजी को सूचना दी- अजब मुसीबत है। जंगली जवानी देखने जाओ तो भी खड़ा होना पड़ता है। यानी पहले आप खड़े हो फिर साला आपका खड़ा होगा। इस टिप्पणी में वर्माजी का अपमान और देश का अपमान दोनो था। लिहाजा उन्होने न्यूज़ डायरेक्टर से इसकी लिखित शिकायत कर दी। वर्माजी को उम्मीद थी कि राष्ट्रवाद के माहौल में उस बदत्तमीज की नौकरी ज़रूर जाएगी। लेकिन न्यूज़ डायरेक्टर ने सिर्फ लिखित चेतावनी देकर छोड़ दिया।

वर्माजी के किस्से सुनकर रामभरोसे खूब हंसा। दिहाड़ी वाले चेले ने भी बत्तीसी बाहर कर दी। लेकिन रात को दुकान बढ़ाकर लौटते वक्त रामभरोसे को लगा कि उसकी बीवी ठीक कहती है। यह कोई इज्ज़त वाला काम नहीं है। जब इज्ज़त ही नहीं तो वह परदेस में क्यों पड़ा है? मिट्टी का काम करने वाले आजकल टेराकोटा के बर्तन बना रहे हैं। ठीक-ठाक कमाई हो रही है। पता करेगा अगर जमेगा तो गांव लौट जाएगा।

चाय वाला समझता है पकौड़े वाले का दर्द

बुर्ज खलीफा के आलीशान सुइट में उस रात रामभरोसे जी को नींद बहुत गहरी आई। वेट्रेस मॉर्निंग टी लेकर आई। टी पॉट से प्याले में गिरती चाय को रामभरोसे ने देखा। वक्त की धार भी कुछ ऐसी है। स्मृतियां चार साल पीछे 2018 में लौट गई। कानो में इको होने लगी वही आवाज़— `एक चायवाला समझता है, पकौड़े वाले का दर्द।' दर्द का रिश्ता बहुत गहरा होता है, यह राम भरोसे जानता था। लेकिन यह नहीं जानता था कि यह रिश्ता उसकी जिंदगी और पूरे देश का भविष्य बदल देगा।

कोई काम छोटा नहीं होता, सोच छोटी होती है। बीवी ने रामभरोसे के मन में छोटी सोच भरने में कोई कसर बाकी नहीं रखी थी। कहती थी- बारह साल हो गये पकौड़ा छानते। आखिर क्या कर लिया तुमने जो आगे कर लोगे। मेरी मानो चुपचाप गांव लौट जाओ। रामभरोसे ने कहा- टेराकोटा वाले काम का पता कर रहे हैं। एक बार मामला समझ में आ जाये तो लौट चलेंगे अपने गांव।

बीवी बनारसी हिंदी में जो जवाब देती उसका एक ही मतलब था—तुमसे कुछ होनेवाला नहीं है। यहीं जिंदगी खपेगी तुम्हारी सड़क के किनारे खड़े-खड़े। एक दिन मरोगे भी सड़क पर।

रामभरोसे ने उस दिन भी हमेशा की तरह आवाज़ अनसुनी की और निकल पड़ा फिल्म सिटी की तरफ। फिल्म सिटी न जाने क्यों आज उजड़ा हुआ चमन लग रहा था। खोखे टपरी सब गायब। अभी दो दिन पहले ही तो वसूली करके गये थे कमेटी वाले फिर अचानक क्या हुआ? दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। ना जाने ठेले का क्या हुआ होगा? रामभरोसे भागा-भागा सड़क की दूसरी तरफ उस पेड़ के पास पहुंचा जहां ठेला चेन के सहारे तने से बंधा होता था। सांस में सांस आई, उसका ठेला मौजूद था और चेला भी ड्यूटी पर मुस्तैद था। पेड़ के नीचे नज़र आया वही चरसी जो दिनभर उसी जगह पाया जाता था। चरसी हंसकर बोला— रोते थे ना बेटा कि पैसे लेकर भी पुलिसवाले ने सबसे घटिया जगह दी है। कोने में ना होता उठ जाता आज तेरा भी ठेला।

आगे की कहानी चेले ने बताई। सामने वाले चैनल में आज प्रधानमंत्री जी आ रहे हैं। इसलिए सिक्यूरिटी वालो ने सब हटवा दिया। रामभरोसे का ठेला डिवाइडर के दूसरी

तरफ है, इसलिए उसे नहीं छेड़ा गया। वैसे पीएम साहब की हिदायत भी थी कि गरीबों को कम से कम तकलीफ पहुंचाई जाये। लेकिन ये अफसर और सिक्यूरिटी वाले प्रधानमंत्री की सुनते कहां हैं? बाकी सब हट गये रामभरोसे बच गया तो उसकी किस्मत।

चेला धकाधक बेसन फेंट रहा था। सामने कटी प्याज, पालक और गोभी के अंबार लगे थे। आज तो कोई नहीं है, ना ब्रेड आमलेट वाला, ना चाउमिन वाला, ना मैगी वाला। खूब बिक्री होगी अपनी। चेला मगन था, लेकिन रामभरोसे गहरी सोच में था। वैसे था तो वह पॉजेटिव माइंडसेट वाला जोशीला इंसान लेकिन वक्त ने उसे जरा अनमना और उदास बना दिया था। पकौड़ो की तैयारी पूरी थी। लेकिन अभी शाम ढली नहीं थी, इसलिए ग्राहक इक्का-दुक्का थे।

चेले को काम पर लगाकर उसने अपना नया फोर जी फोन ऑन किया।

अरे वाह! प्रधानमंत्री जी इतनी जल्दी टीवी पर भी आ भी गये। इंटरव्यू चल रहा था। प्रधानमंत्री धाराप्रवाह बोल रहे थे, इंटरव्यू लेने वाला भरत नाट्यम डांसर की तरह मुंडी हिलाये जा रहा था। चेला भी उसी लय में बेसन फेंट रहा था। सुनने के लिए उसने अपनी गर्दन टेढ़ी कर रखी थी। चरसी ना जाने कब सरकता हुआ ठेले करीब आ गया था। वह जिस तन्मयता से सुन रहा है, उससे पता चलता था कि 2018 में भारत निर्माण को लेकर देश का हर नागरिक कितना जागरूक था। प्रधानमंत्री के सपनो में कोई रूकावट नहीं थी क्योंकि रामभरोसे का फोर जी नेटवर्क बुलेट ट्रेन की रफ्तार से चल रहा था। रामभरोसे धन्य होकर देख रहा था। क्या पर्सनैलिटी है, अपने पीएम जी की। मोटी-मोटी उंगलियां खड़ी करके बात करते हैं तो लगता है कि इसी वक्त गोवर्धन पर्वत उठा लेंगे और पूरा देश उसके नीचे आ जाएगा। प्रधानमंत्री की उंगली उठती है तो लगता है कि शत्रु का संहार करने के लिए उन्होने अभी-अभी सुदर्शन चक्र छोड़ा हो। बचपन में पड़ोसी के टीवी पर महाभारत देख चुका है, रामभरोसे। उंगली के फर्क से व्यक्तित्व का फर्क समझ सकता है, रामभरोसे। उंगलीबाजों की उंगलियां कमज़ोर और पतली होती हैं। कर्मठ लोगो की प्रधानमंत्री की तरह मजबूत।

इंटरव्यू करने वाले ने कोई सवाल पूछा तो पीछे खड़ा चरसी बोल पड़ा— इसकी ये औकात हो गई कि देश के प्रधानमंत्री से सवाल पूछने लगा। जिस थाली में खाता है, उसी में छेद करता है। हड्डी-पसली तोड़ देनी चाहिए हरामखोर की! रामभरोसे ने चरसी को घूरा तो वह बड़बड़ाता हुआ एक कदम पीछे खड़ा हो गया। उसके चक्कर

में रामभरोसे प्रधानमंत्री की आधी बात नहीं सुन पाया लेकिन आगे पीएम जी ने बोला — आपके चैनल के बाहर जो पकौड़े बेच रहा है, आप उसे रोजगार मानोगे या नहीं। चैनल के बाहर एकमात्र पकौड़े वाला यानी रामभरोसे और उस पर भी नज़र गई देश के प्रधानमंत्री की। वाह रे रामभरोसे! जिस काम को बीवी तक ने काम नहीं माना उसे देश के प्रधानमंत्री ने काम माना। कौन हरामजादा कहता है कि भारत निर्माण नहीं हो रहा है। रामभरोसे के हाथ से मोबाइल गिरते-गिरते बचा।

चरसी ने रामभरोसे का तगड़ा चुम्मा लिया और दिहाड़ी चेला भी ऑफिस डेकोरम की सारी सीमाएं तोड़कर उस्ताद से जा लिपटा। चरसी ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, कुछ मीठा नज़र नहीं आया तो उसने एक गर्मा-गर्म पकौड़ा रामभरोसे के मुंह में ठूंस दिया।

रामभरोसे अब ठेला छोड़कर पेड़ के दूसरी तरफ जा बैठा था, जहां कोई उसे देख नहीं सकता था। वह लगातार रो रहा था। अपनी किस्मत पर नहीं बल्कि इस देश के लोगो की कमअक्ली पर। काम नेता और बड़े अफसर ही नहीं करते हैं। उसके जैसा एक आम पकौड़े वाला भी करता है। लेकिन ऐसी मामूली बात समझाने के लिए देश के प्रधानमंत्री को टीवी पर आना पड़ता है। जाने देश को कब समझ में आएगी पीएम जी की यह बात?

तुम भी रामभरोसे मैं भी रामभरोसे

पेड़ के नीचे बैठा रामभरोसे पकौड़े वाला लगातार रोये जा रहा था। अचानक कंधे पर किसी ने हाथ रखा। फौलाद जैसा ताकवर हाथ। शुक्र है, रामभरोसे पाकिस्तान नहीं था।

रामभरोसे एकांत में रहना चाहता था. वह चिल्लाया... "कौन है बे?"

"मैं हूं बेटा"

रामभरोसे मुड़ा, चारो तरफ काले कपड़े वाले बंदूकधारियों का घेरा था। आखिर नज़रे घूमती हुई प्रभु तक जा पहुंची। आंखे फटी की फटी रह गईं। मुंह ऐसे खुल गया कि उसमें पाव भर पकौड़े एक साथ समा जायें। पांच सेकेंड के भीतर मन में दस ख्याल आये— मैने इनके मन की बात सुनी, इन्होने मेरे मन की बात सुनी। मैने इनका स्मरण किया और ये क्षण भर में प्रकट हो गये। क्या पुराने जमाने में भी ऐसा ही होता होगा? बाबा तो कहते थे कि ऋषि-मुनियों को पेड़ से उल्टा लटककर धुंआ पीना पड़ता था। जटाओं में चिड़िया घोसला बना लेती थी। सैकड़ो-हजारो वर्षों की तपस्या के बाद भगवान प्रकट होते थे। यहां तो मामला एकदम इंस्टेंट रीजार्ज जैसा है। ऊपर से सब कहते हैं कि कलजुग बहुत खराब है और कलजुग में ये वाला जुग सबसे खराब है। भकचोनहर कहीं के।

उठिये रामभरोसे जी मैं आप ही से मिलने आया हूं।

रामभरोसे उसी तरह रोने लगा जिसे पूरब में `भोकार पार' के रोना कहते हैं।

शांत हो जाओ रामभरोसे तुमसे मिलकर मैं बहुत आनंद का अनुभव कर रहा हूं। मेरे पिता जहां चाय बेचा करते थे, उसके ठीक पास एक भजिया वाले की दुकान थी। आज तुम्हारा ठेला देखकर मुझे अपना बचपन स्मरण हो आया।

रामभरोसे हिचकियां लेता हुआ बोला— धन-धन भाग मेरे कि साहेब के दर्शन हुए। यहां तो कभी नोएडा के दरोगा जी भी नहीं आये। लेकिन आप आ गये।

प्रधानमंत्री बोले— मैं ना यहां आया हूं ना लाया गया हूं। मुझे तुम्हारे पकौड़ो ने बुलाया है।

रामभरोसे ने जल्दी-जल्दी आंसू पोछे और फटाफट एक प्लेट में चौर पकौड़े रखकर उनकी तरफ बढ़ा दिया। उन्होने एक पकौड़ा हाथ में उठाया और वापस रामभरोसे के हवाला कर दिया। पास खड़े एसपीजी गार्ड ने कहा— रख लो आशीर्वाद है।

पूजा के फूल की तरह रामभरोसे ने पकौड़ा दोनो हथेलियों के बीच दबा लिया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। प्रधानमंत्री आगे बोले—चाहे पकौड़े तलो या इडली बेचो। कचरा बीनो या फिर कबाड़ खरीदो। काम जो भी करो याद रहे विजन बड़ा होना चाहिए।

जी…

मैने कई जगहों पर भजिये देखे हैं। लेकिन तुम्हारे ठेले की बात कुछ और है। इसमें कलाकारी है। कोई भी भजिया एक जैसी नहीं है। यही मैं अपने सवा अरब देशवासियों से कहता हूं आपके काम में क्रियेटिविटी होनी चाहिए। मैं पकौड़ा निर्माण को स्किल्ड इंडिया प्रोग्राम में जल्दी ही शामिल करना वाला हूं। अच्छा तो राम भरोसे मैं चलता हूं।

रामभरोसे चरणों में गिर गया। उन्होने उसे उठाया और गले लगा लिया। वे चलने को हुए रामभरोसे बोले— साहेब आपको मेरा नाम कैसे पता चला?

वे हंसे— भईया तुम जो मैं भी तो वहीं हूं। तुम भी रामभरोसे मैं रामभरोसे।

पास खड़ा चरसी ताली पीटकर नाचने लगा— अगली बार भी जी दिलाएंगे, पीएम जी वो वापस लाएंगे।

प्रधानमंत्री जी मुस्कुरा कर बोले— चुनाव तक छोटे लोग सोचते हैं। विजन बड़ा कीजिये। आपके जैसे नौजवान ही इस देश की सबसे बड़ी उम्मीद हैं।

चरसी ने दांत दिखाकर कांप्लिमेंट कबूल किया। प्रधानमंत्री जी आगे बढ़े। एसपीजी का घेरा उन्हे गाड़ी तक ले गया। पकौड़ा हथेलियों के बीच दबाये दोनो हाथ जोड़े रामभरोसे चुपचाप खड़ा रहा। आखिर में रुंधे गले से चिल्लाया— कभी गरिमा-उरिमा के चक्कर में मत पड़ियेगा।

आवाज प्रधानमंत्री तक नहीं पहुंची लेकिन रामभरोसे के दिल ने कहा कि पहुंच ही गई होगी।

हमार दुलहवा पगला गईल हे देवी मईया...

प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं— मैं देश तल रहा हूं, तुम पकौड़े तल रहे हो। मार्ग अलग-अलग हैं। लेकिन मंजिल एक हैं। मुझे अपने देशवासियों के लिए सुनहरा भविष्य चाहिए तुम्हे अपने ग्राहकों के लिए सुनहरा पकौड़ा। देश हो या पकौड़ा तेज आंच में तपेगे तभी होगे सुनहरे।

जरूर तलेंगे साहब ज़रूर तलेंगे। एक हाथ से बेसन फेटेंगे दूसरे हाथ से पकौड़ा निकालेंगे। इधर फेंटो उधर डालो, इधर डालो, उधर निकालो।

…और एक तेज़ आवाज़ के साथ रामभरोसे बिस्तर से गिरा— अरे मैय्या रे…

घरवाली ने फिर से रोना शुरू किया— करम फूट गइल हो दादा। कौना गंजेड़ी से बियहल ए दादा

अरे रोओ मत परमेसरी। हम सपना देख रहे फिर से वही वाला।

अरे पपिया हमको पता नहीं है का, तुम गांजा चढ़ा के आया है। घड़ी-घड़ी मति फिरता है और हमको नींद से उठा देते हो। कौना पगला से बियहला ए बाबा।

परमेसरी एक बार फिर राग में रोने लगी। रामभरोसे जब रात को घर आया था तभी उसने बता दिया कि बाबा भोलेनाथ की कृपा उसपर हो गई है। प्रधानमंत्री स्वयं चलकर उसके ठेले पर उससे मिलने आये थे। बाबा भोलेनाथ की कृपा सुनते ही परमेसरी ने मान लिया कि कहीं से चिलम चढ़ाकर आया है। उसका बाप भी तो यही कहता था। रामभरोसे बहुत समझाने की कोशिश की। लेकिन बीवी पर कोई असर नहीं हुआ। रामभरोसे को भी सबकुछ सपने की तरह लग रहा था। उसने अपने आपको कई बार चिकोटी काटी। याद करने की कोशिश की, कहीं उसने सचमुच गांजा तो नहीं पी लिया। फिर अपने बाप के मुंह से सुनी बात याद आई।

भांग मांगे दूध मलाई, गांजा मांगे घी
दारू मांगे जूता-चप्पल, सोच समझके पी

घर में औकात ना तो दूध-मलाई की थी और ना घी की। इसलिए रामभरोसे कभी किसी व्यसन में नहीं पड़ा। शुद्ध सात्विक आदमी है। दाल-भात मिल जाये दो टाइम

वही बहुत है। उसकी किस्मत में पीएम जी का आशीर्वाद मिलना लिखा था, सो मिल गया। लेकिन जनाना जात ससुरी होती है दिमाग से पैदल। कितना भी समझाये मानने को तैयार ही नहीं।

रामभरोसे जब घर पहुंचा था तो होश में नहीं था। कैसे रहता भला। नोएडा के एक मामूली पकौड़े वाले से मिलने पहुंचा दुनिया का सबसे बड़ा नेता। पहले कभी ऐसा हुआ है, क्या? क्या अब वह सपने भी ना देखे? आखिर कौन सी किताब में लिखा है गरीब का सपना देखना पाप है? उस रात तीन बार तीन अलग-अलग तरह के सपने देखे राम भरोसे ने।

एक बार उसने देखा कि प्रधानमंत्री और वो दोनो एक ही दुकान पर है। प्रधानमंत्री चाय बना रहे हैं और वह पकौड़े छान रहा है। दुकान पर कोई आया। उसने पकौड़े खाये, पीएम जी के हाथ की चाय पी और बिना पैसे दिये भाग गया। पीएम जी चिल्लाये— चोर-चोर पकड़ो! पास वाला दुकानदार चिल्ला रहा है— हाथ नहीं आएगा अमेरिका का वाजी लगवाकर आया था, तुम्हारी दुकान पर। लेकिन रामभरोसे और पीएमजी दोनो भाग रहे हैं। आखिरकार रामभरोसे ने जान की बाजी लगाकार चोर की गर्दन पकड़ ली। प्रधानमंत्री जी चिल्लाये— शाबाश। इतने में परमसेरी मिमियाई— हमके छोड़ रे मुंहझौसा। नटेरी टीप के मार दीहिस रे गंजेड़िया।

रामभरोसे ने बाप कसम, भाई कसम और भतार कसम यानी हर तरह की कसम देकर कहा कि उसने गांजा जिंदगी में कभी नहीं पिया तो परमसेरी और जोर-जोर से रोने लगी। उसे भरोसा हो गया कि उसका आदमी पक्का पागल हो गया है। बार-बार समझाने पर भी परमेसरी नहीं मानी। आखिर हारकर रामभरोसे कमरे से बाहर निकल गया।

कमरे में लौटा तो परमेसरी सो रही थी। रामभरोसे ने उसी रात अपना तीसरा सपना देखा। नोएडा के जिस पीपल के पेड़ के पास उसका ठेला है उसी पीपल के पेड़ के नीचे प्रधानमंत्री बैठे हैं- भगवान बुद्ध के वेश में। चेहरे पर परम शांति है। वे ज्ञान दे रहे हैं और रामभरोसे ज्ञानामृत का पान कर रहा है। प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं कि प्रजातंत्र और पकौड़ा दोनो एक ही चीज़ हैं। दोनो को घोलना पड़ता है। फिर खूब फेंटना पड़ता है। जिस तरह बेसन, पानी, नमक, प्याज, धनिया और तेल से मिलकर पकौड़ा बनता है। उसी तरह प्रजातंत्र भी बहुत सारी चीज़ों से मिलकर बनता है। प्रजातंत्र बचाना है तो पहले पकौड़ा बनाओ।

यह सपना दार्शनिक किस्म का था। इस बार परमेसरी की नींद में कोई खलल नहीं पड़ी। लेकिन रामभरोसे उठकर बैठ गया। वह सोचने लगा। कहीं मुन्नाभाई की तरह मेरे दिमाग में भी केमिकल लोचा तो नहीं हो गया। लेकिन उसके दिमाग़ में प्रधानमंत्री की कई गहरी बातें घूम रही थी। प्रजातंत्र और पकौड़ा दोनो एक हैं। प्रजातंत्र बचाना है तो पहले पकौड़ा बनाओ। देश हो या पकौड़ा दोनो को तलना पड़ता है। क्या गजब का ज्ञान है। हाय पहले काहे नहीं मिले गुरुदेव। रामभरोसे खिड़की के सामने खड़े होकर रोता रहा। बहुत देर रोया फिर थककर बिस्तर पर लेट गया।

सुबह भारी कोलहाल से रामभरोसे की नींद टूटी। उसने कई लोगो को अपने कमरे में पाया, जिनमें परमेसरी के गांव के दो मुस्टंडे मुंहबोले भाई थे। रामभरोसे अकचका कर उठा तो किसी ने कहा— मस्त रहिये जीजाजी आपको कुछ नहीं हुआ है।

रामभरोसे बोला— हमको तो कुछ नहीं हुआ लेकिन तुम लोग इतना आदमी सब इंहा कोठरी में आके का कर रहे हो बे, घुसे कैसे अंदर?

अरे हमको जिज्जी बोलाइन हैं, उ का है ना कि ज़रा आपके खोपड़िया में। ना चिंता की कोनो बात नहीं। यही डॉक्टर है, नोएडा में।

दुई चार करंट में एकदम ठीक हो जाई— दूसरे मुंहबोले साले ने कहा…

अबे भोसड़ी के। हमको तुम पगला बूझे हो का? एकरी महतारी के। सरउ अभी मार लात के गड़िये तोड़ देब तोहार।

रौद्र रूप धारण करके चारपाई से नीचे कूदा रामभरोसे। लेकिन मुहंबोले सालो ने मिलकर पकड़ लिया। पूरी तैयारी के साथ आये थे। रस्सी-वस्सी लेकर। बांधने का कार्यक्रम शुरू हुआा। नोएडा सेक्टर 12-22 चौड़ा मोड़ का वह दस बाई का बारह का कमरा प्रमाणिक बनारसी गालियों से गूंज उठा। लेकिन साले छोड़ने को तैयार नहीं थे। अिहरावन की कैद से राम-लखन को छुड़ाने के लिए आये थे हनुमान। ठीक वैसे ही प्रकट हुए त्रिलोकी नाथ। वही त्रिलोकीनाथ जो रामभरोसे के टहुला बनकर आये थे और देखते-देखते उनके राइट हैंड बन गये थे। पेड इंटर्न कहो या दिहाड़ी चेला लेकिन बहुत मौके से पहुंचे त्रिलोकी नाथ।

भइया टीवी वाले सब ढूंढ रहे हैं आपको। ठेले के बाहर कैमरा लेके खड़े हैं। घर का पता पूछ रहे हैं। हम सोचे कि पता देने से पहले ज़रा एक बार आपको बता दें।

बाहर से पुकारता आया था त्रिलोकी नाथ। लेकिन भीड़ देखकर सीधे कमरे के अंदर चला आया। उसकी हैरानी का ठिकाना ना रहा। उसके फ्रेंड, फिलॉसफर और गाइड रस्सी से बांधे जा चुके थे। पास खड़ी घरवाली रो रही थी।

अरे भाभी का है इ सब?

परमेसरी ने रोते हुए कहा— पगला गये हैं तोहरे मालिक। कल रात से अंड-बंड बोल रहे हैं। कभी कहते हैं कि प्रधानमंत्री मिलने आये रहे ठेले पर। कभी कहते हैं हम पकौड़ा छान रहे हैं और प्रधानमंत्री जी चाय बना रहे हैं, एक्के दुकान पर।

त्रिलोकी नाथ ने जवाब दिया— भइया तो बताएंगे होंगे ना आपको। कल प्रधानमंत्री जी आये थे ठेला पर एकदम सच्ची बात।

परमेसरी— अच्छा नमक हराम तू ही डलवाया है इनके गांजा के लत।

त्रिलोकी ने तमतमाकर पूछा— अरे भइया आप दिखाये नहीं है, इनको मोबाइल का वीडियो।

रस्सियों में जकड़े रामभरोसे ने पूछा— मोबाइल में का है?

लीजिये हम पूरा वीडियो बनाये आपका चार मिनट का है, प्रधानमंत्री जी के साथ और आप पूछते हैं कि मोबाइल में का है? लाइये कहां है, मोबइलवा।

मोबाइल रामभरोसे की धर्मपत्नी ने निकालकर दिया। त्रिलोकी ने वीडियो ऑन किया। रामभरोसे जी के कंधे पर हाथ रखते हुए प्रधानमंत्री जी। पकौड़ा छू कर आशीर्वाद देते प्रधानमंत्री। रोते रामभरोसे को गले लगाते प्रधानमंत्री। कमरे में हाय दैय्या और हाय बाप गूंजने लगे। एक जागरूक पड़ोसी ने कहा- जरा व्हाट्स एप भेजिये ना एक ठो। नंबर तो हइये है।

दूर रहो हाथ मत लगाना— त्रिलोकी ने बिफरते हुए कहा।

अपने दिहाड़ी चेले को इस तरह पहली बार गरजता देखकर रामभरोसे भी सकपका गया। त्रिलोकी बोला— आपलोग को मालूम है कुछ। पूरे देस का मीडिया भइया को ढूंढ रहा है। प्रधानमंत्री जी ट्विटर पर `टास' किये हैं, इनके बारे में। का होता है, ट्विटर जानते हैं आपलोग? नहीं जानते हैं तो रास्ता नापिये। कपार मत खाइये। सरकारी मामला है, सीधा पीएम इंनभाल्भ है। फंस जाइयेगा बिना बात, चलिये भीड़ मत लगाइये।

टीम का हीरो सचिन तेंदुलकर था लेकिन सेंचुरी मारकर मैच जिता दिया नये नवेले विराट कोहली ने। रामभरोसे जी बंधन मुक्त किये जा चुके थे। बहुत देर तक अपराधी भाव से खड़े रहे मुंहबोले साले भी रवानगी डाल गये। सब चले गये तो परमसेरी देवी ने एक बार फिर रोना शुरू किया— हे देवी मइया हमके अंग-अंग कोढ़ फुटा द। अइसन देवता समान दुल्हा के पगला कहनी ए मईया।

विजन बड़ा करो रामभरोसे

रामभरोसे और त्रिलोकी उसी मुद्रा में बैठे थे, जिस तरह मार्क्स और ऐंगेल्स बैठा करते होंगे या गांधी-नेहरू सचमुच बैठते थे। उनके तो कई फोटो भी हैं। रामभरोसे रह-रहकर अपने इकलौते चेले को निहार रहा था। चेहरे पर गर्व और अजरज के भाव आ-जा रहे थे।त्रिलोकी नाथ प्लेट जल्दी-जल्दी धोता था। हिसाब भी फटाफट जोड़ देता था। लेकिन इतना बड़ा कलाकार होगा इसका दूर-दूर तक रामभरोसे को कोई इल्म नहीं था।

प्रधानमंत्री के साथ कल कैसे मुलाकात हुई? उसके बाद क्या-क्या हुआ, यह सब याद करने के लिए रामभरोसे को बहुत दिमाग़ दौड़ाना पड़ता था, क्योंकि सबकुछ एक सपने की तरह था। लेकिन त्रिलोकी नाथ ने उस सपने को मोबाइल में कैद कर लिया था। अगर वीडियो नहीं होता तो रामभरोसे के मुंहबोले साले उसे पकड़कर पागलों के डॉक्टर के पास ले गये होते। उसे बिजली के झटके लग रहे होते और वह सचमुच पागल हो चुका होता। धन्य हो त्रिलोकी नाथ। लेकिन त्रिलोकी नाथ वीडियो को व्हाट्स एप करने का आग्रह सुनते ही इतना क्यों भड़क गया? प्रधानमंत्री जी मिले रामभरोसे से, रिकॉर्डिंग हुई रामभरोसे के मोबाइल से तो फिर वीडियो देने या ना देने वाला ससुरा त्रिलोकी नाथ कौन? रामभरोसे के इस सवाल का जवाब त्रिलोकीनाथ ने दिया तो लगा कि सचमुच गुरू गुड़ रह गया और चेला चीनी हो गया।

त्रिलोकी नाथ ने कहा— भइया आप खाली प्रधानमंत्री जी के सामने हाथ जोड़े खड़े रहे या उ जो बोले उसमें से कुच्छो ग्रहण भी किये? का बोले पीएम साहेब। यही न कि काम चाहे जो करो लेकिन विजन बड़ा होना चाहिए।

जिंदगी में रामभरोसे को पहली बार लग रहा था कि उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा है। फिर भी वह चुपचाप त्रिलोकी नाथ की बात सुनता रहा। आगे त्रिलोकी नाथ सचमुच त्रिलोक दिखा दिया— आपके हाथ में लाखो रुपये की चीज़ है और अइसे ही बांट दीजियेगा फोकट में? विजन बड़ा कीजिये विजन, कुछ समझे कि और खोलके समझाये?

`मालूम हैं हर चैनल वाला आपको सबेरे से तीन-तीन बार पूछ चुका है। स्टूडियो में बुलाना चाहता है। इंटरव्यू करके पूछेगा कि कल जब प्रधानमंत्री जी मिले थे, तो

आपको कइसा लगा। का-का बात हुई। उ आपका पकौड़ा खाये कि नहीं। न्यूज़ ट्वेंटी फाइव वाला कह रहा था कि दस हज़ार देंगे। `अभी तक' वाले कह गये कि अपने मालिक को बोलना इंटरव्यू सबसे पहले हमको दें, खुस कर देंगे। जरा सोचिये जब इंटर भिऊए में बोली लग रही है, तो इ जो वीडियो है, आपका पीएमजी के साथ उसका दाम का होगा'?

प्रधानमंत्री ने विजन बड़ा करने को कहा था। विजन बड़ा कैसे किया जाता है यह त्रिलोकी नाथ ने रामभरोसे को समझाया। राम भरोसे अब त्रिलोकी भरोसे हो चुके थे। त्रिलोकी ख़बरदार करके गया- मोबाइल फोन बंद कर दीजिये। हमको भाभी का नंबर दे दीजिये। कौनो ज़रूरी बात होगी तो हम आपको फोन करेंगे। आते हैं हवा पानी लेक? देखते हैं, केतने लाख में लगती है प्रधामंत्री के साथ आपके भिजुअल की बोली?

त्रिलोकी नाथ चला गया। तो रामभरोसे गहन चिंतन में डूब गया। वह चिंतन जो कल से मन में अलग-अलग तरीके से चल रहा था। `प्रजातंत्र और पकौड़ा एक ही चीज़ हैं' से लेकर देश और पकौड़े को एक समान तेज़ आंच पर तलने तक। ज्ञान के नये-नये और अलग अर्थ खुल रहे थे। लेकिन जो बात उसके दिमाग़ में बार-बार गूंज रही थी, वह थी `विजन बड़ा करो।'

वह आईने के सामने आ गया। आईने में अपनी ही आंखों को एकटक देखने लगा जैसे अंदाजा लगा रहा हो कि इन आंखों में कितना बड़ा विजन समा सकता है।बिना पलक झपकाये वह एकटक आइने को देखता रहा। अचानक उसे अपनी ही आंखों में प्रधानमंत्रीजी दिखाई देने लगे। मतलब रात को जो सपना उसने देखा था, वह एकदम सच था। प्रधानमंत्री जी कह रहे थे, तुम पकौड़े तलते हो, मैं देश तलता हूं। मार्ग अलग-अलग है, लेकिन मंजिल एक है। यानी विजन एक है। भगवान और भक्त एकाकार हो चुके थे। रामभरोसे एक बार फिर भोकार पारके रोने को हुआ लेकिन पीछे परमेसरी खड़ी थी। उसका मूड अब बहुत अच्छा था। नहा धोकर भगवान की पूजा करके आई थी। गौने के बाद जब पहली बार आई थी, तब भी इतनी सुंदर नहीं लगी थी परमेसरी, जितनी इस समय लग रही है।

रामभरोसे ने तकिये के नीचे रखा पकौड़ा निकाला। वही पकौड़ा जिसे छूकर प्रधानमंत्री उसे आशीर्वाद दिया था। रामभरोसे ने अपनी घरवाली को बताया कि इस पकौड़े का क्या करना है। परमेसरी भागी-भागी अलमारी की तरफ गई। सुईं-धागा निकाला, कैंची से काला कपड़ा काटा, उसमें पकौड़ा भरा और मजबूती से सी दिया।

इस तरह बन गई रामभरोसे की मार्गदर्शक ताबीज। अब उसकी आंखों में नया विजन था और गले में था प्रधानमंत्री का रक्षा कवच।

ताबीज पहनते ही परमेसरी का फोन बजा, उसने फोन पति को दिया। पति ने फोन उठाया और बीस सेकेंड के भीतर खुशी से बावरा हो गया। रमेसरी के साथ उसने पहले बॉल डांस करने की कोशिश की और फिर उसे गोद में उठाकर नाचने लगा। बहुत मुश्किल से उसने अंटक-अंटक कर बताया कि सात लाख रुपये मिलने वाले हैं। यह सुनते ही परमेसरी अपने पति से लिपट गई। रामभरोसे बिलख-बिलखकर रोने लगा। बीवी ने चुप कराने की कोशिश की तो बोला- रोना कोई बुरी बात नहीं है। हमारे पीएम साहब भी रोते हैं।

डोकलाम में टेंशन है और आप चाइनीज़ खा रहे हैं

पकौड़ा किंग रामभरोसे बुर्ज खलीफा की लॉबी से बाहर निकले। पोर्च पर काली लैंड रोवर खड़ी थी। वे उसमें दाखिल हुए। होटल के स्टाफ ने दाईं तरफ वाले गेट का दरवाज़ा खोला। टी.एन. भी गाड़ी में आ गये। टी.एन. यानी प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के ग्लोबल सीईओ। कंपनी को इस मुकाम तक पहुंचाने में टी.एन. का कुछ वैसा ही हाथ था जैसा धनवंतरी में आचार्य रामकृष्ण का, या इनफोसिस में नंदन नीलकेणी का।

गाड़ी में बैठते ही टी.एन. ने अपना नया मोबाइल फोन निकाला। एप्पल टी.एन के लिए स्पेशियली कस्टमाइज्ड फोन बनाती है। कई चीज़ों के अलावा इसमें एक ऐसा एप है, जिसके ज़रिये टी.एन चुटकियों में यह पता कर सकते हैं कि दुनिया भर में फैले अलग-अलग पकौड़ा यूनिट्स में प्रोडक्शन काम किस तरह चल रहा है। अगर हांगकांग में हल्दी कम डली हो या अटलांटा में बेसन ठीक से नहीं फेंटा गया हो, टी.एन. को फौरन पता चल जाता है। फिर तो रीजनल सीईओ की खैर नहीं। एकदम परफेक्शनिस्ट आदमी हैं पीपीएल के ग्लोबल सीईओ टी.एन। ऐसे ही थोड़े ना खड़ा हुआ है, इतना बड़ा एंपायर।

गाड़ी जैसे ही स्टार्ट हुई टी.एन. ने बॉस के साथ अपनी एक सेल्फी खींची। यह रोज का नियम था। रामभरोसे धीरे से हंसे— एकदम कंटाप लग रहे हो बाबू त्रिलोकी नाथ, हॉलीवुड हीरो के बाप।

हीरो तो आप हैं, भइया। हम तो सेवक हैं। आप श्रीराम तो हम भक्त हनुमान। आपके पुण्य प्रताप से हम यहां पहुंचे हैं नहीं तो मांज रहे बर्तन किसी ढाबे में।

ऐसा मत कहो त्रिलोकी, यू.आर. ए जीनियस— रामभरोसे ने भावुक होकर त्रिलोकी के कंधे पर हाथ रख दिया।

नहीं भइया हम कोई झूठ नहीं कह रहे हैं। कितने भारी संघर्ष से यह सब किया है आपने पूरे देश के लिए और पूरे विश्व के लिए। हम इसी में धन्य हैं कि हमें बचपन से आपका साथ मिला।

त्रिलोकी नाथ पूरी यादो में खो गये— प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद उनके गुरू रामभरोसे के दिमाग़ में कुछ दिनों तक केमिकल लोचा ज़रूर रहा था। लेकिन जल्द ही वे पूरी तरह ठीक हो गये। अब वे बहुत फोकस्ड थे। अर्जुन की तरह केवल मछली की आंख दे रहे थे और वह भी उन्हे बहुत बड़ी दिखाई दे रही थी क्योंकि अब विजन बड़ा हो चुका था।

पीएम जी के साथ मुलाकात का फुटेज बेचकर जो सात लाख रुपये मिले थे, उससे रामभरोसे ने दो काम किये थे। पहला काम था ठेला हटाकर उसकी जगह एक आधुनिक सुविधाओं वाला पकौड़ा वैन लगाना। आज 2022 में आप पीपीएल यानी प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के `लोगो' के तौर पर पूरी दुनिया में इस्तेमाल होनेवाली जो तस्वीर देखते हैं, वह फिल्म सिटी के उसी वैन की है। रामभरोसे ने दूसरा काम यह किया कि नोएडा पुलिस का हफ्ता बढ़ा दिया और वह भी बिना कहे। पब्लिक-प्राइवेट पार्टिशिपेशन का महत्व क्या होता है, यह रामभरोसे ने वक्त रहते समझ लिया था। इस सहयोग का नतीजा यह हुआ कि पुलिस वालो ने उस आदमी को डंडे मारकर भगा दिया था जो पास के ठेले पर मैगी बेचा करता था। फिल्म सिटी जैसी राष्ट्रवादी जगह में भला फॉरेन कंपनी का प्रोडक्ट बेचने वाले का क्या काम?

लेकिन एक अकेले मैगी वाले को भगा देने से विदेशी अतिक्रमण की समस्या हल नहीं हो सकती थी। रामभरोसे को बचपन से ही चीन से नफरत थी। उनके दादा के सगे बड़े भाई 1962 के भारत-चीन युद्ध में शहीद हुए थे। रामभरोसे के तन-बदन में आग लग जाती जब वे देखते कि उनकी आंखों के सामने चाइनीज़ माल धकाधक बिक रहा है। ज्यादा दुख की बात यह थी कि बेचने वाले ससुरे इंडियन थे और खरीदने वाले भी वही। गद्धारी की भी हद होती है।

पीएम के आशीर्वाद के बाद रामभरोसे का प्रोफाइल काफी बढ़ गया था। वे अब फिल्म सिटी के किसी इंटर्न को प्रोड्यूसर साहब कहकर नहीं बुलाता था बल्कि विजन बड़ा करने की सलाह देता था। उन्होने दुकान पर आनेवाले कई सीनियर पत्रकारों को सलाह दी कि चाइनीज़ ना खाया करें, हेल्थ और देश दोनो के लिए अच्छा नहीं है। लेकिन पत्रकार अगर इतने जिम्मेदार होते फिर कहना ही क्या था! सामने वाले चाइनीज़ फास्ट फूड वैन के आगे अब भी लोगो की लाइन लगी रहती थी।

रामभरोसे परेशान थे। लेकिन राष्ट्रवादी फिल्म सिटी में इतना भी अंधेर नहीं था। संयोग की बात— भारत-चीन सीमा पर विवाद बढ़ा। ऐसे ही माहौल में फिल्म सिटी

मुहल्ले का सबसे बड़ा राष्ट्रवादी एंकर रामभरोसे की दुकान पर पकौड़े खाने आया। रामभरोसे पकौड़े के साथ चाय फ्री देते थे। ऐसे करने वाले वे संभवत: भारत के पहले पकौड़ा विक्रेता थे। जब रामभरोसे ने यह स्कीम शुरू की थी तब लोगो ने इसे मार्केटिंग का मास्टर स्ट्रोक और विरोधियों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक बताया था। लेकिन रामभरोसे हर चीज़ को कारोबार के नज़रिये से नहीं देखते थे। यह उनके लिए अराध्य का ऋण उतारने जैसा था। गुरुदेव ने कहा था- जहां उनके पिताजी की चाय की दुकान थी, उसके साथ एक भजिये वाला था। वे खुद को वही भजिया वाला मानते थे। केतली से गिलास में चाय डालते वक्त उन्हे लगता था कि वे चाय नहीं ढाल रहे हैं बल्कि अपने गुरू का पितृ ऋण उतारने के लिए तर्पण कर रहे हैं।

गोभी पकौड़ा की एक बाइट लेने के बाद उस मरदाना एंकर ने चाय की चुस्की ली तो रामभरोसे मौका देखकर बोला— कितनी खराब बात है। चीन की ये औकात कि प्रधानमंत्री जी के होते हुए हमें आंखे दिखाये। प्रधानमंत्री जी भी क्या करें। देश की जनता ही चौपट है। चाइनीज़ लड़ने को तैयार हैं और हम हैं कि उनका माल खरीदे जा रहे हैं। देखिये सब टूटे पड़े हैं, चाइनीज़ वाले के यहां। अरे जो बात हमारे देश में है, हमारे पकौड़ो में है, वह चाइनीज़ में कहां? लेकिन कोई इज्ज़त ही नहीं है किसी के मन में अपने देश को लेकर। मरदाना एंकर ने चाय खत्म की, रामभरोसे के कंधे पर हाथ रखा और हल्के से मुस्कुरा कर बिना कुछ कहे चला गया।

शाम को चैनल पर धमाका हो गया। एंकर वीडियो वॉल पर खड़ा था। पीछे चाइनीज़ फास्ट फूड वैन का वीडियो चल रहा था। मरदाना एंकर ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था— एक सवाल जो हर हिंदुस्तानी को अपने आप से पूछना चाहिए। चीन डोकलाम में घुसने की कोशिश कर रहा है और आप फिर भी चाइनीज़ खा रहे हैं। आप अपनी अंतरात्मा से पूछिये ऐसा क्यों कर रहे हैं आप? क्या यह देश के साथ गद्धारी नहीं है?

स्क्रीन पर एसएमएस पोल के आंकड़े आ गये जो ये बता रहे थे कि सत्तर प्रतिशत लोग मानते हैं कि यह गद्धारी है। फिर एंकर ने उन गद्धारों के चेहरे दिखाये जो चाइनीज़ वैन के सामने खड़े होकर सूप पी रहे थे और चाउमिन खा रहे थे। रिपोर्टर लड़की ने लोगो से पूछा कि क्या ये गद्धारी नहीं है? सवाल सुनकर ज्यादातर लोग हंसने लगे। फिर एक आदमी बोला— चाउमिन बहुत अच्छा बनाता है ये, तुम भी एक प्लेट ऑर्डर कर दो अपने लिये।

एंकर ने सभी गद्धारों के चेहरे पर ग्राफिक के गोले लगवा दिये— गौर से देखिये इस बेहया की हंसी को। सुनिये ये शर्मनाक जवाब— बात हो रही है, देश की और यह

कह रहा है कि चाउमिन अच्छा है। यानी चीनी भारतीयों से बेहतर होते हैं।

आधे घंटे बाद देशभक्त नाथूराम सेना के जवानों ने चाइनीज़ वैन पर हमला बोल दिया। दुकानदार वैन छोड़कर भागा। उसका नेपाली नौकर चाइनीज़ होने के शक में बुरी तरह पिटा। अगले दो दिनो तक हर चैनल पर यही ख़बर चलती रही। ज्यादातर पैनल डिस्कशन में वही जाने-पहचाने चेहरे। दो राष्ट्रवादी नेता, एक विरोधी दल वाला, एक सेना का रिटायर्ड अधिकारी और एक एनजीओ वाली मैडम जो हर हिंदी चैनल पर भी अंग्रेजी में कह रही थी— इट्स माई च्वॉयस। मैं क्या खाउं मेरी मर्जी.. इट्स माई च्वायस।

रामभरोसे देख रहा था, अपने फोर ज़ी नेटवर्क पर... इट्स माई च्वायस। बात एकदम ठीक है। च्वायस सबको मिलनी चाहिए। तो उन्होने अपने काउंटर पर च्वायस बढ़ाने के फैसला कर लिया।

मेन्यू में नूडल पकौड़े, नॉन वेज खाने वालों के लिए चिकेन पकौड़ा भी। क्रिस्पी हॉट पटैटो, फिश फिंगर फ्राई ये सब एड हो गये। जो कड़ाही में डालकर तला जाये वही पकौड़ा है।

चाइनीज़ वाला लौटकर नहीं आएगा। यह इत्तला नोएडा पुलिस ने रामभरोसे जी को दे दी। उन्होने अपने मुख्य कार्यकारी अधिकारी त्रिलोकी नाथ को तलब किया— सामने वाला वैन हर हाल में खरीदना पड़ेगा। जाके बात करो अभी।

तुम मुझे बेसन दो, मैं तुम्हे पकौड़े दूंगा

नोएडा फिल्म सिटी मार्केट पर रामभरोसे का एकछत्र राज कायम हो चुका था। पीएम जी के दर्शन के सिर्फ महीने भर के भीतर। दूर-दूर तक कोई कंपीटिशन नहीं। शाम को उनके दोनो वैन के चारो तरफ पांव रखने की जगह नहीं होती थी। कुल 14 लोगो का स्टाफ। `पकौड़े के साथ चाय फ्री' स्कीम की चर्चा नोएडा में ही नहीं बल्कि पूरे एनसीआर में होने लगी थी। वे अपनी चमत्कारिक ताबीज को माथे से लगाकर घर से निकलते और सबसे पहले काम पर पहुंच जाते। देखा जाये तो सिवाय मैनेजमेंट के उन्हे और कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी। फिर भी खौलते तेल में पहला पकौड़ा वही डालते थे। यह एक तरह का शगुन था।

नोएडा के तमाम पकौड़े वाले उन्हे अपना रोल मॉडल मानने लगे थे। जब से पीएम जी ने पकौड़ा इकॉनमी में संभावनाएं जताई उसी वक्त से देश का निगेटिव माहौल अचानक पॉजेटिव हो गया था। हर नौजवान पकौड़ा निर्माण के क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहता था और लाखो युवक इस व्यवसाय में कूद भी चुके थे। यह अन-आर्गेनाइज्ड सेक्टर किस रफ्तार से आगे बढ़ रहा था, इसका अनुमान बेसन और कुकिंग ऑयल बनाने वाली कंपनियों के शेयरों में आये अप्रत्याशित उछाल से मिलता था। अनुमान लगाने का एक और तरीका पुलिस को मिलने वाले हफ्ते में हुई बढ़ोत्तरी का विश्लेषण भी हो सकता था। अंगड़ाई लेती पकौड़ा क्रांति का असर वैसे तो पूरे देश में था। लेकिन नोएडा और दिल्ली एनसीआर के नौजवान सबसे ज्यादा जोश में थे। ढेरो स्टार्ट अप शुरू हो चुके थे। ऐसा ही एक स्टार्ट अप था नोएडा के ममूरा गांव के दो भाइयों सोम और मंगल का।

सोम और मंगल जुड़वां थे। दोनो बचपन से आपस में खूब झगड़ते थे। इसलिए उनके बाप ने अपनी जिंदगी में ही प्रॉपर्टी का बंटवारा कर दिया था। चार एकड़ खेती वाली ज़मीन अधिग्रहण में गई थी। अच्छा-खासा मुआवजा मिला था। जब तक मुआवजे की रकम हाथ में थी, दोनो भाइयों को काम करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। पैसे खत्म हुए तो उन्होने सोचा कि कोई धंधा करते हैं। पकौड़े वाला आइडिया सुनकर उनकी आंखे चमक गईं। सलाह करने बूढ़े बाप के पास गये। बाप ने कहा— काम कोई भी करो, आवारागर्दी से तो अच्छा है। प्रधानमंत्री का बताया काम कर रहे हो यह तो

सबसे अच्छा है। सिर्फ इतना याद रखना कि तुम दोनो सगे भाई हो। एक-दूसरे का हमेशा मदद करना।

तो सोम और मंगल ने घर से कुछ दूर अपने धंधे शुरू कर दिये। शाम को बाप पूछता कि कैसा रहा दिन तो दोनो भाई जवाब देते— नया बिजनेस है, इसलिए ज्यादा माल नहीं बनाया। लेकिन जितने पकौड़े तले वे सबके सब बिक गये। यह सिलसिला महीने भर चला। महीने के आखिर में बाप ने जब कमाई पूछी तो दोनो भाई एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। बाप ने ज्यादा पूछताछ की तो पता चला कि सोम और मंगल की दुकानें ऐसी जगह थी कि ग्राहक मुश्किल से आते थे। ऐसे में पिता की सीख मानकर दोनो ने एक-दूसरे का सहयोग किया। सोम को भूख लगती तो मंगल से बीस रूपये के पकौड़े खरीद लेता और मंगल को कुछ खाने की तलब होती वह सोम की तरफ बीस रूपये बढ़ा देता। इस तरह बीस रुपल्ली पूरे महीने दोनो भाइयों के बीच में घूमती रही और सोम-मंगल एक-दूसरे की पूरी दुकान चट करते रहे।

रामभरोसे जी के पास रोजाना ऐसी कई केस स्टडी आती थीं। बहुत से नये उद्यमी हैरान-परेशान रहते थे। बेसन बड़ी मेहनत से फेंटा था फिर भी पकौड़े कड़े हो गये और ग्राहक मुंह पर मारकर बिना पैसे दिये चले गये। बने तो बहुत अच्छे थे लेकिन कोई खरीदार ही नहीं मिला।रामभरोसे हर सवाल गौर से सुनते और उनके माकूल जवाब भी देते थे। उन्होने पकौड़ा क्रांति में नोएडा के ज्यादा से ज्यादा युवाओं को भागीदार बनाने के लिए एक स्कीम निकाली—तुम मुझे बेसन दो, मैं तुम्हे पकौड़े दूंगा। इस स्कीम के तहत नोएडा के ज्यादातर छोटे पकौड़े वालों को फ्रेंचाइज़ी बना लिया गया।

मैन्युफैक्चिरिंग उनकी और सेल्स का काम छोटे पकौड़े वालों का। रिटेलर रामभरोसे जी के आउट लेट से पकौड़े उठाते सेक्टर 18 से लेकर इंदिरा मार्केट तक जगह-जगह बेच आते थे।माल खत्म होते ही फिर साइकिल लेकर आते और पांच मिनट में गर्म पकौड़े लेकर अपने डेस्टिनेशन पर फिर से पहुंच जाते थे। इस तरह पकौड़ा क्रांति का पहला चरण नोएडा में उसी तरह हिट होने लगा जिस तरह दिल्ली में आम आदमी पार्टी हिट हुई थी।

रामभरोसे अपने काम से खुश थे। दिन-भर की कड़ी मेहनत के बाद उस रात भी वे थककर चूर थे। लेटते ही गहरी नींद आई गई। पीएम जी कोई 15 दिन बाद सपने में आये थे। लेकिन यह सपना सबसे अनोखा था। उसने देखा कि त्रिलोकी नाथ ने एक जादुई सेल्फी स्टिक का आविष्कार किया है। सेल्फी स्टिक ऐसी है कि जेब में रखो

तो कलम बन जाये और बाहर निकालकर बटन दबाओ तो आसमान छूने लगे। ऐसी जादुई सेल्फी स्टिक पूरी दुनिया में कहीं और नहीं है। रामभरोसे ने वह स्टिक प्रधानमंत्री जी को भेंट की। प्रधानमंत्री मुस्कुराये और बोले— सचमुच मेरा देश बदल रहा है। फिर उन्होने उसे अपने सेल्फी स्टिक को मोबाइल फोन के साथ लगाया और बटन दबा दिया। सेल्फी स्टिक आसमान से भी बहुत उपर उठ गई। प्रधानमंत्री जी ने कहा— मैं भी रामभरोसे आप भी रामभरोसे. आइये एक सेल्फी लेते हैं। पीछे हिमालय का बैकग्राउंड था। सामने हिमालय से भी विशाल प्रधानमंत्री जी का व्यक्तित्व और साथ खड़ा भारत का उभरता पकौड़ा किंग रामभरोसे। पीएम जी ने सेल्फी ली और फौरन ट्वीट कर दिया। शाम होते-होते पूरे देश ने उस तस्वीर को अपनी डीपी बना ली।

रामभरोसे की आंखे खुली तो वह पसीने से तर-बतर था। इतनी बार सपने में देखा उसने पीएम जी को लेकिन कभी इस तरह डरा नहीं। आखिर क्या था इस सपने का मतलब? रामभरोसे ने ताबीज निकाली और उसे अपने माथे से लगाया। ताबीज के भीतर मौजूद पकौड़ा जब सड़ना शुरू हुआ था तो रामभरोसे के लिए बदबू असहनीय थी। लेकिन धीरे-धीरे उसे आदत पड़ गई। रामभरोसे ताबीज को बहुत को बहुत देर तक माथे से लगाये रहा। फिर उसे समझ में आया सपने का मतलब। कानो में गूंजे वही वाक्य— विजन बड़ा करो? क्या सिर्फ नोएडा के कुछ पकौड़े वालों को मार्ग दिखाकर रामभरोसे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकता है? उसे सचमुच बड़ा सोचना होगा। उसे बनना होगा अखिल भारतीय पकौड़ा क्रांति का नायक। देश के नौजवान मार्गदर्शन चाहते हैं। इतने नौजवानों को किस तरह गाइड करे रामभरोसे?... मिल गया आइडिया, अब रेडियो पर होगी पकौड़ो की बात।

पकौड़ाज़ हैव ग्रेट पोटेंशियल

बेहद कड़ी सुरक्षा के बीच दिल्ली में केंद्रीय कैबिनेट की बैठक चल रही थी। मंत्रियों और तमाम ब्यूरोक्रेट्स के मोबाइल फोन बाहर रखवा लिये गये थे। बैठक में प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री और गृह मंत्री जैसे दिग्गजों के अलावा कैबिनेट सेक्रेटरी और दर्जन भर से ज्यादा वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। मीटिंग में कई महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय होना था, ताकि अर्थव्यस्था की गाड़ी इस रफ्तार से भगाई जा सके कि कोई उसे पकड़ ना पाये। लेकिन उससे पहले कुछ ऐसी ख़बरें आ गई थी, जिन्हे लेकर पूरे कैबिनेट का चिंतित होना स्वभाविक था।

गृहमंत्री ने शुरुआत की— प्रधानमंत्री जी आपके नारे `मैं तुम्हे खाने नहीं दूंगा' से करोड़ो देशवासियों के मन में गहरी उम्मीद जगी थी। काम के लिए सरकारी दफ्तर गये लोग घूस मांगने वाले कर्मचारी को देखते ही कहते थे `मैं तुम्हे खाने नहीं दूंगा। मोटे पति से उसकी बीवी कहती थी `मैं तुम्हे खाने नहीं दूंगी।' साहब आपकी पहल से भ्रष्टाचार उन्मूलन ही नहीं हो रहा था बल्कि जन स्वास्थ्य पर भी इसका बहुत अच्छा असर पड़ रहा था। इसी वजह से वित्त मंत्री जी ने स्वास्थ्य बजट घटा दिया। लेकिन अब एक बुरी खबर है। हमारी पार्टी के शासन वाले खूबसूरत पहाड़ी राज्य हमारी देवभूमि से समाचार आया है कि मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में मंत्री और अधिकारी बहुत ज्यादा खा गये हैं। 70 लाख रुपये तो केवल मीटिंग के लिए मंगवाये जाने वाले चाय-पकौड़ो पर खर्च हुए हैं। कई दूसरे राज्यों से भी ऐसे ही समाचार हैं।

प्रधानमंत्री गहरी सोच में पड़ गये। इतने में कैबिनेट सेक्रेटरी ने हुलसते हुए कहा— सर आई टोल्ड यू... पकौड़ाज़ हैव ग्रेट पोटेंशियल।

मतलब क्या है आपका?

गृह मंत्री की बात जवाब देते हुए फाइनेंस मिनिस्टर ने कहा— मतलब पकौड़ाज़ हैव ग्रेट पोटेंशियल।

प्रधानमंत्री ने अपनी चुप्पी तोड़ी— ठाकुर साहब सत्तर लाख रुपये के पकौड़े आये तो किसी ने मंगवाये होंगे। अगर पकौड़ो की सप्लाई हुई है तो इसका मतलब है कि किसी ने बनाये भी होंगे। यानी किसी को काम मिला होगा। यही तो है, मेकिंग

ओनली इन इंडिया। ऐसा कीजिये सत्तर लाख में से चाय पर कितने खर्च हुए हैं और पकौड़ो पर कितने यह पता करके मुझे बताइये। आई नीड एगजैक्ट फिगर।

जी सर लेकिन...।

मैने कहा था ना उस दिन कि पकौड़ा बनाना भी रोजगार है। तब बहुत से मीडिया वाले मज़ाक उड़ा रहे थे मेरा। ऐसे मीडिया वालों को सबक सिखाना चाहिए कि नहीं सिखाना चाहिए— प्रधानमंत्री ने पूछा

सर लिस्ट बनाई जा चुकी है— सूचना प्रसारण मंत्री ने अपडेट दिया।

कोई काम छोटा नहीं होता है, आदमी के विचार छोटे होते हैं और छोटे विचारों से राष्ट्र बड़ा नहीं बन सकता है। बताइये मैं सही कह रहा हूं कि गलत? क्या कोई काम छोटा होता है? — प्रधानमंत्री ने श्रमिक कल्याण सह मुर्गी पालन मंत्री को ओर देखते पूछा।

जी नहीं मेरा काम तो सबसे बड़ा है।

फाइनेंस सेक्रेटरी बोले— स्लो रेट ऑफ इंप्लायमेंट जेनेरेशन इज़ द रीयल कॉज़ ऑफ कंसर्न सर।

वित्त मंत्री बोले— यू आर राइट बट पकौड़ा मैन्युफैक्चरिंग हैज़ शोन ए ग्रेट प्रॉमिस। मेरी गलती थी कि मैं पकौड़ा सेक्टर की ताकत को ठीक से समझ नहीं पाया। शायद अमीर परिवार और महानगरीय परिवेश में पले-बढ़े होने की वजह से। काश मैं भी पीएम साहब की तरह गरीब होता।

पूरा कैबिनेट एक साथ बोल पड़ा— काश हम भी पीएम साहब की तरह गरीब होते और पकौड़े की ताकत को सही वक्त पर पहचान पाते।

पीएम जी को पहली बार लगा कि गरीब होना कांप्लिमेंट नहीं है। मंत्री तो मंत्री स्नैक्स खाकर टिशू पेपर से मुंह पोछते आईएसएस भी यही दोहरा रहे हैं— काश हम साहेब की तरह गरीब होते।

पीएम जी उखड़ गये— देखो भइया यह कोई पब्लिक मीटिंग नहीं है। गरीब और अमीर का ड्रामा इलेक्शन के लिए रहने दो। मैं कोई गरीब-वरीब नहीं हूं। परमात्मा ने एक छत दी। दो वक्त की रोटी देत देता है, मैं तो अपने आपको इस संसार का सबसे अमीर आदमी मानता हूं।

लोगो ने कान पकड़ लिये... पीएम आगे बोले। अब बताइये मतलब की बात! अगले एक साल में इकॉनमी की गाड़ी कैसे दौड़ाएंगे। मुझे रिजल्ट चाहिए।

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। पीएम के चीफ इकॉनमिक एडवाइज़र आगे आये — सर इकॉनमी इज़ ऑलरेडी ऑन ट्रैक। मेरे पास डेटा है, अपनी बात साबित करने के लिए। जब से आपने पकौड़े वाला स्टेटमेंट दिया है, सारे इंडिकेटर भाग रहे हैं। लेट मी शो यू।

चीफ इकॉनमिक एडवाइज़र ने प्रेजेंटेशन ऑन कर दिया। ग्राफ बता रहा था कि देश की 67 फीसदी युवा आबादी मानती है कि पकौड़े तलने में ही उसका भविष्य है। 48 फीसदी मां-बाप अपने बच्चो इसी फील्ड में भेजना चाहते हैं। देश की 95 परसेंट आबादी यह जानती है कि पकौड़े क्या होते हैं लेकिन सिर्फ 12 प्रतिशत आबादी ऐसी है जो नियमित रूप से पकौड़े खाती है। 39 प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो यह कहते हैं कि वे सुबह शाम पकौड़े खाना चाहते हैं, लेकिन उन्हे अच्छे पकौड़े नहीं मिलते।

सो देयर इज़ ए ह्यूज़ गैप बिटवीन डिमांड एंड सप्लाई। दूसरी बात यह कि स्किल्ड लेबर की कमी है। हमें स्किल्ड इंडियंस में पकौड़े को शामिल करने के पीएम जी के आइडिया पर जल्दी अमल करना होगा। युवाओ को प्रोत्साहित करने के लिए विराट कोहली जैसी किसी पब्लिक फिगर को प्रोग्राम का ब्रांड एंबेसेडर बनाना चाहिए।

संसद की कैंटीन में पकौड़े की वेराइटी बढ़ा देनी चाहिए सर। हमारे सांसदों की खुराक अच्छी है, टचवुड। वेरायटी के पकौड़े मिलेंगे तो और ज्यादा खाएंगे। गरीबों को ज्यादा काम मिलेगा और सब्सिडी के पैसे उनके घर का चूल्हा जलेगा।

ज्ञान तो बहुत अच्छा है, लेकिन मुझे बताओ कि क्या ये सब करने से ग्रोथ रेट अगले साल तक बारह परसेंट तक पहुंच जाएगी— पीएम जी ने दो टूक पूछा।

बारह परसेंट तक पहुंचने का एक ही रास्ता है, पकौड़ी इंडस्ट्री में हंड्रेस परसेंट एफडीआई को मंजूरी देनी होगी— वित्त मंत्री ने जवाब दिया।

तो दे दो रोका किसने है, ड्रॉफ्ट तो तैयार करवाइये।

अचानक गृह मंत्री मैदान में उतरे— रुकिये! सबसे ज़रूरी मुद्धे पर हमने अभी तक बात की ही नहीं है। आप एफीडीआई पर अभी विचार ही कर रहे हैं और उधर बात फैल गई है कि सरकार ने फैसला ले लिया है। विपक्ष की शह पर कुछ एनजीओ वालों ने जंतर-मंतर पर धरना शुरू कर दिया है।अन्ना ने भी आंदोलन को समर्थन देने

का एलान किया है। कल दिल्ली आ रहे हैं। ...और तो और बाबा चंदनदेव ने भी कह दिया है कि पकौड़ा भारतीयता का प्रतीक है, इसमें विदेशी धन का कोई काम नहीं है। अगर एफडीआई को मंजूरी दी गई तो मैं विरोध करूंगा।

बाबा चंदनदेव का नाम सुनकर पीएम का माथा ठनका। ये वही चंदनदेव हैं जिन्हे प्रधानमंत्री ने एक भव्य समारोह में दिव्य लोचन उपनाम दिया था। अपने भाषण में पीएम ने बार-बार कहा था कि देश को लेकर बाबाजी के पास जो विजन है, वह ज्ञान चक्षुओं के बिना संभव नहीं है। इसलिए इस संसार में केवल वही दिव्य लोचन कहलाने के हकदार हैं। अब देख लो सिर चढ़ाने का नतीजा। बाबाजी का गुस्सा प्रधानमंत्री ने गृह मंत्री पर उतारा— ठाकुर साहब आप कभी-कभी शल्व की तरह व्यवहार करते हैं। चुनावी साल में ये सब ड्रामे तो होंगे ही लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपना काम रोक देंगे। एफडीआई तो लाना ही पड़ेगा।

गृह मंत्री ने गहरी सांस लेते हुए कहा— प्रधान सेवक जी। बात थोड़ी सी बिगड़ी हुई है । जंतर-मंतर पर भीड़ बेकाबू हो गई तो पुलिस ने पहले हल्का लाठी चार्ज किया। मामला बिगड़ा तो गोली चलानी पड़ी। एक आंदोलनकारी मारा गया। अन्ना को अब हम दिल्ली के रास्ते में ही रोकने जा रहे हैं। ज़रा सोचिये अगर ऐसे माहौल में हम पकौड़ा इंडस्ट्री में हंड्रेड परसेंट एफडीआई पर अड़े रहे तो कितना गलत मैसेज जाएगा। कोई और तरीका ढूंढना पड़ेगा इकॉनमी को ट्रैक पर लाने का।

पीएम जी अपना सिर पकड़कर बैठ गये। बहुत देर तक खामोशी छाई रही। अचानक उनके प्रिंसिपल सेक्रेटरी ने आकर उनके कान में कुछ कहा। पीएम ने सहमति में सिर हिलाया। प्रिंसिपिल सेक्रेटरी ने अपने साथ लाया रेडियो सेट ऑन कर दिया।

मन के पकौड़े

फीमेल आरजे ने एनाउंस किया— दोस्तो आपसे विदा लेने का वक्त आ गया है लेकिन अब आ रहा है, वो प्रोग्राम जो सिर्फ दो हफ्ते में हमारे स्टेशन का टॉप रेडेटेड शो बन चुका है। जी हां— `मन के पकौड़े' विद वन एंड ओनली रामभरोसे।

सभी सुनने वालों को रामभरोसे का राम-राम। पकवानो में जो है घोड़ा, वही है भारत माता का प्यारा पकौड़ा।

हिंदू-मुस्लिम सिख ईसाई, सबने मिलकर पकौड़ी खाई।

उसके बाद रामभरोसे ने एक लोकगीत गाया— पकौड़िया रे तोर गुन गवलो ना जाला।

रामभरोसे रेडियो पर गा रहे थे और पूरा कैबिनेट झूम रहा था। गीत खत्म हुआ तो रामभरोसे ने अपनी बात आगे बढ़ाई— मेरी घरवाली कहती थी, जिंदगी में कुछ करके दिखाओ। हम पूछते थे, पकौड़ा तलना काम नहीं है क्या? हम बार-बार समझाते थे वो हर बार मुंह बनाती थी। पड़ोसी भी नीची नज़र से देखते थे। जिंदगी में इतना अंधेरा था कि कई बार सोचे कि गांव लौट जाये। आत्महत्या करने का विचार भी मन में आया। फिर एक दिन मैने पीएम साहब टीवी पर बोलते सुना— पकौड़ा तलना भी एक काम है। बस उसी दिन से मेरी जिंदगी बदल गई।

पीएमजी मेरे ठेले पर आये, उसके बाद जो हुआ उ तो इतिहास हइये है। हम अपने जलने वाले पड़ोसियों से पूछना चाहते हैं कि पकौड़ा बेचके आज मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, मेहरारू माय बहिन सब है, तुमलोग के पास क्या है?

हम बताते हैं, तुम्हारे पास खाली जलन है। हमारे पास देश का भविष्य है, काहे कि अब पीएम जी का दिया विजन है। यही विजन बांटने के लिए हम प्रोग्राम स्टार्ट किये है— मन के पकौड़े

आज़ाद भारत के इतिहास में किसी कैबिनेट मीटिंग में कभी इस तरह कोई रेडियो प्रोग्राम नहीं सुना गया था। `मन के पकौड़े' जारी था—

पकौड़ा तलने वालों का भविष्य सबसे उज्जवल है। काहे कि यह निर्माण का काम है। जैसे पीएम जी देश तलते हैं, वैसे ही हम पकौड़ा तलते हैं। पकौड़ा हो या देश सुनहरे

तभी होंगे जब तेज़ आंच पर तले जाएंगे। अच्छा अब लेते हैं, आपलोगो के कुछ प्रश्न। कॉलर लोग लाइन लगा के खड़े हैं। सवाल जल्दी-जल्दी पूछियेगा टाइम नहीं है हमारे पास।

सवाल आया— राम-राम रामभरोसे भाई। हम राम लड्डू बेचते हैं। आप जानते हैं ना रामलड्डू मूंग दाल वाला। घिसी हुई मूली और हरी चटनी के साथ खाया जाता है। दिल टूट गया जब परधान जी बोले कि पकौड़ा बनाना ही असली काम है। क्या इस देश में रामलड्डू वालों का कोई फ्यूचर नहीं है?

रामभरोसे ने उत्तर दिया— देखो भाई पीएम जी की बात मिसकोट किया गया है। क्या किया गया है— `मिसकोट'। जिस तरह भारत में पैदा होनेवाला हर आदमी हिंदू है, उसी तरह खौलते तेल में निकली हर चीज़ पकौड़ा है। रामलड्डू कहो, बर्रा कहो या पकौड़ा एक ही बात है। आपका भविष्य बहुत उज्जवल है। टेंशन मत लो मस्त रहो। अगला प्रश्न पूछने वाली एक लड़की थी। रामभरोसे बजरंग बली की प्रार्थना करके घर से निकलते थे लेकिन ऐसे दो-चार कॉल हर शो में आ ही जाते थे।

`भरोसे जी लोग विराट कोहली को यूथ आइकन कहते हैं तो मुझे हंसी आती है। यूथ के असली हीरो तो आप हैं।

जी बहुत-बहुत धन्यवाद आपका, हम तो एक आम पकौड़ा वाला हैं।

भरोसे जी आप हमेशा अपने आप को पकौड़े वाला क्यो कहते हैं, चाय-पकौड़े वाला क्यों नहीं? आप तो चाय भी प्रोवाइड कराते हैं वो भी एकदम फ्री।

चायवाला एक्के ठो है, इस देश में और आगे भी एक्के ठो रहेगा। हम जो हैं, उसी में खुश हैं। प्रधान जी का आशीर्वाद है और क्या चाहिए।

भरोसे जी मुझे भी आपका आशीर्वाद चाहिए...सोते जागते आपके ही सपने देखती हूं। एक बार मिलना चाहती हूं में आपसे। जस्ट वाना क्लिक ए सेल्फी विद यू प्लीज... आप जानते नहीं हैं कि आप मेरे लिए क्या हैं.. आई रीयली... रीयली लव...यू

रामभरोसे सीरियस हो गये— देखिये देवीजी `मन के पकौड़े' राष्ट्र निर्माण का कार्यक्रम है। इधर-उधर की बात करके टाइम मत बर्बाद कीजिये, अभी बहुत कॉलर लोग लाइन में हैं, धन्यवाद।

उसके बाद कई अलग-अलग प्रश्न आये। पकौड़ा कितनी देर तक तला जाये से लेकर बेसन में कटा धनिया और प्याज डालकर कितनी देर फेंटा जाये जैसे सारे प्रश्नों के

रामभरोसे ने बहुत धैर्य के साथ जवाब दिये। सबसे ज्यादा प्रश्न पकौड़ा स्टार्ट अप को लेकर थे। इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए रामभरोसे एक ऐसी घोषणा की जो युगांतकारी साबित हुई।

मन के पकौड़े में सवाल पूछने वाला एक युवा श्रोता बहुत जज्बाती हो गया। उसने रामभरोसे पर सीधा इल्जाम मढ़ा कि अगर प्रधानमंत्री ने उसके सिर पर हाथ रख दिया इसलिए वो बड़ा आदमी बन गया वर्ना वह भी रोज़ 200 रुपये कमा रहा होता और नोएडा पुलिस के डंडे खा रहा होता। नौजवान सिस्टम और सरकार को लगातार गालियां बक रहा था। लेकिन रामभरोसे ने उसे रोका नहीं। उसकी बात खत्म हुई तब रामभरोसे बोले— ठीक कहते हो भाई। सिस्टम एकदम्मे चौपट है। लेकिन पीएमजी चौपट थोड़े ना हैं। 24 घंटे में 22 घंटे काम करते हैं। हाथ भी उनके पास दुइये ठो है। किसके-किसके सिर पर रखेंगे। मेरे सिर पर पीएम का हाथ और आपलोगो के सिर पर मेरा हाथ, बात एक ही है। आप सोचते होंगे कि रामभरोसे की जिदंगी बहुत आसान है, लेकिन ऐसा नहीं है।

आज मुझे पूरा देश जानता है, फिर भी बैंक वाले लोन देने को तैयार नहीं हैं। वे बेचारे भी क्या करें। सब पैसा तो माल्या और मोदी लेके भाग गये। लेकिन हम भी हार मानने वालों में कहां हैं। अब सीधे पब्लिक के पास जाएंगे और फंड लेकर आएंगे। हमारी प्रजातंत्र पकौड़ा प्राइवेट लिमिटेड अपना आईपीओ ला रही है। दुनिया की किसी भी पकौड़ा कंपना का पहला आईपीओ। अच्छा तो भाइयो और बहनो देश के लिए बहुत काम करना है। कल फिर होगी इसी वक्त मुलाकात रामभरोसे को दीजिये आज्ञा राम-राम।

प्रधानमंत्री ने अपना चश्मा उतारा और गीली आंखे पोंछी— इतनी बड़ी स्टेट मशीनरी हाथ-हाथ रखकर बैठी है। उधर वह पकौड़े वाला नौजवान राष्ट्र के प्रति इतना `क्रूतसंकल्प' है कि अकेला मेरे सपने पूरे करने निकल पड़ा है। बैंक से फंड ना मिलने पर अब पब्लिक इश्यू ला रहा है। धन्य हो! अब मैं कह सकता हूं कि यह देश नौजवानों के हाथों में सुरक्षित है। रामभरोसे मैं सचमुच तुम्हारे ही भरोसे हूं।

महापुरुष बनने के लिए मेहरारू को निकालना जरूरी है?

होटल इंटर कांटिनेंटल का कॉरपोरेट सुइट। सामने नज़र आ रहा है सिडनी हार्बर। साल 2022 और महीना वही जनवरी का। पकौड़ा टाइकून रामभरोसे जी आंखों पर सन ग्लास चढ़ाये अधलेटे रीलैक्स कर रहे हैं। ऐसा रिलैक्सेशन उन्हे बिरले ही नसीब होता है। जब से पिज्जा हट `पकौड़ा हट' बना है, रामभरोसे के टूर बहुत ज्यादा बढ़ गये हैं। वे यहां पकौड़ा हट के एशिया- पैसेफिक रीजन के नये सीईओ को अप्वाइंट करने आये थे। ऑस्ट्रेलिया के गर्वमेंट ऑफिशियल्स के साथ भी एकाध मीटिंग भी थी। सब ठीक से निपट गया। ग्लोबल सीईओ टीसी यानी त्रिलोकी नाथ ने मीटिंग खत्म होने के बाद कल ही रात बैंकूवर की फ्लाइट पकड़ ली। रामभरोसे के लिए यह समय दिल्ली की फ्लाइट से पहले थोड़े समय के विश्राम का है।

रामभरोसे अब पेट के बल लेट गये और सपना मल्होत्रा उन्हे बैक मसाज देने लगी। पिछले चार साल से सपना उनके साथ है। येल यूनिवर्सिटी से एमबीए है। कभी टीवी की दुनिया की बहुत कामयाब एक्ट्रेस थी। लेकिन भारत में पकौड़ा क्रांति का बिगुल बजा तो सबकुछ छोड़कर रामभरोसे जी के साथ जुड़ गई। पहली ही मुलाकात में उसने कहा था—- मैं आपको इसलिए ज्वाइन करना चाहती हूं, क्योंकि आपका मकसद बहुत बड़ा है। सैलरी में एक रुपया देंगे तब भी चलेगा एंड टुडे शी इज़ द हाइयेस्ट पेड एग्जीक्यूटिव सेक्रेटरी ऑफ इंडिया। चेयरमैन के स्पीच लिखने से लेकर प्रेजेंटेशन बनाने तक सारे काम सपना के हवाले हैं। रामभरोसे ने पीएम जी के विजन को अपने जीवन में उतारा और सपना ने रामभरोसे जी को। उनके पार्श्व भाग में करैत के दंश का जैसा निशान है, ठीक वैसा ही निशान वाला टैटू सपना ने अपने बायें कंधे पर बनवाया है। पीठ की मालिश पूरी हुई तो रामभरोसे जी सीधे हो गये। उन्होने सन ग्लास नीचा किया तो हमेशा की तरह उन्हे सपना का क्लीवेज नज़र आया। लेकिन ना जाने क्यों अचानक जेहन में परमसेरी करेंट बनकर दौड़ गई। रामभरोसे की कहानी एक बार फिर से फ्लैश बैक में चली गई।

ई कौनो बात हुई? तरक्की करने वाला कोई आदमी आजकल अपनी घरवाली को साथ रखना ही नहीं चाहता है। यही सीखे हो कि महापुरुष बनने के लिए मेहरारू को

घर से भगाना जरूरी है?

शांत को जाओ परमरेसी। हम भगा कहां रहे हैं, हम तो बनारस भेज रहे हैं। देखो भगवान की दया से कोनो बात की कमी नहीं है। घर यहां भी है, वहां भी तिनमहला बनवा दिये हैं। मेरा कोई ठिकाना तो है नहीं, आज पैर यहां तो कल वहां। तुम अकेले रहोगी कैसे? वहां सब अपने हैं। बीच-बीच में हम भी आते-जाते रहेंगे बनारस। पइसे की कोई बात नहीं है, जितना मन चाहे उतना खर्च करो।

परमेसरी कुछ नहीं बोली। बस रोते-रोते सामन बांधती रही। रामभरोसे ने दोनो मुंहबोले सालों को हवाई जहाज के किराये के साथ खूब सारा राह खर्च दिया और इस तरह घर से विदा हो गई उनकी घरवाली। रेडियो सुन-सुन के यही सीखा है रामभरोसे कि देश बड़ा होता है, परिवार बाद में। परधान जी की हर उम्मीद पूरी करना अपना सबसे बड़ा धर्म मानता है रामभरोसे।

वैसे देखा जाये तो परमेसरी से कुछ जम नहीं रहा था रामभरोसे का। हर बात में किच-किच करती थी। पीएम जी से मिलने के बाद अगर विजन बड़ा हो गया तो इसमें रामभरोसे की क्या गलती। पहली बार जब सात लाख मिले तो मोटे-मोटे सोने के कंगन लेकर आया घरवाली के लिए। लेकिन हाय दैय्या! हाथ सीधा करते ही कंगन बाहर निकल जाये। परमेसरी ने ताना दिया— कैसे मर्द हो अपनी जनाना के हाथ का नाप तक नहीं मालूम है तुमको। अरे भाई कंगन बड़ा है तो इसका मतलब सोना जादा है, कम थोड़े ना है। आराम से किसी दिन बदलवा लेती जाके सुनार के यहां। लेकिन अड़ गई - कल ही नया कंगन चाहिए एकदम सही नाप वाला।

विजन मे मेहरारू का फिट नहीं होना बहुत बड़ा चक्कर है। गलती परमसेरी की भी नहीं है। कोई आस औलाद दिये नहीं भगवान कि मन लगा रहे। रामभरोसे बोला— आईवीएफ से करवा लो, नई टेक्नोलॉजी है। पूरा देश टेक्नोलॉजी के साथ चल रहा है, तुम भी चलो। लेकिन याद रखना बच्चा एक्के बार में दो-तीन ठो होगा। यह सुनकर परमेसरी डर गई । रामभरोसे भी क्या करता, झूठ थोड़े ना बोल सकता था। रोज-रोज की लड़ाई से तंग आ गया था। इसलिए तुम अलग रहो भाई वही अच्छा है।यहां देश सुधारने का काम है।

तो धर्मपत्नी को काशीवास देकर रामभरोसे जी जुट गये भारत निर्माण के काम में। नोएडा में पांच जगहों पर रामभरोसे जी के पकौड़ा आउट लेट थे। जो काम उन्होने नोएडा में किया था, वही काम अब पहले दिल्ली और उसके बाद पूरे देश में करना चाहते थे। बैंक वालो ने हाथ खड़े कर दिये। लेकिन मर्चेंट बैकरो ने निराश नहीं

किया। इस देश की जनता जब बिट क्राइन में पैसा लगा सकती है तो फिर पकौड़े पर क्यों नहीं। बिट क्राइन किसी ने देखा नहीं है, पकौड़े भारतवासी प्रतिदिन खा रहे हैं और अब उन्हे बड़े पैमाने पर खिलाने की सरकारी योजना भी है। निवेशकों को भरोसा दिलाने के लिए पीएम साहब के साथ रामभरोसे के बड़े-बड़े फोटो थे। पीएमजी के वे ट्वीट भी थे जो उन्होने युवा शक्ति के प्रतीक रामभरोसे की तारीफ करते हुए किये थे। बस फिर क्या था पब्लिक इश्यू को हाथो-हाथ लिया देश के निवेशकों ने और रामभरोसे जी कंपनी को साढ़े चार हज़ार करोड़ रुपये थमा दिये। रामभरोसे जी ने अपनी ताबीज को माथे से लगाया और फिर प्रधान जी के फोटो के सामने खड़े होकर रोने लगे। दिल में दबा हुआ दर्द परमरेसरी के लिए भी था, उसी ने तो बनाई थी, इतने जतन से यह तावीज। अचानक फोन खड़का, देखा तो परधान जी का व्हाट्स एप मैसेज था— `भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है — कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती है। 'गर्व के साथ कह सकता हूं कि मैं सचमुच रामभरोसे हूं।'

रामभरोसे को अपने दादा का कथन याद आ गया— `ई सिस्टम, परजातंतर, सरकार मतलब पूरा देश भोसड़ी के रामेभरोसे है।' इसी लॉजिक के आधार पर उन्होने अपने पोते नाम रामभरोसे रखा था। अब परधान जी तक रामभरोसे के भरोसे हैं। रामभरोसे सोचने लगे कि उनके दादा ज़रूर कोई औघड़, कोई सिद्ध पुरुष रहे होंगे। खैर प्रजातंत्र पकौड़ा प्राइवेट लिमिटेड अब पब्लिक लिमिटेड कंपनी बन चुकी थी। इधर जनता का पैसा आया और उधर पकौड़ा क्रांति ने नई रफ्तार पकड़ ली। कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रजातंत्र के पकौड़े बिकने लगे। मुंबई और बैंगलोर जैसे शहरों में सीसीडी की जगह अब पीपी यानी प्रजातंत्र पकौड़ा के आउटलेट मीटिंग के फेवरेट डेस्टिनेशन बन गये। पकौड़े साथ चाय अब भी मुफ्त मिलती थी लेकिन कॉफी और बाकी बेवरेजेज़ के पैसे लगते थे। अपने पिता की स्मृतियों को नमन करते हुए रामभरोसे ने हर जगह कुल्लड़ इंट्रोड्यूस कर दिये।

पूरे देश में पीपी के 100 से ज्यादा आउट लेट खुल चुके थे। छोटे शहरों के भीड़-भाड़ वाले इलाकों में जगह-जगह कियोस्क थे वे अलग। साल 2018 तेजी से भाग रहा था। कारोबार शुरू होने के छह महीने के भीतर बिजनेस ब्रेक इवेन पर पहुंच गया। 10 रुपये फेस वैल्यू वाला प्रजातंत्र पकौड़ा प्राइवेट लिमिटेड का शेयर 340 रुपये पर लिस्ट हुआ और देखते-देखते 2000 को पार कर गया। बड़ी बात यह थी कि कंपनी के शेयरों में पैसा लगाने वालों में सबसे ज्यादा एफआईआई यानी विदेशी संस्थागत निवेशक थे।यानी विकास के जिस मॉडल का कुछ भारतीयों ने मजाक उड़ाया,

विरोधी दलो ने फिकरे कसे, उसी मॉडल को आदर्श मानकर मॉगर्न स्टैनले और जेपी मॉर्गन जैसी बड़ी संस्थाएं अरबो रुपये दांव पर लगा रही थीं।

गोता लगा रहा सेंसेक्स अब सीना तानकर खड़ा था। प्रजातंत्र के पकौड़ो की कामयाबी के बाद इस सेक्टर में अब कई और कंपनियां बन चुकी थी और जल्द ही नये पब्लिक इश्यू आनेवाले थे। पकौड़ा इकॉनमी को लेकर प्रधानमंत्री जी की भविष्यवाणी का मज़ाक उड़ाने वाले ग्लानि के मारे डिप्रेशन में चले गये। व्हाट्स एप पर ख़बर आई कि इंफाल और चंदौली में दो लोगो ने इसी शर्म के मारे आत्महत्या कर ली है। डिप्रेशन में बैंक वाले भी कुछ कम नहीं थे। बैंकरों का प्रतिनिधिमंडल रामभरोसे के पास माफी मांगने पहुंचा और उनसे इस बात का आग्रह किया कि जितने पैसे चाहिए उतने ले लीजिये। रामभरोसे ने टका सा जवाब दिया— जब हमारी महान जनता हमें सीधे पैसे देने को तैयार है तो फिर आपके पास आने की ज़रूरत क्या है? जनता यह जानती है कि उसका निवेश कहां सुरक्षित है। आप ब्याजखोर हैं, वह हमारी पार्टनर है। सबसे ज्यादा एनपीए वाले प्राइवेट बैंक का चेयरमैन रोने लगा —आपलोग सोचते हैं कि इस देश में केवल किसान आत्महत्या कर सकता है। फांसी हम बैंक वाले भी लगा सकते हैं बल्कि लगा ही लेंगे। देखिये मैं तो बैग में हमेशा रस्सी भी साथ रखता हूं। आपने देश को बचाने का रास्ता बताया है। हमें भी बचाइये। ज़रा सोचिये अगर बैकिंग सेक्टर बैठ गया तो इस देश की इकॉनमी का क्या होगा।

बहुत से स्टार्ट अप वाले हैं, हज़ारो लोन अप्लीकेशन पड़े होंगे आपके पास। आप उन्हे लोन क्यों नहीं देते, मेरा काम तो हो चुका है— रामभरोसे ने कहा।

सर बाकी लोगो में और आपमें फर्क हैं। आप पारस पत्थर हैं, लोहे को भी छू देंगे तो सोना बन जाएगा। आप अगर हमसे लोन लेंगे तो बाकी जो जेनुइन बिजनेसमैन हैं, उनका हौसला भी बड़ेगा। वे बेचारे किसी भी एक्सपैंशन प्लान से घबरा रहे हैं। वे भी लोन लेंगे तो इकॉनमिक एक्टिविटीज़ में तेजी आएगी और अर्थव्यस्था डिप्रेशन से बाहर निकलेगी।

रामभरोसे ने अपने सीईओ की तरफ इस प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा- क्या करें यह तो गिड़गिड़ाये जा रहा है। सीईओ ने इस तरह का लुक दिया जैसे कह रहा हो— दरवाज़े पर आये आदमी को खाली हाथ लौटाना अधर्म नहीं होगा क्या? बैंकिंग कंसोर्टियम का चेयरमैन बारी-बारी अपने डेलीगेशन मेंबर्स का मुंह ताकता रहा। कुछ देर बात सीईओ त्रिलोकी नाथ बोले— `दो महीने बाद हम हर-हर पकौड़ा, घर-घर पकौड़ा' स्कीम लांच करने जा रहे हैं। इसके लांच होते ही पकौड़ा इंडस्ट्री

असंगठित क्षेत्र से निकलकर आर्गेनाइज्ड सेक्टर में आ जाएगी। हर साल करीब चार लाख युवाओं को रोजगार मिलेगा। अभी तक पीपी यानी प्रजातंत्र पकौड़ा आउटलेट्स केवल बड़े शहरों में हैं। ये आउटलेट अब हर गांव में खुलेंगे। फेज वन का इनवेस्टमेंट 25 हज़ार करोड़ रुपये का है। मैं प्रोजेक्ट रिपोर्ट भिजवा देता हूं। अगर आपके टर्म्स फेबरेबल रहे तो हम ज़रूर विचार करेंगे।

सारे बैंक वाले एक साथ खड़े हो गये— प्रोजेक्ट रिपोर्ट की क्या ज़रूरत है। आपने बता दिया हम समझ गये। रही टर्म एंड कंडीशन की बात तो आप जो चाहेंगे वो हो जाएगा, बस हां कर दीजिये आप।

रामभरोसे ने कंसोर्टियम के चेयरमैन के सिर पर हाथ रख दिया जो अब अपने आंसू पोछकर मुस्कुरा रहा था।

हो रहा है पकौड़ा निर्माण

सैटैलेटाइट से खींची गई ब्लू प्लैनेट यानी धरती की तस्वीर। कैमरा जूम होता है तो नज़र आता है रौशनी से नहाया भारत। असंख्य आभूषण पहनकर दमकती भारत माता। खनखन करके बरसते सोने के सिक्के। सोने के सिक्के अचानक पकौड़े बन गये। दोनो ही पीले हैं। समझ में नहीं आ रहा है सिक्के हैं या पकौड़े। स्वर्ण मुद्राएं और पकौड़े दोनो एक-दूसरे में समा रहे हैं, डिज़ॉल्व हो रहे हैं। पकौड़े सोना उगल रहे हैं और सोने के इन सिक्को से पकौड़े बन रहे हैं।

ओडिशी नर्तकी नाच रही है। देव प्रतिमाओं पर पकौड़े अर्पित कर रही है। अपनी हस्त मुद्राओ से पकौड़े बना रही है। कथकली नृत्य में देव-दानव संग्राम चल रहा है। अमृत कलश में पकौड़े रखे हैं।

गांवो में फसल लहलहा रहती है। खेत में काम करने वाली सारी औरतें सुंदर गहनो से लदी है। कानो के झुमके पकौड़ो की तरह, माथे का टीका पकौड़े की तरह।

खुशहाल मिडिल क्लास परिवार के बरामदे पर पड़ी बच्चे की पॉटी पकौड़े की तरह, दादाजी की नाक पकौड़े की तरह, ऑफिस जाती बहू के मुंह में पकौड़े रखती आदर्श सास।

पकौड़े खाकर मार्केट को पुल करते सेंसेक्स का बुल। प्लेट में रखे पकौड़े एनिमेशन के जादुई इफेक्ट से पुलो के खंभे बन गये। इन पुलो पर बड़ी-बड़ी गाड़ियां दौड़ रही हैं, पकौड़ो के लिए बेसन और सब्जियां लेकर जा रही हैं। लोमड़ी नीचे इंतज़ार कर रही है, उपर पेड़ पर मुंह में पकौड़ा दबाये कौव्वा बैठा है। लोमड़ी ने कहा- गाना गाओ लेकिन कौव्वा पकौड़ा लिये फुर्र से उड़ गया।

कसाई ने जानवर काटना बंद कर दिया है, वह अब पकौड़े बेच रहा है। गौ-रक्षकों ने अपने लाठी डंडे एक तरफ रख दिये क्योंकि अब वे गौ रक्षक नहीं पकौड़ा भक्षक है। खुद खा रहे हैं और गौमाता को भी खिला रहे हैं। गायों के पकौड़े अलग हैं, जिन्हे खाकर अब वे पहले से ज्यादा दूध रहे हैं।

मुंबई में प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के आउटलेट में बैठे आलिया भट्ट और आयुष्मान खुराना। डिजॉल्व टू ग्रामीण भारत का प्रजातंत्र पकौड़ा आउट लेट। वहां बैठी लड़की आलिया से ज्यादा सुंदर है। लड़का आयुष्मान ही नहीं अर्जुन कपूर से भी ज्यादा

हैंडसम है। गांव की लड़की लैपटॉप देख रही है। लड़का लड़की को देख रहा है। अचानक वेटर पकौड़े का प्लेट दोनो के बीच में रख देता है। अब दोनो एक-दूसरे को नहीं पकौड़े को देखते हैं। लड़का और लड़की दोनो ने एक साथ हाथ बढ़ाया लेकिन बीच में एक तीसरा हाथ आया। ये हाथ पीएम जी का है। उन्होने एक पकौड़ा उठा लिया। लड़का और लड़की दोनो मुस्कुराये। पीएम जी मृदु हंसी हंसकर शुभवचन बोले — हो रहा है पकौड़ा निर्माण।

उसके बाद पूरे देश के सेलिब्रिटी अलग-अलग पचास शहरों मे प्राइम लोकेशन पर खड़े होकर गाते नज़र आ रहे हैं— हो रहा है पकौड़ा निर्माण।

आखिरी फ्रेम में राष्ट्र निर्माण का लोगो पकौड़ा निर्माण के साथ एकाकार हो जाता है। ग्राफिक डिज़ाइनर की कलाकारी इतने कमाल की है कि राष्ट्र निर्माण और पकौड़ा निर्माण दोनो बारी-बारी से नज़र आते हैं। यानी जो राष्ट्र निर्माण है, वही पकौड़ा निर्माण है।

फिल्म खत्म हुई तो लोग पागलो की तरह चीखने लगे। सपना मल्होत्रा ने रामभरोसे जी के कान में बताया— इससे ज्यादा चीख-पुकार `कैंस' में मची थी, जब लायंस जूरी अवार्ड के एनाउसमेंट के बाद वहां इस फिल्म की स्क्रीनिंग हुई थी।

फिल्म देखने वाले हैरान थे। मुंबई के ताजमहल होटल में इससे पहले किसी भी कॉरपोरेट ने इतना बड़ा शक्ति प्रदर्शन नहीं किया था। कौन नहीं था, उस पार्टी में। देश के वित्त मंत्री समेत दर्जनों केंद्रीय मंत्री। महाराष्ट्र और गोवा के मुख्यमंत्री। सभी बड़े कॉरपोरेट हाउस के टॉप बॉस और साथ ही नेशनल और इंटरनेशल मीडिया।

उद्योगपति एक-दूसरे बातें कर रहे थे कि मार्केटिंग पर हम भी हर साल करोड़ो खर्च करते हैं। एजेंसी भी वही है, जिससे हम काम करवाते हैं। लेकिन ऐसा इंपैक्ट नहीं आ पाता है, आखिर क्यों?

बीकॉज वी लैक विजन, लेट्स एडमिट इट ऑनेस्टली

सही कहा रामभरोसे जी जैसा विजन किसी के पास नहीं देश में है। उनके पास बाबा चंदनदेव वाली दृष्टि है और बाबा राम-करीम वाली क्रियेटिविटी है, पॉजेटिव सेंस में कह रहा हूं— एक राज्य के सीनियर मिनिस्टर ने अपने मुख्यमंत्री से कहा।

हां कितनी सादगी है। अपनी पर्सनल लाइफ में चाहे जैसे भी रहें लेकिन इस तरह प्रोग्राम में आते हैं, पकौड़े वाले के वेश में। मोटीवेट भी तो करना है, युवा पीढ़ी को।

भाइयो और बहनो एक बहुत छोटी सी बात कहनी है मुझे। ज़रा ध्यान से सुनियेगा— होस्ट रामभरोसे जी आवाज़ गूंज उठी।

पोडियम पर खड़े रामभरोसे जी ने कहा— हम बहुत मामूली आदमी हैं। आपलोगो के बीच खड़े होने लायक नहीं है। लेकिन पीएम जी ने कहा था— विजन बड़ा रखो। अब देख लीजिये विजन बड़ा रखने का नतीजा। लांच के छह महीने के भीतर प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड भारत सबसे बड़ा फूड चेन बन गया है।

तालियों को नज़र अंदाज़ करते हुए रामभरोसे जी ने कहा— लोग कहते हैं, रामभरोसे चमत्कारी आदमी हैं। हम कहते नहीं, चमत्कारी आदमी तो ई दुनिया में एक्के ठो है... का नाम है, उनका?

भीड़ ने नारे लगाना शुरू किया... पीएम जी... पीएम जी...

जो काम सत्तर साल में नहीं हुआ वो केवल सात महीने में हो गया। क्रेडिट किसको है। प्रधान सेवक जी के बाद क्रेडिट है, हमारे आम पकौड़े वालों को। प्रजातंत्र पकौड़ा अब एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी है। हम एलान करते हैं कि कंपनी से जुड़े हर पकौड़े वाले को चाहे वह बेसन फेंटता हो चाहे तलता हो या फिर साइकिल पर ले जाकर पकौड़ी बेचता हो, सबको 15-15 लाख रुपये के शेयर दिये जाएंगे एकदम मुफ्त और वो भी अगले दो महीने के भीतर।

किसी कॉरपोरेट पार्टी में चुनावी रैली जैसा समां पहले कभी नहीं दिखा था। देश में बहुत सी चीज़ें पहली बार हो रही थी। पहली बार इस तरह साल भर के भीतर इकॉनमी का टर्न एराउंड हुआ था, वो भी केवल एक सेक्टर की वजह से। पहली बार किसी कंपनी ने अपने अपने लाखों कर्मचारियों को इस तरह इनाम बांटे थे। घोषणा के बाद रामभरोसे जी बैठ चुके थे और सीईओ त्रिलोकी नाथ उर्फ टीसी कंपनी की भावी योजनाओं के बारे में बता रहे थे। कंपनी का पूरा फोकस रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर है। रिसर्च डिपार्टमेंट ने एक बहुत बड़ी खोज है, जिससे पता चला है कि पिज्जा वह भारतीय पकौड़ा है, जो वैदिक काल में बहुत लोकप्रिय था। उसका मूल नाम पित्तजा था और इसके नियमित सेवन से पित्त से संबंधित व्याधियां नष्ट होती थीं। वैदिक कालीन पकौड़े की विशेषता है कि इसे तेल में नहीं तला जाता है।

इसे लोकप्रिय बनाने के लिए कंपनी ने एक बड़ी योजना बनाई है।

प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन से पता चला है कि कई प्रकार के पकौड़े होते थे, जिनसे मोटापे का नाश होता था और सौंदर्य में वृद्धि होती थी। ऐसे पकौड़े को घर-घर तक

पहुंचाया जाएगा। इसके अलावा बाबाजी के कोलाइब्रेशन से प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड ने एक ऐसा पकौड़ा विकसित किया है, जिसका नियमित सेवन गर्भवती महिलाएं करें तो पुत्री रत्न की प्राप्ति अवश्य होगी। जो लोग पुत्री सुख के वंचित हैं, उनके लिए यह पकौड़ा वरदान है। पुत्र चाहने वाले पति-पत्नी कंपनी के सामान्य पकौड़े नियमित रूप से खायें।

ब्रिलियेंट... आई थिंक प्रजातंत्र पकौड़ा इज़ द फ्यूचर ऑफ इंडिया। रामभरोसे जी तो खैर जीनियस हैं, इनका सीईओ भी कुछ कम नहीं है। अगर `प्रजातंत्र पकौड़ा' में नहीं होता तो ये इंडिया का सबसे महंगा प्रोफेशनल होता— सिंहानिया ने बिड़ला से कहा। बिड़ला ने भी स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब देश जलता नहीं तलता है

प्रधानमंत्री के आते ही पार्टी के सारे पदाधिकारी खड़े हो गये। सत्ता के कंटकीर्ण मार्ग पर कदम रखते ही पीएम जी पार्टी पॉलिटिक्स से एकदम दूर गये थे। वक्त की सख्त कमी थी। राष्ट्र-निर्माण एक पल भी चैन नहीं लेने देता था, उपर से उनके सिद्धांत। वे हमेशा से यह मानते थे कि राष्ट्रीय नेता को कभी क्षुद्र राजनीति में नहीं पड़ना चाहिए, अपनी पार्टी की अंदरुनी राजनीति में भी नहीं। चुनाव का काउंट डाउन शुरू होने के बाद यह पार्टी पदाधिकारियों के साथ उनकी पहली बैठक थी। हमेशा की तरह वे वक्त से पांच मिनट पहले पहुंच गये थे।अध्यक्ष जी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री अपने लिए तय स्थान पर बैठ गये।

प्रधानमंत्री ने पूछा— तो अध्यक्ष जी कैसी तैयारी है, चुनाव की?

अध्यक्ष जी बोले— तैयारी ज़बरदस्त है। सोशल और रीलीजियस इंजीनियरिंग एकदम दुरूस्त है। कार्यकर्ताओं में जोश है। टिकट के बंटवारे में थोड़े पेंच ज़रूर हैं, लेकिन पिछली बार के मुकाबले इस बार रुठने वालों की संख्या कम होगी। बूथ मैनेजर अभी से ही चुन लिये गये हैं। सोशल मीडिया विंग अपना काम कर रहा है। इलेक्शन कमीशन ने तैयारी पूरी कर ली है और हम भी तैयार हैं।

पीएम जी ने पूछा— मुद्धे क्या होंगे?

अध्यक्ष जी बोले— विकास, अस्मिता भगवान और इन सबको मिलाकर मेरा भारत महान।

पीएम जी ने टेबल पर रखा टाइम मैगजीन उठाया। कवर पेज पर रामभरोसे का फोटो था और उसपर लिखा था— द पकौड़ामैन हू ट्रांसफॉर्म्ड इंडियन इकॉनमी।

मैं आशा करता हूं आपलोगो ने पढ़ी होगी टाइम्स की यह कवर स्टोरी।

हां मंगवाई थी पत्रिका लेकिन मुझे समय नहीं मिल पाया। गुजरात से सीधे बिहार जाना पड़ा।

मैं अध्यक्ष जी की व्यस्तता समझ सकता हूं लेकिन आपलोगो में से किनने पढ़ी है? किसी ने नहीं पढ़ी है? इस पत्रिका में बताया है कि एक छोटे से प्रयास का प्रभाव क्या होता है। भारत के प्रधानमंत्री ने अपने इंटरव्यू में पकौड़े का नाम लिया तो इससे एक

गरीब पकौड़े वाला मोडिवेट हो गया। वो मोडिवेट हुआ तो ज्यादा पकौड़े तलने लगा। वह सफल हुआ तो बाकी लोग भी पकौड़े तलने लगे। बाकी लोग तलने लगे तो खाद्य तेल और अनाज के बाज़ार में तेजी आई। इन चीज़ों की मांग बढ़ी तो ट्रांसपोर्टेशन का बिजनेस तेज़ हुआ। ट्रांसपोर्टेशन में पैसा आया तो इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में भी तेजी आ गई। लोगो के हाथ में पैसे आये तो खरीदारी बढ़ी और इस तरह पूरी इकॉनमी रिवाइव हो गई एक प्रयास से।

पीएम जी की जय... पीएम जी की जय..

देखो भइया ये कोई चुनावी रैली नहीं है। पहले भी वॉर्निंग दे चुका हूं, चापलूसी मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।

जी हां...

अच्छा टाइम मैगजीन छोड़ दीजिये ये बताइये रामभरोसे जी ने अपनी कंपनी के प्रमोशन के लिए जो एड फिल्म बनाई है, वो कितने लोगो ने देखी है?

सिर्फ दो लोगो ने हाथ उठाया। पीएम जी बोले— बहुत अच्छे! ना टिकट स्क्रीनिंग कमेटी के हेड को टाइम मिला ना मेनिफेस्टो ड्राफ्टिंग कमेटी के चेयरमैन जी वक्त निकाल पाये। अच्छा जिनने भी देखी है, वे बतायें क्या राय है रामभरोसे जी की फिल्म के बारे में।

सबसे युवा महासचिव ने जवाब दिया— अत्यंत मनमोहक है। पकौड़ा क्रांति का बहुत अच्छा वर्णन है, उसमें। फिल्म देखने पर चलता है कि हमारी पकौड़ा क्रांति ने किस तरह भारत की अर्थव्यवस्था को बदलकर रख दिया है।

फिल्म में सबसे अच्छा आपको क्या लगा?

जब आप गांव में नौजवानों के बीच जाते हैं और उनकी प्लेट में से पकौड़ा उठा लेते हैं।

दूसरो की थाली से कुछ भी उठाना मेरा स्वभाव नहीं है मित्र। वो तो रामभरोसे जी का एड फिल्म है, उन्हे स्नेहवश कहा तो मैं इनकार नहीं कर पाया। लेकिन आपको उस पूरी फिल्म में बस वही सीन अच्छा लगा और कुछ नहीं?

महासचिव चुप हो गया।

यही है हमारे नेताओं के राष्ट्र निर्माण का विजन? जिसने भी वो एड फिल्म देखी होगी उसे ज़रूर याद होगा वह निर्मम कसाई।याद है किसी को कि नहीं?

क्या करता है, वो निर्मम कसाई। पशुओं का वध करने वाला वह आतातायी पकौड़े की दुकान खोल लेता है। यह होता है किसी भी योजना का सोशल इंपैक्ट!... और इकॉनमिक इंपैक्ट ये है इस परियोजना का कि हमारे भारतवर्ष की विकास पांच परसेंट से सीधे ग्यारह परसेंट तक पहुंच गई है। चुनावी रणनीति बनाते वक्त परियोजनाओं का इंपैक्ट असैसमेंट होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए?

प्रधानमंत्री ने अपने राजनीतिक सलाहकार की ओर इशारा किया। उसने सामने लगे स्क्रीन पर 2019 के चुनाव का कैंपेन स्लोगन चलाया जो टेक्निकल रीजन से प्ले नहीं हो पाया। पीएम जी बोले— ये है आईटी क्रांति की असलियत। सारा काम एक ही आदमी करेगा? उसके बाद पीएम जी ने बड़े-बड़े मंचीय कवियों को मात करते हुए खुद पूरा स्लोगन पढ़ा—

उनके समय पूरा देश जल रहा था
हमारे समय पूरा देश तल रहा है
वे सेक्स की बात करते थे
हम सेंसेक्स की बात करते हैं
वे कमीशन की बात करते थे
हम मिशन की बात करते हैं
उनके पास था विकास का लंगड़ा घोड़ा
हमारे पास है समृद्धि और स्वाद का पकौड़ा
मेरा देश तल रहा है
आगे निकल रहा है

पूरी राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने मिलकर मिसरा उठाया और बैठक में वाह-वाह गूंज उठी। पीएम जी सख्त मिज़ाज हैं। चमचागीरी बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं। लेकिन चुनावी मौसम में टीम भावना को बढ़ावा देना उनका फर्ज था। लोग गाते रहे, पीएम जी झूमते रहे। कुछ नौजवान नेता टेबल पर संगत भी करने लगे। कवि सम्मेलन खत्म हुआ तो राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने मुद्धे की एक बात छेड़ी— सिर्फ तलने से नहीं होगा, काटना भी पड़ेगा?

क्या किसको?

गुजरात, मध्य-प्रदेश, बिहार, यूपी और राजस्थान मिलाकर कम से कम 140 सिटिंग एमपी के टिकट काटने होंगे तभी हम चुनाव जीत पाएंगे। इन सांसदों को लेकर जनता में असंतोष है और कार्यकर्ताओं में भी गुस्सा है।

वो तो पुरानी बात हो गई। अब तो नई हवा बह चुकी है। अब कुछ नहीं चलेगा सिवाय पकौड़ा पावर के।

ग्राउंड से रिपोर्ट है मेरे पास। जनता नाराज़ है। कार्यकर्ताओं में भी बहुत गुस्सा है।

ठीक है,जो भी काटना-छांटना हो काट दीजिये। लेकिन ध्यान रखिये ये मैसेज एकदम नीचे तक जाना चाहिए कि पकौड़ी इकॉनमी की जो चमकदार तस्वीर नज़र आ रही है, वह सिर्फ झांकी है। 2022 तक भारतीय अर्थव्यस्था अमेरिकन इकॉनमी से तीन गुना ज्यादा बड़ी हो जाएगी।

आप मेरी बात नोट कर लीजिये। इस बार भी हम प्रचंड बहुमत से जीतेंगे और इस बार हमारी जीत के मैन ऑफ द मैच होंगे... रामभरोसे जी। कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा 15 लाख का एलान भी कर दिया अपनी कंपनी के लोगो के लिए। धन्य हो रामभरोसे। मैं सचमुच तुम्हारे भरोसे हूं।

पकौड़ी मेरी मां है

नोएडा फिल्म सिटी में आज सुबह से तनाव है। रिपोर्टर्रों के बीच हुई मार-कुटाई की एक छोटी सी वारदात के बाद पुलिस की टुकड़ी मुस्तैदी से पहरा दे रही है। मामला धांसू टीआरपी वाली एक ख़बर के आने के बाद शुरू हुआ। ब्रेकिंग न्यूज़ फ्लैश हुआ — पकौड़ा क्रांति के अग्रदूत रामभरोसे की जान को खतरा, गृह मंत्रालय ने दी जेड श्रेणी की सुरक्षा। बस क्या था, सारे रिपोर्टर दौड़ पड़े उनकी पहली कर्मभूमि की तरफ। वह जगह जहां पहले रामभरोसे जी का ठेला हुआ करता था और बाद में फास्ट फूड वैन लग गया। वैन आज भी खड़ा है और उसके पीछे है, वह `बोधि वृक्ष' जिसके नीचे पीएम जी ने रामभरोसे को देश बदलने वाला ज्ञान दिया था— विजन बड़ा करो।

`प्राण जाई पर टीआरपी ना जाई' को जीवन का ध्येय मानने वाले पत्रकार लाइव रिपोर्टिंग के लिए एक ऐसा लोकेशन चाहते थे जिसके बैकग्राउंड में पकौड़ा पुरुष की वह कर्मभूमि साफ-साफ दिखाई दे। पहले मैं- पहले मैं के चक्कर में दो रिपोर्टरो ने एक-दूसरे के सिर फोड़ दिये। जो रिपोर्टर अहिंसक टाइप के थे उन्होने कुछ दूर हटकर अपने कैमरे फिक्स कर लिये। लेकिन फूटे सिर वाले जांबाज अब भी प्राइम लोकेशन के लिए एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था थे। पुलिस वालों ने कांप्रोमाइज़ फॉर्मूला निकाला। दो अलग-अलग फ्रेम बनाये गये। एक में वैन पर पीएम के साथ छपी रामभरोसे की तस्वीर का क्लोज अप नज़र आ रहा था और दूसरे में वैन के आधे हिस्से के साथ `बोधि वृक्ष'। पुलिस की मध्यस्थता के बाद दोनो रिपोर्टरों में सहमति बनी कि वे हर आधे घंटे पर एक-दूसरे से फ्रेम एक्सचेंज कर लेंगे। फूटे सिर वाले दोनो रिपोर्टर मुस्तैदी से लगातार लाइव चैट कर रहे थे, जो इस बात का सबूत था कि सिर्फ सैनिक ही देश के लिए जान पर नहीं खेल रहे हैं।

जिस चैनल के पास रामभरोसे की प्रधानमंत्री से मुलाकात का एक्सक्लूसिव फुटेज था, उसने धड़ल्ले से चलाया। जिनके पास फुटेज नहीं था, वे क्या करते? उन्होने रामभरोसे जी की पूरी जीवनी चला दी। बस इसी बात से भ्रम पैदा हो गया कि रामभरोसे जी राम प्यारे हो गये हैं। व्हाट्सएप्प पर उनकी मौत की ख़बर ब्रेक होने के बाद नोएडा और बनारस में तनाव फैल गया। गाज़ियाबाद में एक पकौड़ेवाले ने कैरोसिन छिड़कर खुद को आग लगाने की कोशिश की लेकिन आसपास खड़े लोगो

ने उसे बचा लिया। नोएडा और गाजियाबाद में हालात बेकाबू हो सकते थे लेकिन प्रशासन की मुस्तैदी की वजह से सब ठीक है। सूचना प्रसारण मंत्रालय ने टीवी चैनलों को कवरेज में संयम बरतने की सलाह दी है।

प्रधानमंत्री के लिए आज बहुत व्यस्त दिन है। सुबह फ्रांस के राष्ट्रपति की अगवानी और कई समझौतो पर हस्ताक्षर। उसके बाद खादी भंडार के कैलेंडर का फोटो शूट। दोपहर को राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की बैठक। शाम को कैबिनेट कमेटी ऑन डिस्इनवेस्टमेंट की मीटिंग और रात को सहस्र चंद्रदर्शन का कार्यक्रम। इन सबके बीच में कहीं थोड़ा सा वक्त निकालकर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष से भी मिलना है। आखिरकार वह वक्त शाम को 4.30 बजे आया।

चुनावी मौसम में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सीधे मुद्धे की बात करने आये थे। प्रधानमंत्री दिन भर के कामकाज से बहुत थके थे। वे थोड़ा सा मूड चेंज़ करना चाहते थे, उन्होने पूछा — ये क्या सुन रहा हूं मैं आप रामभरोसे जी को मरवाने की साजिश कर रहे हैं।

अध्यक्ष जी हंसे— नहीं साजिश तो मैं उत्तर कोरियाई तानाशाह किंग जोंग को मरवाने की कर रहा हूं। मरे तो दुनिया का भला हो। प्रधानमंत्री गंभीर किस्म की मुस्कुराहट के साथ बोले— विरोधी पार्टी वाले अफवाह उड़ा रहे हैं कि आप रामभरोसे से जलने लगे हैं क्योंकि मैने उन्हे पकौड़ा क्रांति और उससे मिले राजनीतिक लाभ का क्रेडिट देना शुरू कर दिया है। बड़े ही दुष्ट हैं हमारे विरोधी। इसलिए तो मैं उनसे मुक्त भारत चाहता हूं।

आप कहें तो मैं विपक्षी पार्टी को अध्यक्ष से मुक्त करवा दूं?

राम-राम कैसी बात कर रहे हैं, आप तो अहिंसक आदमी हैं। पानी भी छानकर पीने वाले।

अरे हां मैं तो भूल ही गया था... दोनो ठठाकर हंसे।

तनाव घटाने के लिए हास-परिहास आवश्यक है। आजकल के युवाओं को देखता हूं तो लगता है कि कहीं आर्ट अटैक ना पड़ जाये, खासकर प्रवक्ताओं को। उनसे थोड़ा योगा-वोगा करवाइये— प्रधानमंत्री ने सलाह दी।

अध्यक्ष जी मुद्धे पर आये— जब से चुनाव की तारीख का एलान हुआ है, तरह-तरह की ड्रामेबाजी शुरू हो गई है। कभी किसानों के धरने, कभी अभिव्यक्ति की

आज़ादी का जुलूस कभी समलैंगिको का प्रदर्शन तो कभी न्यायपालिका की निष्पक्षता की मांग। ये देश है या नौटंकी कंपनी?

क्या कुछ नया हो गया है जंतर-मंतर पर?

जंतर-मंतर पर तो कम है, सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा है। कई महिला संगठन आपके खिलाफ कैंपेन चला रहे हैं।

क्यों भाई मैने ऐसा क्या कर दिया अब?

अरे मत पूछिये उन्हे तो बहाना चाहिए। कभी कहते हैं आपने वुमेन रिजर्वेशन बिल रोककर रखा है, कभी कहते हैं, आपने पार्लियामेंट में किसी नारी का अपमान कर दिया। ताजा कैंपेन एंटी वुमेन पीएम हैशटैग से चल रहा है। आरोप इतना हास्यास्पद है कि सुनेंगे तो आपको भी हंसी आ जाएगी। कहते हैं— पीएम हमेशा पकौड़ा बोलते हैं, पकौड़ी एक बार भी नहीं बोला। इतने बड़े रिवॉल्यूशन में आधी आाबादी की हिस्सेदारी कहां है?

अरे भइया अपने आईटी सेल वालो को बोलो काउंटर करेंगे। अब मैं कहां दिमाग लगाउं इन छोटी-छोटी चीज़ों में।

सरजी बात समझिये। इलेक्शन का माहौल है, कब छोटी सी चीज़ बड़ी बन जाये यह कोई नहीं जानता है। एक तो फेमिनिज्म का फैशन है और उपर से अक्षय कुमार की वो फिल्म। देश के आधे मर्द इस तरह पगलाये हैं कि जींस के उपर सैनेटरी पैड बांधकर घूम रहे हैं, सॉलिडेरिटी दिखाने के लिए। मैने जो कहा जरा सोचियेया उसपर। अभी चलता हूं।

.. और घंटे भर बाद पीएम का एक ट्वीट वायरल हो गया— मैने बचपन से पकौड़ी ही खाई है। बहुत कुरकुरी होती है। जहां मेरा बचपन बीता, वहां पकौड़ी देवी नामक एक दयालु महिला रहती थीं। आज भी जिंदा हैं, एकदम मेरी मां जैसी बल्कि वो सचमुच मेरी मां ही हैं।

तमाम न्यूज़ चैनलो के संपादकों ने अपनी एडिटोरियल टीम को मेल जारी कर दिया — आगे से हर स्टोरी में पकौड़ा के बदले पकौड़ी शब्द का इस्तेमाल होगा। ब्यूरो चीफ को निर्देश जारी किया गया— पकौड़ी देवी जहां कहीं भी हो उन्हे ढूंढा जाये, एक्सक्लूसिव इंटरव्यू चाहिए, सबसे पहले!

मंदिर वहीं बनाएंगे

सुबह-सुबह राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की नींद एक फोन कॉल से टूटी। दूसरी तरफ इलेक्शन वॉर रूम का हेड था। अध्यक्ष जी आधी नींद में थे और वॉर रूम वाला इतना उत्साहित था कि अपने आधे शब्द चबा रहा था। तीसरी बार कोशिश में वह अपनी बात समझा पाया

सर मुबारक हो विपक्ष फंस गया हमारे एजेंडे में।

क्या हो गया भइया?

अरे सर दिल्ली के सड़कों पर रैली निकाली है मुख्य विपक्षी पार्टी ने। नारे लग रहे हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे।

क्या मजाक रहे हो सुबह-सुबह। तबियत तो ठीक है ना?

सर सच्ची बोल रहा हूं मम्मी कसम। मैने अपने कानो से सुना है। हज़ारो लोग हैं सड़क पर। झंडे अपनी पार्टी के थाम रखे हैं लेकिन नारा हमारा वाला लगा रहे हैं- हम आनेवाले हैं, मंदिर वहीं बनाने वाले हैं।

अध्यक्ष जी बिस्तर से गिरते-गिरते बचे। सिर्फ इतना कहा— मुझे पूरी रिपोर्ट चाहिए और फोन काट दिया।

चक्कर क्या है? पकौड़ा क्रांति के बाद तो ये आइडिया ड्रॉप हो गया था। पीएम जी का कहना था कि मंदिर-मस्जिद के चक्कर में पड़ने की ज़रूरत नहीं है। हम चुनाव आराम से जीत जाएंगे। फिर ये नारे क्यों लग रहे हैं और विरोधी दल वाले क्यों लगाएंगे? उन्होने वॉर रूम वाले को व्हाट्स एप किया— याद रखना खबर गलत निकली तो वार रूम से छुट्टी करके केरल का प्रभारी बना दूंगा।

अध्यक्ष जी ने आनन-फानन दर्जन भर फोन लगाये। प्रदर्शनकारियों के संसद भवन की तरफ बढ़ने की पुष्टि हुई लेकिन कुछ और पता नहीं चल पाया।

अध्यक्ष जी ने तुरंत टीवी ऑन किया। ख़बर देखी तो होश उड़ गये— एक चैनल पर मोटा-मोटा कैप्शन चल रहा था— सबसे बड़ा चुनावी मास्टर स्ट्रोक।

दूसरे चैनल पर एंकर चीख रहा था और उसके पीछे लिखा था— अपने ही फंदे में फंसी रूलिंग पार्टी।

टीवी पर मुख्य विपक्षी पार्टी के सारे बड़े नेता नज़र आ रहे थे। सबके हाथ में मंदिर वहीं बनाएंगे का बैनर था और सबके सब जोश में थे। अध्यक्ष जी ने जल्दी-जल्दी पोस्ट ट्रूथ के जमाने का बाबाजी वाला `टूथ्थ पेस्ट' किया और बिना नहाये केवल कपड़े बदलकर सीधे गाड़ी में जा बैठे।

प्रधानमंत्री को भी इस ख़बर का पता चल गया था। ज़ाहिर है, आपात बैठक तो होनी ही थी। घर से पीएम निवास तक पूरे रास्ते अध्यक्ष जी फोन पर पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से बातें करते रहे। चेहरे पर कई रंग आते-जाते रहे। फिर उन्होने पांच मिनट के लिए मोबाइल बंद कर दिया और गहरी सोच में डूब गये। उन्हे ख़बर यह मिली कि विरोधी पार्टी वालों ने चित्रकूट में रहने वाले किसी बाबा विलक्षणानंद को ढूंढ निकाला है। उन बाबा की उम्र 94 साल है। वे परम सिद्ध हठयोगी सचिदानंद श्री पकौड़ेश्वरनाथ जी महाराज के एकमात्र जीवित शिष्य हैं। कहा जाता है कि बाबा पकौड़ेश्वरनाथ सत्रहवी सदी में पैदा हुए थे और जगत कल्याण करने के लिए 206 साल तक इस धरा पर रहे। वे चित्रकूट के घने जंगलों में कहीं ब्रह्मलीन हुए थे। बाबा पकौड़ेरश्वरनाथ दोपहर का भोजन नहीं करते थे। वे सुबह और शाम पकौड़े के जलपान पर ही दो सदी तक जीवित रहे।उनके लिए पकौड़े बनाने का काम विलक्षणानंद करते थे। देहत्याग से पहले बाबा पकौड़ेरेश्वनाथ ने अपने शिष्य को बताया था कि वे फिर से इस धरती पर आएंगे और पकौड़े-पकौड़ियों के माध्यम से भारत की दरिद्रता दूर करेंगे।

सर आप तो विवादास्पद ढांचा बन गये

प्रधानमंत्री बिना पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के कोई बात नहीं सुनते। पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन इलेक्शन कंट्रोल रूम का इंचार्ज दे रहा है। न्यूज़ उसी ने ब्रेक की है, इसलिए उसका हक बनता है। अध्यक्ष जी ने सुबह-सुबह उसे हड़का दिया था, इसलिए उनकी भी हमदर्दी है। कभी-कभी ज्यादा जोश में आ जाता है, लेकिन लड़का मेहनती है। मेहनती लड़के ने बिना किसी भय या अनुराग के अपने ऑब्जर्बेशन बताये कि किस तरह मुख्य विपक्षी दल हमारा आइडिया चुराकर हमें मात देना चाहता है।

पीपीटी स्लाइड नंबर वन— इस देश में जो क्रांति प्रधानमंत्री के आशीर्वाद से आई है, उसका क्रेडिट विपक्ष किन्ही बाबा पकौड़ेश्वरनाथ को देना चाहता है।

पीपीटी स्लाइड नंबर टू— विपक्ष क्रेडिट बाबा पकौड़ेश्वरनाथ को ही नहीं देना चाहता बल्कि बाबा को भी हथिया लेना चाहता है। इस देश में धर्म-कर्म की संरक्षक केवल प्रधानमंत्री की पार्टी है। अब विपक्ष ने इस दावे में खतरनाक तरीके से सेंध लगा दी है।

पीपीटी स्लाइड नंबर थ्री— सबसे खतरनाक बात। अगर विपक्ष के दावे के हिसाब से बाबा पकौड़ेश्वरनाथ ने पकौड़ा क्रांति के ज़रिये भारत का उद्धार करने के लिए पुनर्जन्म लिया है तो फिर इसका मतलब यह हुआ कि उनका अवतार कोई और नही बल्कि रामभरोसे है। रामभरोसे को अवतार मान लेने से पकौड़ा क्रांति का क्रेडिट ही हाथ से नहीं जाएगा बल्कि एक दिन प्रधानमंत्री की कुर्सी भी जाएगी, इसमें किसी को ज़रा भी संदेह नहीं होना चाहिए।

मेहनती लड़के ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटशन बंद करके एक लंबी सांस ली। कमरे में थोड़ी देर के लिए चुप्पी पसर गई। यह चुप्पी प्रधानमंत्री के वाक्य से टूटी— वे मंदिर की मांग कर रहे हैं, बहुत अच्छी बात है। मंदिर सरकार बनवा देगी।

धर्म-कर्म के प्रति हमारी निष्ठा असंदिग्ध है। हमारा क्रेडिट कहीं नहीं जाएगा, उनके कैंपेन की हवा निकल जाएगी। बनने दो मंदिर क्या परेशानी है?

आईबी चीफ पहली बार बोले— अरे सर बहुत शातिर गेम है उनका। आपको याद होगा पिछले साल कुछ भक्तों ने बुलंदशहर में आपके नाम से एक मंदिर का

शिलान्यास किया था। विपक्षी पार्टी कह रही है कि वह जगह भगवान पकौड़ेश्वरनाथ की जन्मभूमि है और हमें हर हाल में उसे मुक्त करवाकर वहां एक भव्य मंदिर बनवाना है। बुलंदशहर में उनके कार्यकर्ता प्रर्दशन कर रहे थे। पुलिस ने उन्हे अंदर कर दिया तो विपक्षी दिल्ली में पॉलिटिकल ड्रामेबाजी पर उतर आये। राजनीतिक सुझाव देना मेरा काम नहीं है। लेकिन उनकी मांग मानना तो आपके लिए नामुमकिन है। क्या आप अपने ही नाम पर बन रहे मंदिर को तुड़वाकर पकौड़ेश्वरनाथ का मंदिर बनवाएंगे? क्या सोचेंगे वोटर आपके बारे में?

मेहनती लड़का यह प्वाइंट अपने प्रेजेंटेशन में डालना भूल गया था। वह तुरंत बोला — मतलब वे बाबा पकौड़ेश्वरनाथ का नाम लेकर आपको हरवाएंगे और अगर आप किसी तरह बच गये तो फिर बाबा के अवतार रामभरोसे से आपका काम लगवाएंगे। सर आप तो फंस गये बुरी तरह।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने खा जानेवाली नज़रो से चेले को देखा। मेहनती लड़के ने आंखें नीची कर लीं।

प्रधानमंत्री बहुत देर तक सोचते रहे। फिर बोले— पकौड़ा क्रांति आने के बाद छह महीने से कम समय में हमने देश की ग्रोथ रेट दोगुनी कर दी। पांच लाख से ज्यादा नये जॉब क्रियेट हुए हैं। शेयर मार्केट बुलंदी पर है। अर्थव्यस्था की गाड़ी इस रफ्तार से भाग रही है कि कोई उसे पकड़ नहीं सकता है.. और क्या चाहिए। जनता विकास पर यकीन करेगी या बाबा पकौड़ेश्वरनाथ की कहानी पर?

बाबा पकौड़ेश्वरनाथ की कहानी पर। आजमाया हुआ नुस्खा है। इसमें ज़रा भी संदेह मत रखियेगा। वे कह रहे हैं कि आपके मंदिर का जो शिलान्यास हुआ है वो सिर्फ एक विवादास्पद ढांचा है। अगर सरकार ने नहीं हटाया तो उनके कारसेवक तोड़ देंगे— पार्टी अध्यक्ष ने सपाट आवाज़ में कहा।

मेहनती लड़का फिर बोल पड़ा— सर आप तो विवादास्पद ढांचा बन गये।

गनीमत है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने उसकी बात नहीं सुनी। लेकिन प्रधानमंत्री के जेहन में एक डरावनी तस्वीर कौंध गई— वे एक विशालकाय कंकाल बनकर खड़े हैं और हज़ारो लोग सरिया और हथौड़े लेकर उनके चारो तरफ जमा हो रहे हैं, नारे लगा रहे हैं— एक धक्का और दो विवादास्पद ढांचा तोड़ दो।

गला सूखने लगा। पीएम ने खुद को संभाला और घड़ी पर नज़र डाली। फ्रांसीसी राष्ट्रपति का विदाई भोज शुरू होने में सिर्फ दस मिनट बाकी हैं। वे एक झटके में

उठे और यह कहते हुए बाहर निकले— प्रॉब्लेम मत बताइये सॉल्यूशन ढूंढिये। मैं दो घंटे में वापस आता हूं। हमें फैसला करना होगा आज ही।

विदाई भोज में प्रधानमंत्री का मन बिल्कुल नहीं लगा। मंदिर के नाम पर उनके प्यारे देश को बांटने की साजिश चल रही थी। विपक्ष की हरकतें तैयार चाय की केतली में चुपके से चीनी के बदले नमक डालने जैसी नापाक थीं। पीएम का मन भला अशांत क्यों ना हो? वैसे शिष्टाचारवश वे फ्रांसीसी राष्ट्रपति से गले मिले। फ्रांसीसी राष्ट्रपति जानते थे कि इंडियन हग फ्रेंच किस से भी ज्यादा पैशोनेट होता है। भारतीय प्रधानमंत्री की आगोश में अब तक दुनिया का जो भी राष्ट्राध्यक्ष आया, वह हमेशा के लिए उन्ही का होकर रह गया था। लेकिन आज जादू की झप्पी में वो बात नहीं थी। लौटते वक्त फ्रांस की फर्स्ट लेडी ने शेकहैंड के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन प्रधानमंत्री जल्दबाजी में हाथ मिलाना भूल गये। ऐसा प्रधानमंत्री के साथ अक्सर होता था कि कोई सुंदर सी महिला राष्ट्राध्यक्ष या फर्स्ट लेडी हाथ बढ़ाती थीं और वे भारतीय परंपरा के मुताबिक हाथ जोड़ देते थे। लेकिन इस बार उन्हे यह करना भी याद नहीं रहा।

पीएम वापस लौट आये। आवास पर मैराथन मीटिंग जारी थी। प्रधानमंत्री ने यह देखकर राहत की सांस ली कि उनके चहेते राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार भी मीटिंग में आ चुके हैं।वे पीएम का ही एक असाइनमेंट पूरा करने में व्यस्त थे।राष्ट्रीय महत्व का यह असाइनमेंट इतना गोपनीय था कि किसी मंत्री को भी इसके बारे बताया नहीं जा सकता था। मीटिंग दोबारा शुरू हुई तो गृहमंत्री ने सीधा पीएम से सवाल दागा— मंदिर का असली आंदोलन तो हमारा था। हम इस देश के सबसे बड़े अराध्य का मंदिर बनाना चाहते थे। अगर हम उस आंदोलन को फिर से वापस ले आयें तो बाबा पकौड़ेरेश्वरनाथ वाला मामला अपने आप दम तोड़ देगा। आपके यशस्वी नेतृत्व में हम आर्थिक विकास के कीर्तिमान निरंतर स्थापित कर ही रहे हैं। प्रभु और पकौड़े का कांबिनेशन हमें बहुत आसानी से जितवा देगा। जवाब देने के बदले प्रधानमंत्री राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की तरफ देखने लगे। अपने हैरत-अंगेज कारनामों के लिए दुनिया भर में मशहूर हैं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार। चाहे मोसाद के साथ ज्वाइंट ऑपरेशन करके मोसुल में कैद भारतीय नर्सों को छुड़वाना हो या फिर किसी आंदोलनकारी की असली जाति पता करवानी हो, हर मुश्किल काम चुटकियों में करवा देते हैं, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार।

उनके बारे में यह भी कहा जाता है कि जवानी के दिनो में एक बार वे वेश बदलकर कराची के क्लिफटन में सीधे दाऊद इब्राहिम के घर पहुंच गये थे। दाऊद को बेहोश करके उन्होने बोरी में भरा और `कबाड़ी वाला, रद्धी कागज शीशी बोतल' की आवाज़ लगाते हुए चुपचाप वहां से निकल आये। पाकिस्तानी एजेंसियों को चमका देते हुए वे समुद्र तक पहुंचे जहां एक छोटी सी डोंगी का इंतज़ाम उन्होने पहले से कर रखा था। उस नाव पर दाऊद को लिये वे कई दिनों तक सफर करते रहे। भारतीय जल सीमा के करीब पहुंचे तो उन्हे एहसास हुआ कि पाकिस्तानी कोस्ट गार्ड उनका पीछा कर रहे हैं। उन्होने कूटभाषा में रक्षा मंत्री और तमाम अधिकारियों को संदेश भेजा लेकिन किसी को उनका संदेश समझ में नहीं आया। थक-हारकर उन्होने अपने स्पेशल वायरलेस सेट से देश के प्रधानमंत्री को मैसेज किया। लेकिन प्रधानमंत्री हमेशा की तरह सो रहे थे। नतीजा यह हुआ कि मदद के लिए कोई नहीं आया। पाकिस्तानी तटरक्षको ने उनकी नौका को घेर लिया तो मजबूरन डबराल साहब को समुद्र में छलांग लगानी पड़ी। लगभग 11 घंटे तक अंडर वाटर स्विम करते, खतरनाक शार्क और पाकिस्तानी सबमरीन से बचते हुए वे गुजरात में भारतीय तट पर आये और आते ही बेहोश हो गये। क्या उस समय भी मौजूदा प्रधानमंत्री होते तब भी ऐसा ही होता? दाऊद सलाखो के पीछे ही नहीं होता बल्कि फांसी के फंदे पर चढ़ चुका होता।

यादों में खोये डबराल साहब को आईबी प्रमुख ने चिकोटी काटी तो वर्तमान में वापस लौटे, गला साफ किया और गृहमंत्री के उस सवाल का जवाब दिया कि इस समय पुराना वाला मंदिर आंदोलन क्यों शुरू नहीं किया जा सकता है। उनके लैपटॉप में जो आंकड़े थे, वे यह बता रहे थे कि इस देश में भगवान भोलेनाथ, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और साईं बाबा के बाद कोई देवता अगर सबसे ज्यादा लोकप्रिय है तो वे बाबा पकौड़ेश्वरनाथ हैं। देश की भोली जनता पहले भी यही मानती थी कि पकौड़ा क्रांति किसी दैवी चमत्कार का नतीजा है। जब से बाबा पकौड़ेश्वरनाथ का नाम आया है, जनता यह मानने लगी है कि यह चमत्कार उन्ही के आशीर्वाद से हुआ है। बाबा पकौड़ेश्वरनाथ का लोकप्रिय देवताओं की लिस्ट में चौथे नंबर पर होना जितनी बड़ी बात नहीं है, उससे कहीं ज्यादा बड़ी बात है उनकी लोकप्रियता में होनेवाली बेतहाशा वृद्धि की दर। सर्वे बता रहे हैं कि बाबा की पॉपुलैरिटी रोजाना 226 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है। इसलिए किसी और देवता के मंदिर के लिए अगर अभी आंदोलन खड़ा करने की कोशिश की गई तो वह कामयाब नहीं होगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार का यह इनपुट प्रधानमंत्री के लिविंग रूम में डिप्रेशन का नया झोंका लेकर आया था। पॉजेटिव एनर्जी वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष खुद को रीचार्ज करने के लिए मन ही मन अपनी प्रिय कविता— `हार नहीं मानूंगा, मार के ही मानूंगा' गुनगुना रहे थे। वहीं नक़वी जी— जल तो जलाल तू, आई बला को टाल तू' जप रहे थे। टेंशन अभी और बढ़ने वाला था। आईबी प्रमुख ने कनफर्म खबर बताई — लीडर अपोजीशन ने रामभरोसे को यह भरोसा दिया है कि अगर उनकी सरकार बनी तो उप-प्रधानमंत्री का पोस्ट ऑफर किया जाएगा। रामभरोसे ने क्या जवाब दिया है, अभी यह पता नहीं है। प्रधानमंत्री ने अपने प्रिंसिपल सेक्रेटरी से कहा— मुझे रामभरोसे से मिलना है, आज ही!

असली पकौड़ेश्वरनाथ तो पीएम जी हैं

प्रधानमंत्री अगर रामभरोसे को अपने घर पर बुलवाते तो पूरे देश की मीडिया को खबर हो जाती। अगर प्रधानमंत्री खुद रामभरोसे के घर जाते तो ट्रैफिक रूक जाता और खबर और ज्यादा बड़ी हो जाती। उन्होने रामभरोसे को मैसेज भिजवाया कि मैं आपसे ग्रेटर नोएडा में मिलूंगा। ग्रेटर नोएडा में रामभरोसे का एक छोटा फॉर्म हाउस था, करीब का ग्यारह एकड़ का। रामभरोसे जब काशी विश्नाथ में लटकते हुए नेशनल कैपिटल रीजन में दाखिल हुए तो यही जगह उनके लिए रैन बसेरा बना थी, यहां काम करने वाले उनके गांव के एक चौकीदार की कृपा से। बाद में रामभरोसे जी ने उस जगह को खरीद लिया। फॉर्म हाउस बाहर से देखने में भुतहा मकान लगता है लेकिन भीतर सभी आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। रास्ता बियावान है। एसपीजी के कमांडो वेश बदलकर दिल्ली से ग्रेटर नोएडा तक के चप्पे-चप्पे पर तैनान हैं। प्रधानमंत्री जी चुपचाप देर रात किसी भी वक्त यहां पहुंचेंगे।

वो दिखने में एक सामान्य-सी लेकिन बुलेट प्रूफ एसयूवी है, लैंड माइन से भी बेअसर। ज़रूरत पड़ने पर एक `सी-प्लेन' बनकर हवा में उड़ती हुई पानी में उतर सकती है। इज़रायली पीएम ने इसे प्रधानमंत्री को उनके जन्मदिन पर विशेष तौर पर गिफ्ट किया था। उसी एसयूवी में बैठकर पीएम राम का नाम लेते हुए रामभरोसे से मिलने जा रहे हैं। रास्ते में वे लगातार सोच रहे हैं— आखिर कौन है यह रामभरोसे? स्मृतियां कोई साल भर पीछे चली गईं, जब उन्होने एक टीवी इंटरव्यू में पकौड़े बेचने को रोजगार बताया था। उसके बाद रामभरोसे सामने आया और देखते-देखते इस देश का कायाकल्प हो गया। पीएम सोचने लगे आखिर मैने यह क्यों कहा कि पकौड़ा बेचना भी रोजगार है? मैं आईसक्रीम कह सकता था। भेल पूरी कह सकता था। मैं यह भी कह सकता था कि मेरी पार्टी सोशल मीडिया सेल में काम करना अच्छा रोजगार है।

फोर जी का सिम बेचने जैसा बड़ा रोजगार मेरे दिमाग में नहीं आया लेकिन पकौड़ा आया, आखिर क्यों? नहीं मैं स्वयं नहीं बोला, ज़रूर किसी दैवी शक्ति ने मुझसे बुलवाया है। मेरे पकौड़ा मात्र कह देने से अगर देश का भविष्य बदल सकता है, तो यह ज़रूर कोई ईश्वरीय चमत्कार है। लोग मुझे श्रेय दे रहे हैं, लेकिन मैं तो निमित्त मात्र हूं। मैं टीवी चैनल के दफ्तर से निकलकर सीधे उसी पकौड़े वाले के ठेले तक

क्यों गया? रास्ते में 25 पकौड़े वाले मिल सकते थे। क्या यह सिर्फ एक संयोग है? नहीं एक साथ इतने संयोग नहीं हो सकते हैं। मेरी तरह रामभरोसे भी विधाता की योजना में एक निमित्त है। प्रधानमंत्री ने खुद को कोसा कि उन्होने बाबा पकौड़ेश्वरनाथ को प्रोपेगैंडा क्यों माना? प्रौपेगैंडा तो विपक्ष कर रहा है। बाबा तो सचमुच इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर आये थे और यह रामभरोसे हो ना हो उन्ही का अवतार है।

रामभरोसे के फॉर्म हाउस के बाद बाहर बहुत से गरीब लोग नज़र आ रहे थे। चादर-ओढ़े यहां-वहां बैठे थे। ये सबके सब स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप के सदस्य थे। उबड़-खाबड़ रास्तो से गुजरती प्रधानमंत्री की एसयूवी फॉर्म हाउस के गेट पर जा रुकी। पीएम और उनके प्रिंसिपल सेक्रेटरी दोनो नीचे उतरे। फॉर्म हाउस में रामभरोसे के शुरुआती संघर्ष के दिनों की सारी यादें संजोई गई हैं। उनकी फटी हुई नीली सफेद चेक वाली लुंगी, उनका ठेला और कड़ाही जिसमें वे एकदम शुरुआती दिनों में पकौड़े तला करते थे। लिविंग रूम की दीवार से एक बड़ी सी कड़ाही लटक रही थी। साथ में झांझर और कलछी जैसे दूसरे उपकरण भी थे। पीएम ने अंदर कदम रखने से पहले चौखट को प्रणाम किया। सेक्रेटरी भौंहे सिकोड़कर देख रहा था। रास्ते में भी पीएम ने उससे एक शब्द भी बात नहीं की। लिविंग रूम में पहुंचे तो नौकर ने कहा- साहब अभी पूजा कर रहे हैं। पीएम ने प्रिंसिपल सेक्रेटरी को वही सोफे पर बैठने का इशारा किया और चप्पल उतारकर बिना कुछ कहे नौकर के साथ अंदर चले गये।

उपासना स्थल एक छोटा सा कमरा था। अंदर रामभरोसे कुछ अजीब आवाज़ में प्रार्थना कर रहे थे। पीएम बाहर खड़े थे। उन्हे कुछ ऐसी अनुभूत हो रही थी, जैसे वे स्वयं स्वामी विवेकानंद हों और अंदर वाले कमरे में रामकृष्ण परमहंस का मां काली से वार्तालाप चल रहा हो। नौकर ने कहा— अंदर चले जाइये। प्रधानमंत्री जी ने कहा — नहीं ठीक है, मैं यही इंतज़ार करूंगा। जब नौकर वहां से चला गया तो प्रधानमंत्री जी `की होल' से कमरे के अंदर झांकने लगे। लेकिन इस ताक-झांक में सांसारिकता लेशमात्र की नहीं थी, केवल आध्यात्म था। संपूर्ण मानवता का कल्याण करने वाला आध्यात्म। पीएम जी को एक कोने में शिवलिंग के साथ रखी शिव महापरिवार की तस्वीर नज़र आई। पीएम को ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए उन्होने अपना चश्मा उतारा ताकि की होल पर आंख टिकाने में आसानी हो। भीतर का दृश्य देखकर पीएम चमत्कृत रह गये। एक ठेलानुमा आकृति के उपर गुंबद जैसा शेप था, जो उसे मंदिर का स्वरूप प्रदान करता था। मंदिर के भीतर थी एक छोटी सी मूर्ति। एक नौजवान लक-दक करती वेशभूषा वाले एक देवपुरुष के चरणों में गिरा है।

पीएम को वह दृश्य याद आया, जब वे नोएडा फिल्म सिटी में रामभरोसे के ठेले पर गये थे। क्या यह उसी दृश्य को साकार करती प्रतिमा है? भरोसा नहीं होता! ठीक से तस्दीक करने के लिए प्रधानमंत्री ने दरवाज़े को हाथ से पकड़कर `की होल' पर चेहरा थोड़ा ज़ोर से टिकाया तो दरवाज़ा एक झटके में खुल गया और प्रधानमंत्री सीधे अंदर पहुंच गये। वे गिरे तो थे औंधे मुंह लेकिन एक झटके में खड़े भी हो गये।

प्रार्थना छोड़कर रामभरोसे मुड़ा। एक बार फिर वही दिव्य चमत्कार! प्रभु को यह कैसे पता कि भक्त ने उन्हे याद किया है। वह सीधे पीएम जी की चरणों की तरफ लपका लेकिन यह क्या पीएम जी भी उसकी चरणों की तरफ उसी रफ्तार से लपके और नतीजे में दोनो तरफ से दो-दो पंजे एक-दूसरे से टकराये और कुछ सेकेंड के लिए गुत्थम-गुत्था हो गये। पीएम का हाथ पकड़कर रामभरोसे ने उसे अपने माथे से लगाया और सिसकियां भरकर रोने लगा। पीएम जी ने भी सम्मान में अपना शीश झुका लिया। उनकी आंखें भी सजल थी। वातावरण पूरी तरह निशब्द था लेकिन बहुत सारे अनकहे गहरे अर्थ तैर रहे थे। मानव जाति के इतिहास में ऐसे दृश्य पहले भी हुए होंगे, जब महान आत्माएं एक-दूसरे से मिलती होंगी। रामभरोसे रो रहा था। पीएम उसे चुप नहीं करा रहे थे क्योंकि वह धारा उन्हे अविरल गंगा की तरह निर्मल लग रही थी।गंगा में भी ऐसा बहाव कहां जो रामभरोसे की आंखों में है, धन्य हो!

पहली बार मैने आपको पुकारा था तो आप सीधे पकौड़े के ठेले पर दौड़े चले आये थे।

हां... याद है, मुझे आपका वह पकौड़ी का ठेला— पीएम ने भर्राये स्वर में कहा

... और आज आप फिर आ गये। सिक्यूरिटी वालो ने आज रात 3 बजे का टाइम दिया था। लेकिन आप ठीक उस समय आये जब मैं आपकी पूजा कर रहा था।

मेरी पूजा? मैंने तो समझा था कि आप जगदगुरू की पूजा कर रहे हैं।

इस बार रामभरोसे सीधे चरणो में जा गिरा और पीएम जी उसे रोक नहीं पाये— गुरू तो इस दुनिया में मेरे लिए एक्के ठो हैं। हमको कभी मत त्यागियेगा गुरूजी।

उठिये रामभरोसे जी... शर्मिंदा मत करें आप तो युग पुरूष हैं। पहले मैने ध्यान नहीं दिया लेकिन ठीक से विचार किया तो पाया कि इस भारत भूमि पर आप साक्षात भगवान पकौड़ेश्वरनाथ के दूसरे अवतार हैं।

पकौड़ेश्वरनाथ?? इ ससुरा नया कौन आ गया भो… रामभरोसे जी ने बड़ी मुश्किल से वाणी को नियंत्रित किया।

बहुत पहुंचे हुए सिद्ध महात्मा थे पकौड़ेश्वरनाथ जी। केवल पकौड़े मतलब पकौड़ी ही खाते थे। 206 वर्ष की अवस्था में ब्रह्मलीन हुए थे।मुझे तो लगता था कि आप उनके अवतार होंगे अन्यथा आज के जमाने में आप जैसा चमत्कारी पुरुष कहां मिलता है? मुझे आश्चर्य है, आपने कुछ सुना नहीं उनके बारे में— प्रधानमंत्री बोले

हमें कहां फुर्सत साहेब, आपके आशीर्वाद से पकौड़ा छान रहे हैं और पूरे भारत को खिला रहे हैं। आशीर्वाद बना रहेगा तो एक दिन पूरे विश्व को खिलाएंगे। आपकी दया दृष्टि से पहले तक इस देश के सभी पकौड़े वाले अनाथ थे। आपके अलावा कोई नहीं है `जगतगुरू' इस दुनिया में। हम पकौड़ेश्वर-फकौड़ेश्वरनाथ को नहीं मानते हैं। फिर भी अगर कोई पकौड़ेश्वरनाथ है तो साहेब वो केवल आप ही हैं।

रामभरोसे जी… आप मेरे साथ ज़रा एकांत में आइये।

यहां भी एकांते है, साहेब।

अरे नहीं मेरा मतलब है, जहां बैठने को कोई जगह हो।

...और इसके बाद रामभरोसे पीएम जी को अपने फॉर्म हाउस के एक ऐसे कोने में ले गये जहां आराम से बैठकर बात हो सके और देवता तक उनकी बात ना सुन सकें।

रामभरोसे बोले— मैं उपराष्ट्रपति बना तो पकौड़ा कौन छानेगा

नहीं साहेब ई हमसे ना हो पाएगा। इतनी इज्ज़त मत दीजिये कि आदमी शरम से मर जाये। आपकी कृपा से देश को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। हम पर उ जिम्मेदारी मत डालिये जिसके हम लायक नहीं हैं।

आप भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति बनने के लिए सर्वथा योग्य उम्मीदवार हैं, रामभरोसे जी। आपका देशप्रेम अद्वितीय है। राष्ट्र के प्रति आपका योगदान अलौकिक है और आपका व्यक्तित्व अनुकरणीय है। सबसे बड़ी बात यह है कि आप पूरी तरह एक गैर-राजनीतिक व्यक्ति हैं। देश को आपसे अच्छा उपराष्ट्रपति भला कहां मिलेगा? मेरी प्रार्थना को अस्वीकार मत कीजिये।

अगर हम उपराष्ट्रपति बन गये तो आपके मेकिंग ओनली इन इंडिया का क्या होगा? पकौड़ा कौन छानेगा? हर-हर पकौड़े, घर-घर पकौड़े योजना कैसे सफल होगी? जिंदगी में अभी बहुत काम करना मालिक। हम जो कर रहे हैं, हमें वही करने दीजिये।

आपकी पहली चिंता— आप पकौड़े मेरा मतलब है, पकौड़ी कैसे तलेंगे? मेरा ख्याल है, अब आपके तलने का काम प्रतीकात्मक है। ढाई सौ ग्राम से ज्यादा नहीं तलते होंगे आप दिनभर में। भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति के पास पकौड़ी तलने के लिए बहुत अवकाश होता है। वह चाहे तो दिन भर में 20-30 किलो तल सकता है। राष्ट्रपति के पास तो और ज्यादा अवकाश होता है। भगवान की कृपा से हमारी हमारी सरकार रही तो एक दिन आप राष्ट्रपति भी बनेंगे।

दूसरी चिंता— आपकी दूसरी चिंता यह कि मेकिंग ओनली इन इंडिया का क्या होगा? आपके पास एक बहुत होनहार सीईओ हैं श्री त्रिलोकी नाथ। वे सबकुछ संभाल लेंगे। आपकी कंपनी तो बड़ी है। अनेक छोटे-छोटे उद्यमी भी अर्थव्यस्था के इस पकौड़ा यज्ञ में आहुति दे रहे हैं। हर-हर पकौड़े, घर-घर पकौड़े योजना अवश्य सफल होगी। हमारी अर्थव्यस्था की गाड़ी इस रफ्तार से आगे भागेगी की कोई उसे

पकड़ नहीं पाएगा। अब आपके लिए नई भूमिका निभाने का समय आ गया है। विजन थोड़ा बड़ा कीजिये रामभरोसे जी।

बड़ा विजन शब्द सुनते ही रामभरोसे ढीले पड़ने लगे। पीएम जी ने ठेले पर विजन का वरदान दिया था जिसके सहारे आज वे यहां तक पहुंचे थे। अब पीएम विजन और बड़ा करने की बात कह रहे हैं। रामभरोसे ने विजन बड़ा करने के लिए अपनी आंखे खूब ज़ोर से फैला लीं और अगले पल उन्हे दिखाई देना बंद हो गया। घबराकर वे पहले वाली मुद्रा में लौटे और बोले— आप तो देश चलाते हैं, हम हैं अनपढ़, जाहिल हैं। ई बताइये ज्यादा तगड़ा पोस्ट कौन होता है उपराष्ट्रपति या फिर उप-प्रधानमंत्री।

रामभरोसे जी कैसी बात कर रहे हैं आप? उपराष्ट्रपति प्रोटोकॉल में बहुत उपर होते हैं। मुझसे भी उपर।

रामभरोसे ने जीभ बाहर करके अपने हाथों से अपने दोनो कान पकड़े— शिव-शिव! ना रे बाप। तो फिर हमको माफ कर दीजिये सरकार। आपके रहते हम आप से बड़े बनेंगे तो नरक में जाएंगे। अच्छा एक काम कीजिये हमको उप-प्रधानमंत्री बनवा दीजिये। हम कुछ नहीं बोलेंगे आपका आदेश मानकर चुपचाप ग्रहण कर लेंगे।

प्रधानमंत्री को एक पल के लिए लगा कि यह आदमी तो छंटे हुए नेताओं का भी बाप है, सीधे सौदेबाजी पर उतर आया। फिर उन्होने खुद को धिक्कारा। रामभरोसे जी तो गंगा की तरह निर्मल हैं। मुझे उन्होने राजनीतिक ताकत दी है। उनके बारे में ऐसा सोचना भी पाप है। वे थोड़ा रुककर बोले— बहुत घटिया काम है, उप-प्रधानमंत्री का। इसलिए तो मैने अपने कैबिनेट में किसी को नहीं बनाया। लेकिन अचानक आपके मन में उप-प्रधानमंत्री बनने की बात कहां से आई?

हम सुने है कि उप-प्रधानमंत्री को बहुत तगड़ी सिक्यूरिटी मिलती है। डाकू और आतंकवादी क्या अगर आपकी पार्टी के अध्यक्ष जी चाहें तब भी नहीं मरवा सकते हैं, उप प्रधानमंत्री को जान से।

किस कुत्ते के बच्चे ने कहा कि अध्यक्ष जी आपको मरवाना चाहते हैं— अपने 48 साल के सार्वजनिक जीवन में पहली बार अमर्यादित शब्द का इस्तेमाल किया प्रधानमंत्री ने।

कल जो अपोजीशन का डेलीगशन मिलने आया था, उन्ही में से कोई एक आदमी कह रहा था। हम बोले कि पीएम जी का हमको आशीर्वाद है। कोई बाल-बांका नहीं कर सकता है। लेकिन डेलीगेशन वाला एक आदमी बोल रहा था कि अध्यक्ष जी का

कोई भरोसा नहीं है। हमारी पार्टी में आ जाइये तो जान भी बचेगी और पोस्ट भी मिलेगा। हम बोले कि पोस्ट की कोई ज़रूरत नही है हमको। परमात्मा और पीएम जी का दिया सबकुछ है मेरे पास। लेकिन जान की चिंता ज़रूर है। का है कि पूरी दुनिया दुनिया में मेरे अपने तो बहुत हैं, लेकिन परमेसरी का कोई नहीं है। बस मेरे नाम के सहारे बनारस में जिंदगी काट रही है। हम मर गये तो अनाथ हो जाएगी बेचारी।

पीएम जी बोले— देखिये ऑपोजीशन वाले बहुत दुष्ट हैं। उनकी बातों में मत आइयेगा। आपकी सुरक्षा को प्रधानमंत्री कार्यालय रात-दिन मॉनीटर कर रहा है। अध्यक्ष जी के बारे में भी तरह-तरह की भ्रांतियां फैलाई जा रही है। वे तो रोज सुबह चीटियों को आटा खिलाते हैं। पानी भी छानकर पीते हैं। हां ये सच बात है कि वे विरोधियों का शिकार करते हैं.. लेकिन केवल ईवीएम से।

….और ये कहते वक्त पीएम जी के दिमाग़ में वो नया गाना गूंज उठा जो यूपी-बिहार में पार्टी के कैंपेन के लिए बब्बन सिंह से तैयार करवाया गया है।

अपने विरोधी का करके बुर्रा हाल रे…

ईवीएम से गोली मारे...

नेता हमार रे... ईवीएम से गोली मारे... ढिचकैंउ

पीएम जी के मन में फड़कता हुआ संगीत चल रहा था, लेकिन चेहरे पर तपस्वियों वाली शांति थी। रामभरोसे बोला— आप एकदम ठीक कहते हैं परधान जी। ई जितना भी नेता होते है...सब ससुरे... भो...एकदम कुत्ते के बच्चे होते हैं। हम कभी नहीं आएंगे पॉलिटिक्स में। लाख टके की बात कही है, आपने। कुत्ते के बच्चे साले।

पीएम जी को रामभरोसे से बहुत प्यार आया। इतना भोला आदमी होता है, आजकल के ज़माने में कही? बेचारा जो कर रहा है, वह मेरी प्रेरणा से राष्ट्र निर्माण के लिए ही कर रहा है। विपक्ष के झांसे में नहीं आएगा यह आदमी। आशीर्वाद से ही खुश है तो फिर पोस्ट-वोस्ट का लालच देने की क्या ज़रूरत है। पीएम ने धीरे से कहा- रामभरोसे जी देश के दुश्मन आजकल अलग-अलग पार्टियों में सक्रिय हैं। किसी से भी मिलियेगा मत। बचकर रहियेगा। मीडिया वालों से तो बिल्कुल बात मत कीजियेगा। अच्छा मैं चलता हूं।

रामभरोसे एक बार फिर रो पड़े— कुछ भूल-चूक हो गई तो माफ कर दिया जाये साहेब। सुबह शाम आपकी ही पूजा करता हूं। आप हैं तभी यह देश है और विश्व है। कभी नहीं मिलेगे किसी नेता से आज के बाद। कान पकड़ते हैं।

पीएम जी बोले— रामभरोसे जी, आंसू नारी का श्रृंगार है। वीरो को शोभा नहीं देता। आप तो महावीर हैं। आपके एक अकेले के योगदान से इस देश में पकौड़ा क्रांति हो गई। इसलिए मैं यह मानता हूं कि आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। चलिये जाने से पहले एक बार फिर आपका उपासना स्थल देख लूं।

रामभरोसे पीएम जी को पूजा वाले कमरे में ले गया। पीएम ने ध्यान से देखा। ठेले के पहिये चांदी के थे और गुंबद सोने का। भीतर उनकी प्रतिमा अष्टधातु की थी, जो रामभरोसे के विजन को दर्शाती थी। अष्ट धातु के प्रतिमा बनवाकर रामरोसे ने अपने गुरू यानी पीएम के आठ गुणों को चिन्हित किया है। उसने अपनी स्वयं की प्रतिमा कांसे की रखी है— प्रभुजी तुम बेसन हम पानी..

एक तकनीकी प्रश्न आ गया प्रधानमंत्री के मन में। इस प्रतिमा को प्रणाम करें या ना करें। फिर उन्हे ख्याल आया कि वे 125 करोड़ लोगो के बाप हैं। जो आदमी सवा अरब का बाप होगा वह यकीनन अपना ही नहीं बल्कि अपने बाप का भी बाप होगा। वे प्रधानमंत्री भी हैं और देश के नागरिक भी।

प्रधानमंत्री जी एक नागरिक के रूप में खुद को सुंदर वस्त्र भेंट करते हैं। वास्तविक पीएम अगर नागरिक पीएम को महंगा सेलफोन दिलवा दे तो इसमें कहां कुछ अनैतिक है। यह तो पीएम का फर्ज है, अपने नागरिक के प्रति! इसी तरह नागरिक के रूप में स्वयं की प्रतिमा के सामने हाथ जोड़ने में कुछ भी गलत नहीं है।

इन्हीं अकाट्य तर्कों से प्रेरित होकर उन्होने श्रद्धा से दोनो हाथ जोड़े। अचानक हल्की से आवाज़ आई। पीएम जी ने देखा- रामभरोसे ने प्रसाद के रूप में जो पकौड़े चढ़ाये थे, उनमें से एक पकौड़ा नीचे आ गिरा है। इस ईश्वरीय चमत्कार को देखकर पीएम धन्य हो गये। उन्होने कहा— रामभरोसे जी मुझे प्रसाद मिल गया। यह अलौकिक पकौड़ी मुझे दे दीजिये।

रामभरोसे ने कहा— रुकिये गर्म कर देता हूं। हरी चटनी लेंगे या फिर टैमैटो सॉस।

पीएम ने दोनो आंखे बंद करके कहा— यह सचिदानंद जगतगुरु पकौड़ेश्वरनाथ भगवान का आशीर्वाद है। इसे मैं ताबीज बनवाकर अपने गले में धारण करूंगा।

रामभरोसे एक बार फिर बुक्का फाड़ने वाला था। लेकिन उसे तुरंत याद आया कि आंसू वीरो को शोभा नहीं देते। उसने तुरंत अपने गले का ताबीज दिखाया और अंटके-अंटकते पूरी कहानी बताई। पीएम जी ने मन ही मन गुनगुनाया.. तेरे मुझसे है पहले का नाता कोई।

पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट

फिल्मी धुनों के सबसे बुरी बात यह होती है कि आप दो-तीन बार सुन लें तो दिमाग़ पर चढ़ जाती हैं। हमेशा पीछा करती रहती हैं। पीएम जी के साथ भी ऐसा ही रहा था। एक ही धुन बार-बार में दिमाग़ में चल रही थी। हैदराबाद के ग्लोबल इनवेस्टर्स मीट तक इस धुन ने पीछा नहीं छोड़ा—

अपने विरोधी का करके बुर्रा हाल रे…

ईवीएम से गोली मारे…

नेता हमार रे… ईवीएम से गोली मारे… ढिचकैंउ

फड़कते हुए संगीत के अलावा इस गाने में दो-तीन और खूबियां थीं। एक तो यह गीत अध्यक्ष जी को क्लीन चिट देता था। दूसरे यह गीत अहिंसा जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करता था। विरोधी को मारना हो तो ईवीएम से मारो, गोली मत मारो। पीएम जी के मन में विचार आया कि क्यों ना अगले साल 2 अक्टूबर को राजघाट पर सर्वधर्म प्रार्थना से पहले इस गीत को बजवा दिया जाये। युवा पीढ़ी गांधी को लेकर उदासीन है। नये धुन में गाना सुनेगी तो गांधीवाद के प्रति उसके मन में आकर्षण पैदा होगा।

आइडिया ज़बरदस्त था। फिर भी पीएम ने थोड़ी देर के लिए जबरन गाने को दिमाग से परे धकेला और इनवेस्टर्स मीट में आये कोरियन स्पीकर को सुनने लगे। कई और वक्ताओं की तरह उसने भी यही कहा कि इज़ ऑफ बिजनेस यानी व्यापार की सुविधा के मामले में भारत की स्थिति अब दुनिया के ज्यादातर देशो से बेहतर है। पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट भारत के लिए एक गेम चेंजर साबित होगा। कोरियन कंपनी कैपिटल गुड्स यानी मशीनरी के क्षेत्र में सक्रिय है। लेकिन वह पकौड़ा इकॉनमी की संभावनाओं के दोहन के लिए बेचैन है।

रामभरोसे से पिछली मुलाकात के बाद प्रधानमंत्री के मन में पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट का आइडिया आया था, जिसे उन्होने 48 घंटे के भीतर अमली जामा पहना दिया। इस बार पार्टी ने अपना कोई घोषणा पत्र जारी नहीं किया, बस केवल चार पन्ने का पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट। डॉक्युमेंट क्या था, गागर में सागर था। ठीक से इंप्लीमेंट हो जाये तो कुछ और करने की ज़रूरत ही नहीं है। विजन डॉक्युमेंट के

उपर लिखा था, हर हाथ को काम हर प्लेट को पकौड़ा।पार्टी के ज्यादातर लोगो ने कहा कि इससे मुख्य विपक्षी पार्टी के अलावा कम्युनिस्टों का भी सर्जिकल स्ट्राइक हो गया। इस विजन डॉक्युमेंट की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि इसमें भारत को 2030 तक एक संपूर्ण पकौड़ा राष्ट्र में परिवर्तित करने का संकल्प रखा गया था। प्रधानमंत्री ने देखा कि अलग-अलग धार्मिक और जातीय समूह लगातार सिर उठा रहे हैं। ना हिंदू ना मुसलमान भारत अब बनेगा सिर्फ पकौड़ा राष्ट्र। ऐसा करके प्रधानमंत्री ने सभी ताकतों की हवा निकाल दी थी, जो धर्म की गंदा खेल खेल रहे थे। कब तक सेकोगे तुम धर्म की आंच पर राजनीति की रोटी, यहां तो पूरा देश पकौड़े तल रहा है। अचानक मन में आया यह वाक्य प्रधानमंत्री को अच्छा लगा। उन्होने फौरन प्रिंसिपल सेक्रेटरी को मैसेज किया— इसे मेरे नोटबुक में डाल दो। प्रचार में नये जुमलों की बहुत ज़रूरत पड़ेगी।

तो विपक्ष की तमाम नीचताओं के बावजूद प्रधानमंत्री इस बात को लेकर बहुत आश्वस्त थे कि कोई उनका बाल-बांका नहीं कर सकता है। खासकर ऐसे समय में जब पकौड़ा इकॉनमी बूम पर है और पूरी दुनिया डेवलपमेंट के इस मॉडल में अनंत संभावनाएं देख रही है। पीएम के पकौड़ा पावर विजन डॉक्युमेंट को मीडिया ने हाथो-हाथ लिया और उसे भारत के आर्थिक महाशक्ति बनने की दिशा में बहुत बड़ा कदम बताया था। फॉरेन मीडिया में भी विजन डॉक्युमेंट को लेकर बहुत सी सकारात्मक बातें कही जा रही थीं, जिनसे यह दावा पूरी तरह निराधार साबित होता था कि भारतीय मीडिया सरकार के हाथ की कठपुतली है। प्रधानमंत्री ने अतिरिक्त गोपनीयता बरतते हुए रामभरोसे की सिक्यूरिटी में एक लेयर और एड करवा दिया था। अब रामभरोसे और प्रधानमंत्री की सुरक्षा व्यवस्था में मामूली अंतर रह गया था। इस तरह भगवान और भक्त दोनो पूरी तरह सुरक्षित थे। लेकिन बुलंदशहर में भगवान की निर्माणाधीन प्रतिमा सुरक्षित नहीं थी।

बुलंदशहर जैसे छोटे नगर में देश के अलग-अलग हिस्सो से अब तक हज़ारों लोग आ चुके थे। वे लोग बहुत उग्र और हिंसक दिखाई दे रहे थे। भीड़ आक्रामक किस्म के नारे लगा रही थी... सौगंध पकौड़ेश्वरनाथ की खाते हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे। जहां पकौड़ेश्वरनाथ ने जन्म लिया है, मंदिर वही बनाएंगे। भारत तेरी क्या पहचान... पकौड़ेश्वर भगवान पकौड़ेश्वर भगवान।लगातार उग्र होती भीड़ को नियंत्रित रखने की कोशिशे लगातार जारी थी। बुलंदशहर जानेवाली सभी बसो को रोक दिया गया था। लेकिन कारसेवक जत्था बांधकर पैदल चले आ रहे थे।। जिस संस्था के पास विवादित स्थल का मालिकाना हक था, वह अदालत में गई थी। अदालत ने फैसला

उस संस्था के पक्ष में दिया था। लेकिन आंदोलन का नेतृत्व कर रहे विपक्षी नेता ने दो टूक कह दिया था कि यह आस्था का प्रश्न है। अगर अदालत का निर्णय हमारे खिलाफ गया तो हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे। रामभरोसे को अपनी तरफ मिलाने की कोशिशों के बेनकाब होने के बाद विपक्ष ने डायरेक्ट एक्शन का यह दांव चला था। बुलंदशहर अब कारसेवकों से भर चुका था। दावा किया जा रहा था कि यह संख्या अब एक लाख से उपर पहुंच चुकी है। आंदोलन में शामिल लोगो में बड़ी तादाद पार्टी के कार्यकर्ताओं की थी। लेकिन बहुत से ऐसे आम नागरिक भी कारसेवकों के जत्थे में शामिल हो गये थे, जो पकौड़ेश्वरनाथ को भगवान मानने लगे थे और उनकी जन्मभूमि को सचमुच मुक्त करवाना चाहते थे।

प्रधानमंत्री की पार्टी ने विपक्षी दल की भूमिका पर गंभीर एतराज करते हुए भड़काऊ भाषणों की शिकायत की। इसका संज्ञान लेते हुए चुनाव आयोग और कोर्ट दोनो ने विपक्ष को चेतावनी दी। विपक्ष ने नया दांव खेला। खुद को लिबरल बताने वाली पार्टी के सबसे बड़े नेता एलान किया कि पार्टी आंदोलन से अलग हो रही है। लेकिन अपने आखिरी भाषण में उस नेता ने हाथ नचा-नचाकर कहा— अगर भगवान पकौड़ेश्वरनाथ के जन्म स्थल पर उनका भव्य मंदिर बनना है, तो वो ऐसे ही नहीं बनेगा। इसके लिए मौजूदा ढांचे को गिराना होगा और जमीन को समतल करना होगा। कानूनी बाध्यतता है, मैं आपलोगो के बीच नहीं रह पाउंगा। लेकिन आगे का काम हमारे बहादुर कारसेवकों को करना होगा। आशा है यह काम आपलोग करेंगे। यह भाषण सुनते ही प्रधानमंत्री की रीढ़ की हड्डी में ठंडी सिहरन दौड़ गई। आखिर वे भारतीय राजनीति के अब तक के इतिहास से अच्छी तरह वाकिफ जो थे।

प्रधानमंत्री का बार-बार रामभरोसे जी से मिलना संभव नहीं था। उन्होने उनके पास अपने विशेष दूत भेजे। बातचीत शुरू हुई। प्रतिनिधिमंडल ने रामभरोसे को बताया कि साहब देश में बढ़ रहे सांप्रादायिक तनाव से दुखी हैं। रामभरोसे ने पूर्ण सहमति जताई— पीएम जी एकदम ठीक कहते हैं। नेता साले के एक नंबर कुत्ते होते हैं.. वैसे आपलोग क्या लेंगे भाई साहब? पकौड़े के साथ चाय या कुछ ठंडा।

प्रतिनिधिमंडल के लोग एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। फिर सबसे सीनियर लीडर ने गला साफ किया— देखिये रामभरोसे जी। राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में हमें आपकी मदद की बहुत सख्त ज़रूरत है। प्रधानमंत्री जी लंबी बात हुई वे कह रहे थे आप साक्षात भगवान पकौड़ेश्वरनाथ के अवतार..

ई भोसड़ी के पकौड़ेश्वरनाथ है कौन...बार-बार जब देखो पकौड़ेश्वर-पकौड़ेश्वर

शी... ईईई! ऐसा नहीं कहते रामभरोसे जी। लोगो की भावना आहत हो जाएगी। हमे पता नहीं है कि पकौड़ेश्वरनाथ कोई थे या नहीं थे। लेकिन उनके अनुयायी बहुत हैं। उनके संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

प्रधानमंत्री जी मानने लगे कि भगवान पकौड़ेश्वरनाथ ज़रूर रहे होंगे और उन्होने आपके रूप में इस धरती पर पुनर्जन्म लिया है। वे चाहते हैं कि बुलंदशहर जाकर आप कह दें कि आप ही भगवान पकौड़ेश्वरनाथ हैं और आपके नाम पर आंदोलन करने वाले फ्रॉड हैं। इस देश के लोग आपकी बहुत इज्ज़त करते हैं आपके मैदान में उतरते ही मामला शांत हो जाएगा।

रामभरोसे बहुत सीरियस हो गये— देखिये हम भी अपने प्रधानमंत्री की बहुत इज्ज़त करते हैं। लेकिन क्षमा कीजियेगा उनकी इस बात से असहमत हैं। देश में पकौड़ा क्रांति करने वाले केवल वही हैं, कोई और नहीं।पहली बात तो ई कि हम केवल बाबा विश्वनाथ को मानते हैं कोई पकौड़ेश्वर-फकौड़ेश्वर को नहीं। फिर भी अगर कोई पकौड़ेश्वरनाथ है तो बस अपने साहेब हैं। ऊ विजन डॉक्युमेंट ला दिये हैं। आंदोलन-फांदोलन से कुच्छो नहीं बिगड़ेगा उनका।

रामभरोसे जी एक बार बुलंदशहर चले तो जाइये। हम आग्रह कर रहे हैं आपसे— डेलीगेशन के एक मेंबर ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए का।

रामभरोसे नाराज़ हो गये— देखिये पीएम जी से हमारी बात हो गई है। वे भी मानते हैं और हमारी भी यही राय कि पॉलिटिशियन ससुरे एक नंबर के कुत्ते होते हैं। हमको राजनीति के कीचड़ में मत घसीटिये।

... और इस तरह पीएम का डेलीगेशन झुके कंधे और लटकते मुंह लिये रामभरोसे जी दरवाज़े से विदा हो गया।

लोकतंत्र को लॉकर में रख दीजिये

`ओपनियन पोल बता रहे हैं कि इन चुनावों मे हमारी पार्टी को किसी भी हाल में 180 से ज्यादा सीटें नहीं मिलेंगी। इस हिसाब से सरकार बन पाना नामुमकिन है, अगर बन भी गई तो आप प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगे सर'—- पार्टी अध्यक्ष ने बहुत तल्खी के साथ कड़वा सच बोला।

परधान जी सिर पकड़कर बैठे थे। बाकी सलाहकार भी चुप थे। बहुत देर की चुप्पी के बाद किसी ने पूछा— बुलंदशहर में क्या स्थिति है। कहीं वे लोग प्रधानमंत्री जी की अधबनी मूर्ति न तोड़ दें?

यही प्रार्थना है कि मेरी मूर्ति टूट जाये। अपने महानयक की धूल-धूसरित होती छवि को जनता देखेगी तो उसकी सोई भावनाएं जागेंगी और कहानी पूरी तरह बदल जाएगी।

प्रधानमंत्री जी आपको क्या लगता है, वे इतने बेवकूफ हैं कि आपकी मूर्ति को हाथ लगाएंगे। वे कुछ नहीं करेंगे। सिर्फ चुनाव तक तनाव बनाकर रखेगे। वे अब खुद आंदोलन से अलग हो गये हैं और विश्व पकौड़ा परिषद को आगे कर दिया है। लेकिन उनकी पार्टी के बड़े नेता पर्दे के पीछे से सबकुछ मैनेज कर रहे हैं। बहुत ही शातिर चाल चली है, इन लोगो ने इस बार— अध्यक्ष जी ने हताशा भरे स्वर में कहा।

बड़े कमीने हैं सर ये लोग। हमारा आइडिया चुराकर हमें ही हराना चाहते हैं। वे लोग खुलेआम कोर्ट के फैसले को ठेंगा दिखा रहे हैं। क्या हम सीधी कार्रवाई नहीं कर सकते। मतलब सेना भेज दें।

नहीं अगर खून-खराबा हुआ तो फायदा उन्ही का होगा। बाबा पकौड़ेरेश्वनाथ की छोटी-छोटी मूर्तियां लाखों की तादाद में बंटवाई है उन्होने। नौकरी दे रही प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड। रोजगार मिल रहा है, सरकार की पॉलिसी की वजह से लेकिन नाम हो रहा है- बाबा पकौड़ेरेश्वरनाथ का। ...और चुनावी फायदा मिलेगा विपक्ष को। सचमुमच हम बुरी तरह फंस गये हैं, इस बार।

प्रधानमंत्री ने बड़े-बड़े राजनीतिक उतार-चढ़ाव देखे हैं। उन्हे दंगों में फंसाने की नाकाम कोशिश की गई। पेमेंट आज तक पहुंचा नहीं फिर भी किसी ने उनके नाम से डायरी में करोड़ो रुपये लिख दिये। किसी ने एक फर्जी पुरानी चिट्ठी निकाल दी,

जिसमें कोई रो-रोकर गुहार लगा रहा था कि इस आदमी ने मुझसे मेरी बीवी छीन ली है। एक ब्रहचारी पर ऐसा आक्षेप!! लेकिन पीएम जी ने सबकुछ हंसते-हंसते सहा। उन्हे उन बातों से कभी उतना तनाव नहीं हुआ जितना आज हो रहा था। माथे पर पसीने की बूंदे हैं और होठो पर एक भी शब्द नहीं।

बस एक ही तरीका है, इस स्थिति से बचने का। लोकतंत्र को कुछ समय के लिए लॉकर में रख दीजिये सर। भूल जाइये चुनाव— आ गये अध्यक्ष जी निर्णायक शब्द।

मतलब इमरजेंसी। यह असंभव है। मैं अपने ही हाथो प्रजातंत्र का गला घोंट दूं।

प्रजातंत्र मूर्खों का और मूर्खों के लिए शासन है। लेकिन चलाते हैं, इसे अक्लमंद लोग। जिसने भी अक्लमंदी नहीं दिखाई वह सत्ता से गया। देश की आतंरिक सुरक्षा को खतरा है। पाकिस्तान से घुसपैठ लगातार बढ़ रही है। चीन आंखे दिखा रहा है और कोई रास्ता नहीं है, लागू कर दीजिये सर इमरजेंसी। उनकी कमर टूट जाएगी। छह आठ महीने में सबकुछ कंट्रोल में आ जाएगा और तब इलेक्शन करवा लेंगे।

प्रधानमंत्री ने बारी-बारी कमरे में मौजूद सभी लोगो के चेहरे देखे।

इलेक्शन कंट्रोल रूम का इंचार्ज बोला— बाबा पकौड़ेश्वरनाथ के नाम पर दंगा फैलाने वाले विघनटकारी और धार्मिक कट्टरपंथियों के हाथो में सत्ता सौपने से बेहतर है कि डेमोक्रेसी को कुछ समय के लिए सेफ कस्टडी में रख दिया जाये। डेमोक्रेसी है ही, इतनी कीमती चीज़ अगर इसे बचाने के लिए इसका अपहरण भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। शेरनी अपने पैने दांतों से शावक को पकड़ती है तो क्या इसका मतलब यह कि वो उसे मारना चाहती है? बिल्कुल नहीं वो उसे किसी सुरक्षित जगह में ले जाती है। भगवान को भी मस्त्य अवतार लेकर वेदो को निगलना पड़ा था ताकि दानवों से उनकी रक्षा हो सके।मौजूदा युग के विष्णु हैं आप। प्रजातंत्र रूपी वेद को बचा लीजिये इन राक्षसो से।

अध्यक्ष जी ने मेहनती लड़के की तरफ प्यार से देखा। कितना अच्छा बोलता है यह बालक। क्या नायाब सोच है इसकी... बहुत आगे जाएगा एक दिन। अध्यक्ष जी ने उसकी बात आगे बढ़ाई— इमरजेंसी लागू होते ही हम पूरे देश को यह बताना शुरू करेंगे कि प्रजातंत्र को इस देश में असली खतरा किन लोगो से है। नये चुनाव से कुछ समय पहले हम पूरे देश में `प्रजातंत्र बचाओ आंदोलन' खड़ा करेंगे। हम ये कहेंगे कि विपक्ष ने भावनाएं भड़काई हैं और इससे आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर संकट पैदा हो गया है। प्रजातंत्र को खतरे में डालने की बदनामी विपक्ष पर आएगी। चुनाव

जल्दी होंगे इसलिए कोई यह भी नहीं कह पाएगा कि हमने सत्ता बचाने के लिए इमरजेंसी लगाई थी।

कमरे में तालियां बजने लगी। ऐसे ही नहीं कहा जाता इस आदमी को आदमी चाणक्य का बाप! लेकिन प्रधान मंत्री जी खुश नहीं लग रहे थे। वे धीमी आवाज़ में बोले— मेरे सपनो को क्या होगा? पकौड़ा क्रांति से जो यश पूरी दुनिया में हमने कमाया है, वह इमरजेंसी लगाते ही धूल में मिल जाएगा।

अध्यक्ष जी बोले— …और सरकार बदलते ही आपकी पकौड़ा क्रांति का क्रेडिट विपक्ष हथिया लेगा। बासी हो चुके पकौड़ो की तरह हम सब कूड़ेदान में फेंक दिये जाएंगे।

…और इस तरह प्रधानमंत्री ना चाहते हुए भी लोकतंत्र को लॉकर में रखने के लिए राजी हो गये।

बहुत तगड़ी चीज है इमरजेंसी

पूरे देश में क्रैक डाउन शुरू हो गया। सभी विपक्षी नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया, जो बहुत बुज़ुर्ग थे, वे नज़रबंद कर दिये गये। कुछ नेता अंडरग्राउंड भी हो गये। दिल्ली और मुंबई समेत देश के सभी बड़े शहरों में अब ज्यादातर वक्त धारा 144 लागू रहती थी। विरोधी दल के कार्यकर्ताओं की तोड़फोड़ के बाद देश के कई शहरों में अनिश्चकालीन कर्फ्यू भी लगाना पड़ा। सबसे ज्यादा हिंसा बुलंदशहर में हुई, जहां पकौड़ेश्वरनाथ जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से जुड़े लोग भारी संख्या में जमा थे। हालांकि प्रशासन ने अपनी तरफ से संयम बरता लेकिन सेना बुलाये जाने की ख़बर से कारसेवकों में भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में आधिकारिक तौर पर पंद्रह लोग मारे गये। विपक्ष का दावा था कि मरने वालों की तादाद 100 से ज्यादा है। भगदड़ बाद में मची, उसके पहले फायरिंग हुई जिसमें कई लोगो की जान गई। लेकिन विपक्ष की सुनता कौन?

न्यूज़ चैनलों ही नहीं बल्कि सेंसरशिप प्रिंट मीडिया पर भी था। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने के इल्जाम में सैकड़ो लोग जेल भेजे जा चुके थे। कुल मिलाकर देश की स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। प्रधानमंत्री बहुत दुखी थे। लेकिन मजबूरी में कई बार ऐसे कड़वे घूंट पीने पड़ते हैं। बड़े लक्ष्यों के लिए छोटी कुर्बानियां देनी पड़ती है। महापुरुषों के माथे अक्सर कलंक आता है। भगवान कृष्ण पर चोरी का इल्जाम लगा और मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए रामजी को सीता परित्याग जैसा निर्णय लेना पड़ा। भगवाव विष्णु अगर वराह या सूअर नहीं बनते और अपने थूथन पर धरती को नहीं उठाते तो क्या आज हम सब लोग प्रजातंत्र की बात करने के लिए धरती पर होते? प्रजातंत्र खाक होता, जब यह धरती ही नहीं होती! भीतर से दुखी होने के बावजूद प्रधानमंत्री गहन चिंतन के बाद लगातार यह महसूस कर रहे थे कि लोकतंत्र को लॉकर में रखने का फैसला राष्ट्रहित में है।

जिस वक्त इमरजेंसी लगाने का फैसला हुआ था, रामभरोसे जी ब्राजील में थे। तीसरी दुनिया से गरीबी दूर करने में पकौड़े की भूमिका पर सेमिनार था। मुख्य वक्ता के रूप में उन्हे 110 देशो के प्रतिभागियों को अपनी सक्सेस स्टोरी बतानी थी। बिज़नेसमैन ट्रेड सीक्रेट छिपाते हैं, लेकिन रामभरोसे वैसे लोगो में कहा हैं? उन्होने दिल खोलकर पूरी कहानी बताई। प्रतिभागी अपने देश के नेताओं को गालियां दे रहे

थे कि आखिर उनके देश में भारत के प्रधानमंत्री जैसा कोई विजनरी क्यों ना हुआ, जो सड़क के किनारे खाने-पीने का सामान बेचने वाले नौजवान के सपनो को पंख लगाकर देश को एक आर्थिक महाशक्ति बना दे। कम आबादी वाले कुछ गरीब देशों से आये प्रतिभागियों ने तो कांफ्रेंस से लौटने के बाद अपने मुल्क में तख्ता पलटने का संकल्प भी ले लिया। तभी अचानक किसी ने पूछ लिया— रामभरोसे जी आपके देश में इमरजेंसी लगा दी गई है। ऐसे में आप वहां पकौड़ा इकॉनमी और प्रजातंत्र दोनो के भविष्य को किस तरह देखते हैं?

इमरजेंसी शब्द सुनते हुए रामभरोसे को याद आया— भइया जल्दी से दो प्लेट बांध दो, इमरजेंसी है। या फिर त्रिलोकी नाथ को बेसन लाने भेजते वक्त उनका खुद का कहना— लालाजी से बोलना फटाफट दे दें। दुकान पर बहुत ग्राहक है। एकदम इमरजेंसी है।संघर्ष के दिनो में रामभरोसे जब सुबह बोतल पकड़े सुलभ शौचालय की लाइन में खड़े रहते थे तो उन्हे पीछे से लगातार आवाजें सुनाई देती थी.. अरे अंदर वाले से पूछो सो तो नहीं गया... यहां बहुत इमरजेंसी है भाई! रामभरोसे जी बोले— हमारे पीएम जी महान है। इमरजेंसी लगा दी मतलब अब आगे से सब काम एकदम फटाफट करवाएंगे, बहुते बढ़िया है। रामभरोसे ने पुर्तगाली में पूछे गये सवाल का जवाब हिंदी में दिया था। अनुवादक का काम कर रहे सपना मल्होत्रा ने जवाब दिया— रामभरोसे जी कह रहे हैं, यह मंच राजनीतिक सवालों के लिए नहीं है। कृपया सवाल सिर्फ पकौड़ा इंडस्ट्री पर ही पूछें।

रियो से दिल्ली तक लंबी फ्लाइट में रामभरोसे कई बार सोये और कई बार जागे। लेकिन दिमाग में रह-रहकर कौंध रही एक ही बात— इमरजेंसी। पिछले एक साल में उनकी जिंदगी बहुत रफ्तार से भागी है। वे सड़क से उठकर अब एक बड़े एंपायर के मालिक बन चुके थे। अपने साथ-साथ उन्होने इस देश के लाखों परिवारों की जिंदगी भी बदल दी। इतना सबकुछ होने पर भी एक चीज़ उन्हे बहुत अखरती है। उन्हे हमेशा लगता है कि देश के लोगो में इमरजेंसी नाम की कोई चीज़ नहीं है। सब ससुरे सोये-सोये रहते हैं। प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड की स्थापना के बाद से भारत में अब तक सिर्फ 400 पकौड़ा स्टार्ट अप शुरू हुए हैं जबकि इतने बड़े देश में संभावना हज़ारो ऐसे नये उद्यमों की है। पीपीएल के अलावा सिर्फ बारह और कंपनियों ने पब्लिक इश्यू जारी किये थे जबकि पकौड़ा प्रोजेक्ट्स में इनवेस्ट करने के लिए देश की जनता बेताब है।

रामभरोसे ने कभी मोनोपॉली पर यकीन नहीं किया। उन्होने सबकी दिल खोलकर मदद की। करियर के शुरुआती दिनों में चाइनीज़ वैन वाले को नोएडा फिल्म सिटी से भगाने का जो पाप उन्होने किया था, उसका अपराध बोध उनके मन में था। बहुत कोशिशों के बाद रामभरोसे ने उसका पता ढूंढा और एक दिन उससे खुद जाकर मिले। माफी मांगने के बाद रामभरोसे ने उसे नुकसान से दोगुना ज्यादा हर्जाना दिया और हाथ जोड़कर यह कहा कि वह जहां चाहेगा उसका चाइनचीज़ वैन लगवा देंगे। लेकिन चाइनीज वाले ने हाथ जोड़ दिये— विदेशी संस्कृति बहुत खराब है। भारतीय संस्कृति महान है। अब मैने तय कर लिया है कि मेरी अगली सात पुश्ते सिर्फ पकौड़े बेचगी। अगर कुछ करना चाहते हैं तो मेरे बेटे को अपनी कंपनी में नौकरी दे दीजिये।.. और आज उस चाइनीज़ फास्ट फूड वाले का बेटा प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड में सीनियर वाइस प्रेसिडेंट है। यह गांधीगीरी नहीं बल्कि रामभरोसे की पकौड़ागीरी थी, जिसने इस देश में अनगिनत लोगो का ह्रदय परिवर्तन किया। अपनी पुस्तक पकौड़े के साथ मेरे प्रयोग में रामभरोसे जी ने इस घटना का विस्तार से जिक्र किया है। रामभरोसे का विमान सचमुच हवाई जहाज की रफ्तार से भाग रहा था। ठीक उसी रफ्तार से जिस रफ्तार से देश की अर्थव्यवस्था। देश की स्थिति उनके मन में संतोष का भाव जगाती है लेकिन लोगो की सुस्ती खीझ पैदा करती है। समस्या को एकदम जड़ से पकड़े हैं पीएम साहेब। इमरजेंसी लगेगी तो सुस्ती दूर होगी। रियो से दिल्ली की फ्लाइट 22 घंटे की है। बहुत थक हैं रामभरोसे। मन में अचानक एक ख्याल आया— जब इमरजेंसी है तो क्या हवाई जहाज 16 घंटे में नहीं पहुंच सकता है दिल्ली?

नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरते ही रामभरोसे को पत्रकारों ने घेर लिया। इनमें कुछ वैसे विदेशी पत्रकार भी थे, जिनसे अब तक देश छोड़ने को नहीं कहा गया था। पत्रकारों ने इमरजेंसी पर प्रतिक्रिया पूछी। रामभरोसे ने खटाक से जवाब दिया— बहुत बढ़िया। लाइफ में इमरजेंसी नहीं है तो कुछ नहीं है। सभी देशवासियों को इमरजेंसी का महत्व समझना चाहिए। ... और इस तरह एक वक्तव्य के साथ रामभरोसे भी विनोबा जैसी विभूतियों की लीग में सीधे शामिल हो गये। रामभरोसे जी के बयान से विपक्ष की मुहिम को तगड़ा झटका लगा था। विपक्षियों को उम्मीद थी कि अपनी असाधारण मेधा और मेहनत से भारतीय अर्थव्यवस्था को बदलकर रख देनेवाला व्यक्ति इमरजेंसी का विरोध करेगा और सरकार फौरन दबाव में आ जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। विपक्षी पार्टियों के समर्थक चाहते थे कि

देश की वास्तविक स्थिति का ठीक-ठीक अंदाज़ा पकौड़ा किंग को हो। लेकिन बताता कौन? चोटी के नेता या तो जेल में थे या नज़रबंद थे।

एयरपोर्ट से घर तक का सफर लंबा था। कार में सपना मल्होत्रा ने धीमी लेकिन फुंफकारती आवाज़ में कहा— सर रियो में भी मैने बोला था आपको ज्यादा बात मत कीजियेगा। रामभरोसे ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखा। सपना आगे बोली— आप खुद बता रहे थे कि पीएम ने आपको मीडिया से बात करने को मना किया है, फिर आपने पत्रकारों के सवालों के जवाब क्यों दिये? रामभरोसे हंसकर बोले— अरे पीएम जी हमको ई थोड़े ना बोले हैं कि अच्छी बात भी बोलना मना है। उन्होने एक बढ़िया काम किया और हमने तारीफ कर दी तो कौन गुनाह हो गया।एयरपोर्ट से घर तक के सफर में रामभरोसे को सड़के कुछ खाली-खाली लगी। बड़ी तादाद में पुलिस देखकर वे और खुश हुए— देखो हम कह रहे थे पीएम जी कोई काम ऐसे नहीं करते। अपने काम की इमरजेंसी समझ रहे हैं पुलिस वाले भी अब! ड्यूटी पर एकदम मुस्तैद है, नहीं तो पहले ढूंढे भी नहीं मिलते थे। जवाब में सेक्रेटरी सपना ने केवल गंदा सा मुंह बनाया।

रियो से दिल्ली के लंबे सफर की थकान उतारने के लिए रामभरोसे ने दस घंटे की नींद ली। आंख खुली तो देखा कि शाम हो चुकी है। ई जैट लैग भी अजबे चीज है, ससुरा। अब पूरी रात उल्लू की तरह बैठके गुजारनी पड़ेगी। रामभरोसे बेडरूम से निकलकर गॉर्डन के तरफ वाली लॉबी में चले आये। नौकर ने टेबल पर चाय के साथ उनके फेवरेट मूंग दाल के पकौड़े रख दिये। उन्होने चाय की पहली घूंट ली ही थी कि तभी गेट से चीख-पुकार की आवाज़े आनी शुरू हो गईं। मेन गेट लॉबी से काफी दूर था। कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा था। रामभरोसे उठकर थोड़ा आगे गये। उन्होने देखा कि बाहर दस-पंद्रह लोग जमा हैं जिनमें औरत और बच्चो की तादाद ज्यादा है। दो सिपाही उनपर लाठी चला रहे हैं। भीतर खड़ा जेड सिक्यूरिटी वाला अफसर गला फाड़ रहा है— अरे अंदर आने दीजिये इनको, साहब का आदेश है, किसी गरीब को रोकना नहीं है। सिक्यूरिटी कि जिम्मेदारी हमारी है। हम देख लेंगे। आपको पता नहीं है क्या कि ये घर किनका है? शिकायत पहुंच जाएगी डायरेक्टर प्रधानमंत्री जी तक।

प्रधानमंत्री का नाम सुनते ही सिपाही ने अपनी लाठी जमीन पर रख दी और लाठी भांज रहे साथी को रुकने का इशारा करते हुए सिक्यूरिटी ऑफिसर से बोला— हम

तो अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। धारा-144 लागू है। एक साथ इतने लोग जमा होंगे तो हमारी नौकरी जाएगी। आप प्रधानमंत्री जी का नाम ले रहे हैं तो हम आगे क्या बोले?

गेट खुला तो भीड़ अंदर आ गई। सबके सब लुटे-पिटे मजबूर। उनमें से एक औरत के माथे से खून बह रहा था और अपनी मां की हालत देखकर उसके दोनो बच्चे चीख-चीखकर रो रहे थे। औरतो और बच्चो के साथ फरियादियों में दो मर्द भी थे, जिनकी शक्लें कुछ जानी-पहचानी लग रही थीं। सिक्यूरिटी वाले ने गेट से फोन किया। उसकी बात सुने बिना रामभरोसे बोले— सबको अंदर भेज दो तुरंत।

रामभरोसे भीड़ से घिरे थे। सब अपनी-अपनी बात कह रहे थे, रामभरोसे चुपचाप सुन रहे थे। थोड़ी देर बाद भीड़ भी खामोश थी और रामभरोसे भी। रामभरोसे को ऐसा डिप्रेशन तब भी नहीं हुआ तब जब उनकी गलती से 20 लीटर दूध जल गया था और ढाबे के मालिक ने पूरी पगार जब्त करने के बाद उन्हे लगभग नंगा करके भगा दिया था। वे नोएडा में शुरुआती संघर्ष के दिनों की बात है। लेकिन रामभरोसे को लग रहा है कि आज वे फिर से नंगे हैं। चारो तरफ से घेरकर बैठी औरते उन्हे देख रही हैं और बच्चे उनपर हंस रहे हैं। अगर वे अकेले होते तो अपने हाथो से अपने दोनो कान खींचते और खुद को दस-बीस तमाचे लगाते— कितना बड़ा चंपूडक रे तू रामभरोसिया! उनके कानो में अपने बाप की वो कर्कश आवाज़ बरसो बाद गूंजी। ठीक ही कहते थे बाबू!

नौकर पुलिस की लाठी से घायल औरत की मरहम पट्टी करवाकर पास की डिस्पेंसरी से वापस लौट चुका था। रामभरोसे ने दूसरे नौकर को इशारा किया। थोड़ी देर में वह ढेर सारे बंद लिफाफे ले आया। रामभरोसे ने सबको एक-एक लिफाफा पकड़ाया और बोले— आपलोग चिंता मत कीजियेगा, हम हैं ना। रात-बिरात कभी कोई मुसीबत हो तो ई घर का दरवाजा आपलोग के लिए खुला है।

भीड़ छंटने के बाद रामभरोसे जी अपने बेडरूम में गये और उन्होने बहुत गुस्से में फोन उठाया और सीधे मिला दिया वो नंबर जो उन्हे खासतौर पर दिया गया था। वो नंबर था प्रधानमंत्री आवास का। बहुत देर बाद रिंग होने के बाद प्रधानमंत्री आवास पर तैनात किसी अधिकारी ने फोन उठाया और कड़ककर बोला— इस नंबर पर दोबारा फोन मत कीजियेगा। पीएम साहब आजकल बहुत व्यस्त हैं। अगर अप्वाइंटमेंट चाहिए तो उनके सेक्रेटेरियट में फोन कीजिये। पीएम सेक्रेटेरियट, नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, इन सबसे क्या लेना-देना रामभरोसे जी का। उनपर तो सीधी कृपा थी पीएम जी की। लेकिन क्या अब वह कृपा हट गई? फरियादियों ने जो

आपबीती सुनाई उससे यही लगा कि गरीबों पर अब पीएम जी की कृपा नहीं रही। बुलंदशहर में बलवा हुआ। मरने वालो में ज्यादातर वही लोग थे जो कारसेवा को मेला समझकर मूंगफली, पान-बीड़ी और चाय बेचने गये थे।

रामभरोसे के घर जो लोग आये थे वे सब पकौड़े वालों के परिजन थे। जिस औरत का माथा फूटा था, उसके आदमी को पुलिस ने रोड पर गैर-कानूनी ढंग से फेरी लगाने के जुर्म में हवालात में डाल दिया था। उसने ही नहीं हर फरियादी ने सबने रो-रोकर बताया कि पुलिस वाले अब हफ्ता मनमाने ढंग से वसूल रहे हैं। रामभरोसे को याद आ गया कि परधान जी मौजूदगी में उसने गृह मंत्री के सामने यह मुद्धा उठाया था। उसके बाद गृहमंत्री ने सबसे बड़े अफसर से बात करके वसूली के मानदंड तय करने को कहा था। सरकार ने साफ कहा था कि इतनी वसूली ना की जाये कि बेचारे गरीब की कमर ही टूट जाये।एक पॉलिसी ड्रिवेन गर्वेमेंट की नाक के नीचे अगर एक दरोगा अपनी मर्जी से वसूली के रेट बढ़ाने लगे तो यह बहुत गलत होगा। गृह मंत्री की सख्ती के बाद मामला ठीक हो गया। लेकिन इमरजेंसी लगते ही फिर से मनमानी शुरू हो गई।

यह प्रजातंत्र नहीं पकौड़ो पर हमला है

इमरजेंसी के माहौल में पकौड़ा क्रांति के अग्रदूत श्री रामभरोसे ने रामलीला मैदान से देश की जनता को संबोधित करने का फैसला किया है। ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। तमाम न्यूज़ चैनल वाले रामभरोसे जी के घर के बाहर चक्कर काटने लगे। उनकी पुरानी कर्मभूमि यानी फिल्म सिटी में पीटीसी लोकेशन के लिए रिपोर्टरों के बीच दोबारा सिर फुटौव्वल ना हो यह सुनिश्चित करने के लिए नोएडा पुलिस ने इस बार पहले से ही चौकसी बढ़ा दी। रामभरोसे जी मीडिया वालों के हाथ नहीं आये। उन्होने यह ज़रूर कहलवा दिया कि उन्हे जो कुछ भी कहना होगा वो रामलीला मैदान के मंच से कहेंगे।

रामभरोसे इमरजेंसी का खुला समर्थन कर चुके थे। इसलिए नेशनल मीडिया यह मानकर चल रहा था कि वे सरकार के पक्ष में कोई बात करेंगे। शायद यही वजह है कि सरकार ने भी उनके कार्यक्रम पर रोक नहीं लगाई थी। रामभरोसे का भाषण अभी शुरू नहीं हुआ था लेकिन रामलीला मैदान में पांव रखने की जगह नहीं थी। अनुमान लगाया जा रहा था कि अन्ना हज़ारे के पूरे आंदोलन के दौरान यहां जितनी भीड़ हुई थी, उससे कहीं ज्यादा भीड़ रामभरोसे को सुनने के लिए आई है। नौजवानों के हाथों में तख्तियां थीं, जिनपर लिखा था— रामभरोसे हैं तो भरोसा है। विपक्ष ने इसे एक सरकार समर्थित कार्यक्रम करार दिया था लेकिन यह बात पूरी तरह सच नहीं थी।

दिल्ली, नोएडा, फरीदाबाद, गुड़गांव, मेरठ, अलीगढ़ और आगरा से हजारों की संख्या में पकौड़े वाले अपने प्रेरणा पुरुष की बात सुनने आये थे। इन लोगो ने कार्यक्रम में आये लोगो को मुफ्त में पकौड़े खिलाने का बंदोबस्त किया था। ख़बर फैली कि पकौड़े मुफ्त मिल रहे हैं तो भीड़ और बढ़ी। इससे यह साबित होता था कि भारत प्रजातंत्र के बिना तो रह सकता है लेकिन पकौड़ो के बिना नहीं रह सकता है। रामभरोसे के पास अपनी अच्छी-खासी आर्थिक ताकत थी। अगर वे कोई पेशेवर राजनेता होते तो दस-बीस करोड़ रुपये अपनी जेब से खर्च कर देते। लेकिन ना तो यह राजनीतिक रैली थी और ना रामभरोसे कोई राजनेता। उन्होने केवल मैदान की बुकिंग का खर्चा अपनी जेब से दिया था। बाकी सब जनता के भरोसे था।

कार्यक्रम अभी शुरू नहीं हुआ था। पकौड़े वाले मुफ्त पकौड़े खिला रहे थे लेकिन चायवालों की मोटी कमाई हो रही थी। आखिरकार रामभरोसे जी मंच पर आ ही गये। मंच पर उनके साथ वही लोग बैठे थे जो उस दिन अपनी फरियाद लेकर उनके घर आये थे। रामभरोसे ने बिना वक्त गंवाये बोलना शुरू किया— भाई और बहन लोग। हमको भासन देना नहीं आता है। भगवान की दया से आजकल देश में बहुत खुशहाली है। लोग कहते हैं कि भारत में पकौड़ा क्रांति लाने वाला रामभरोसे है। एकदम गलत कहते हैं। ई जो महान काम हुआ है, खाली एक ही आदमी के दम पर हुआ है और उ हमरे प्रधानमंत्री जी हैं।

कतार में आगे बैठे नौजवान चिल्लाने लगे... पीएम जी... पीएम जी... पीएम जी....

पीएम जी हर काम खूब सोच समझके करते हैं। इमरजेंसी लगाये तो हम बहुत खुश हुए। सोचा कि इमरजेंसी का मतलब हर काम की तत्परता को समझना है। आप कोनो सरकारी ऑफिस में जाएंगे तो काम काम इमरजेंसी में हो जाएगा। लेकिन हमको पता नहीं था कि इमरजेंसी का असली मतलब का होता है? आपलोग से कुछ नहीं छिपाएंगे हम एकदम्मे जाहिल आदमी हैं। चौथी में थे तो एक दिन मास्टर साहब हमको बहुत मारे। उसके बाद से डर के मारे कभी स्कूले नहीं गये।

तो भाई लोग हम इमरजेंसी का मतलब गलत समझे और बोले कि बहुत अच्छा हुआ। इसके लिए हमको माफ कर कीजिये। भगवान ना करे कोनो देस में कहीं इमरजेंसी लगे।दिहाड़ी में रोजी-रोटी कमाने वाले लोग जगह-जगह पिट रहे हैं। पुलिस की गोली से मर रहे हैं। आग लगे ऐसी इमरजेंसी को। ई बात सच है कि पीएम जी हमरे बाप समान हैं लेकिन हम ई भी नहीं भूल सकते कि पकौड़ी हमारी मां है। एक तरफ बाप है तो दूसरी तरफ मां है। भाई लोगो अगर बाप और माई में से किसी एक को चुनना होगा तो हम दिल पर पत्थर रखकर मां को ही चुनेंगे। हम प्रजातंत्र नहीं जानते हैं इतना जानते हैं कि ई पकौड़ा और पकौड़ावालों पर हमला है। यह हमला हम बर्दाश्त नहीं करेंगे।

...और लाइव कवरेज़ कर न्यूज़ चैनलों ने सेंसरशिप गाइड लाइन को दरकिनार करके मोटे-मोटे अक्षरों में ब्रेकिंग न्यूज़ चलाना शुरू किया— पकौड़ा मैन रामभरोसे ने फूंका इमरजेंसी के खिलाफ बिगुल...

रामभरोसे ने बेबाक भाषण जारी रखा— हम अपने बाप से झगड़ा करके हम बनारस से दिल्ली आये थे। बहुत दुख उठाये। फिर बाप समान प्रधानमंत्री मिले। लेकिन भाई लोगो ई वक्त मां के लिए खड़े होने का है। देश में इमरजेंसी बनी रही तो

प्रधानमंत्री के आशीर्वाद और आपलोगो के मेहनत से खड़ी हुई पकौड़ा क्रांति गंगाजी में डूब जाएगी। आपलोग तय कर लीजिये कि आगे का चाहते हैं।

...रामलीला मैदान में इमरजेंसी मुर्दाबाद। इमरजेंसी वापस लो और केंद्र सरकार मुर्दाबाद के नारे गूंजने लगे।

भाई लोग हम कोई नेता नहीं हैं। हमारे प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि नेता लोग सब कुत्ते के बच्चे होते हैं। एक नंबर के हरामी साले। एकदम ठीक कहते हैं, पीएम जी। हमारी मांग यही है कि ई जो इमरजेंसी है, उसको खत्म की जाये। जेल में जितने भी विपक्षी नेता हैं, उन सबको छोड़ा जाये और देश में तुरंत चुनाव हो। ...और सबसे बड़ी मांग हमारे पकौड़ा वाले भाई लोगो को तंग ना किया जाये। कोई भी दारोगा अपने मन से हफ्ते का रेट नहीं बढ़ाये।

...और रामलीला मैदान में सबसे ज्यादा तालियां रामभरोसे जी के भाषण की आखिरी लाइनों पर बजीं।

लेकिन रामभरोसे के सरप्राइज़ अभी खत्म नहीं हुए थे, वे आगे बोले— अपनी मांग को लेकर हम आज से अनशन कर रहे हैं। हम गांधी बाबा नहीं है। लेकिन आदमी बड़ा नहीं होता है, उ जौन बात के लिए खड़ा होता है, ऊ बात बड़ी होती है। अनशन का मतलब अनशन ना अनाज ना पानी। जब तक मांग पूरी नहीं होगी तब तक चलेगा अनशन।

रामलीला मैदान से दूर लुटियंस जोन के राजनीतिक गलियारों में अलग किस्म की हलचल थी। नेताओं और ब्यूरोक्रेट्स के अलग-अलग ताकतवर समूह रामीलाला मैदान के डेवलपमेंट का अपने-अपने ढंग से विश्लेषण करने और आगे की रणनीति बनाने में जुटे हुए थे। देश में इमरजेंसी लगने के बाद प्रधानमंत्री अपनी ही सरकार के मंत्रियों के लिए भी सुलभ नहीं रह गये थे। उनका ज्यादातर वक्त जनता से संवाद करने और चुनावी रणनीति बनाने में खर्च हो रहा था। बड़े प्रशासनिक फैसले गृह, वित्त और कानून मंत्रियों की ताकतवर तिकड़ी पर आ टिके थे। फिलहाल यह तिकड़ी नॉर्थ ब्लॉक में गृह मंत्री के चैंबर में थी।

`ये पकौड़ेवाला तो गजब का हरामी आटइम निकला। क्या सेटिंग की है रातो-रात अपोजीशन के साथ। हम समझते हैं कि पॉलिटिक्स करना केवल हमे ही आता है। मांगे देखिये ज़रा उसकी। क्या कोई आम आदमी बोलता है, इस तरह की भाषा'— वित्त मंत्री बोले।

वक्त बर्बाद करना ठीक नहीं है। मेरा तो कहना है कि आज भर देख लीजिये। सिचुएशन एसेस करके कल किसी वक्त उसे उठावा लेना चाहिए। जितनी देर ये ड्रामा चलेगा उतना ही नुकसान होगा— कानून मंत्री ने तजबीज की।

उठवा तो दें भाई। लेकिन अपने प्रधानमंत्री जी को उनसे कुछ विशेष लगाव है। उन्होने ऑलरेडी फोन कर दिया है, मुझे। कह रहे हैं, जल्दबाजी में कोई काम नहीं होगा। मत कीजिये जल्दबाजी मुझे क्या है, हम तो इशारे के गुलाम हैं— गृह मंत्री ने बेबसी ज़ाहिर की।

ये चाय-पकौड़े का रिश्ता है, मेरी और आपकी समझ में नहीं आएगा— वित्त मंत्री की इस वन लाइनर पर कमरे में ठहाके गूंज उठे।

वित्त मंत्री आगे बोले— वैसे देखा जाये तो प्रधानमंत्री ठीक कह रहे हैं। इमरजेंसी लगाकर हमने विपक्ष की कमर तोड़ दी है। बुलंदशहर वाला मामला ठंडा हो रहा है। पीएम साहब लगातार सघन जनसंपर्क में हैं। पकौड़ा सबसे बड़ा चुनावी एजेंडा होगा। ऐसे में अगर रामभरोसे को कुछ हुआ तो दांव उल्टा पड़ जाएगा।

ये बातचीत चल ही रही थी कि गृह-मंत्री के पास मैसेज आ गया कि उन्हे पीएमओ में तलब किया गया है।

पीएम, पार्टी अध्यक्ष और गृह-मंत्री के गहन विचार विमर्श का आखिरी निष्कर्ष यह रहा कि रामभरोसे की मांग पर एक झटके में इमरजेंसी हटा देने से यह संदेश जाएगा कि सरकार हार गई है। फिर भी फाइनल जीतने के लिए उससे पहले के एकाध मुकाबले हार जाने में कोई हर्ज नहीं है। रामभरोसे को नाराज़ करने का जोखिम इस वक्त नहीं लिया जा सकता था क्योंकि ऑपोजिशन के पास पहले से ही बाबा पकौड़ेश्वरनाथ का शिगूफा है। इसलिए रामभरोसे की मांगे मानने में कोई हर्ज नहीं है। हां यह सुनिश्चित ज़रूर करना पड़ेगा कि विपक्ष किसी भी तरह पकौड़ेश्वरनाथ मंदिर को चुनावी मुद्दा ना बनाने पाये। यह तभी संभव है जब रामभरोसे मदद के लिए तैयार हो।

पीएम को इस बात की चिंता सता रही थी कि अगर मासूम लोकतंत्र को लॉकर से बाहर निकाला गया तो उसका क्या होगा? पालतू खरगोश या कबूतर जब तक पिंजड़े में रहते हैं, सुरक्षित होते हैं। बाहर निकलते ही बिल्ली झपट्टा मारती है और काम तमाम! फिर भी उन्होने हिम्मत करके डर को दिल से निकाला और आधी रात को अपने प्रतिनिधि रामभरोसे से मिलने के लिए रवाना कर दिये। शुरू में वित्त मंत्री

और कानून मंत्री को भेजने का फैसला हुआ था। लेकिन पीएम ने आखिरी वक्त खुद दोनो नाम हटा दिये। अब एक ऐसे मंत्री का चुनाव किया गया जो बनारस से लगे जौनपुर के रहने वाले थे। उनके साथ गये पीएमओ के सबसे जूनियर मिनिस्टर जो रामभरोसे तक प्रधानमंत्री के संदेश पहुंचाने का काम पहले भी कर चुके थे। दोनो केंद्रीय मंत्रियों ने रामभरोसे को शहद लिपटी जुबान में यह बताया कि प्रधानमंत्री उनकी चिंता को ठीक माननते हैं। पॉर्टी पॉलिटिक्स बहुत गंदी चीज़ है। खुद पीएम जी इसमें नहीं पड़ना चाहते। आपकी सारी मांगे मान ली जाएंगी बस केवल एक शर्त है.. आप पब्लिक में कह दीजिये कि पकौड़ेश्वरनाथ का मुद्धा नकली...

रामभरोसे ने पिछले बारह घंटे से कुछ नहीं खाया था। कमज़ोरी की वजह से लेटे-लेटे ही मंत्रियों से बात कर रहे थे। पकौड़ेरेश्वरनाथ का नाम सुनकर तमतमाकर उठ बैठे — अरे ई पकौड़ेरेश्वरनाथ भोसड़ियावाले हउउे कौन? सामने आये तो मार लात के गड़िये तोड़ देब... एकरा बहिनी के...

पीएममो वाला जूनियर मिनिस्टर बोला— सर हम वही कह रहे हैं कि पकौड़ेरेश्वरनाथ कोई नहीं है। लेकिन विपक्षी दल वाले उनका नाम लेकर देशभर में दंगा-फसाद करा रहे हैं। पीएम जी चिंतित हैं कि चुनाव के दौरान उन्होने फिर दंगे शुरू करा दिये तो पूरे देश में आग लग जाएगी।

`तो बुला लीजिये अपोजीशन लीडर को। आमने-सामने बात हो जाये। हम बोल देंगे कि अगर चुनाव में अगर विपक्ष एक बार भी पकौड़ेश्वरनाथ का नाम लिया तो फिर हम रूलिंग पार्टी के लिए कैंपेन शुरू कर देंगे।'

रामभरोसे की बात सुनकर दोनो मंत्रियों की जान में जान आई। वे जानते थे कि विरोधी दल वाले भी रामभरोसे को नाराज़ करने का जोखिम नहीं उठाएंगे। लेकिन रामभरोसे सरकार से भी बहुत नाराज़ थे। वे आगे बोले— आपलोग जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। पिछले कुछ समय से पकौड़ा इंडस्ट्री की हालत खराब है, हमारे आदमी सड़क पर जहां-तहां पिट रहे हैं।'

जौनपुर से नाता रखने वाला मिनिस्टर साहब ने भरोसा दिया कि अगर उनकी सरकार आई तो एजुकेशन बजट और घटा दिया जाएगा, ताकि सरकारी स्कूलों से ज्यादा से ज्यादा ड्रॉप आउट निकलें और पकौड़ा इंडस्ट्री में योगदान कर सकें। साथ ही सरकारी नौकरियों में भी कटौती की जाएगी ताकि युवा पीढ़ी को पकौड़ा निर्माण सबसे अच्छा करियर ऑप्शन लगे। वसूली के मानक सुनिश्चित किये जाएंगे ताकि पुलिस मनमानी ना कर सके। रामभरोसे जी ने अपनी आंखे बंद कर लीं।

जेल से चुपके-चुपके रिहा किये गये अपोजीशन पार्टी के एक सीनियर लीडर को लेकर गृह-मंत्री अगले दिन सुबह रामभरोसे के मंच पर आये। ऑपोजीशन ने इमरजेंसी के विरोध के लिए रामभरोसे को धन्यवाद दिया और वादा किया कि पकौड़ेश्वरनाथ में गहरी आस्था के बावजूद फिलहाल उनकी जन्मभूमि की मुक्ति को चुनावी मुद्धा नहीं बनाया जाएगा। गृह मंत्री ने कहा इमरजेंसी खत्म करके जल्द ही नये चुनाव कराये जाएंगे। सहमति बनी तो दोनो पक्षों ने रामभरोसे जी को जूस पिलाया। जब अनशन टूटा तो गृह मंत्री ने चुपके से जेब में रखा मसूर दाल का एक पकौड़ा निकाला और रामभरोसे के मुंह में रख दिया। बस बन गई ब्रेकिंग न्यूज़। विपक्षी नेता भी गृह मंत्री की इस रणनीति के आगे नत-मस्तक था।

...और अगले दिन देश में चुनाव की तारीखों का एलान हो गया।

यह पकौड़ातंत्र की जीत है

प्रधानमंत्री अनुमानों के विपरीत चुनाव बेहद आसानी से जीत गये। ओपनियन पोल की सारी भविष्यवाणियां गलत साबित हुई। इमरजेंसी का कोई निगेटिव असर नहीं हुआ। चुनाव के बीच में एक सीडी कांड ने सरकार की मुश्किल थोड़ी ज़रूर बढ़ाई थी। अध्यक्ष जी के चहेते उस मेहनती लड़के यानी इलेक्शन वॉर रूम के इंजार्ज का एमएमएस मार्केट में आ आया था। मेहनती लड़का एक फाइव स्टार होटल में मेहनत करता पाया गया था। कई लोग वीडियो लीक होने के लिए पार्टी के एक बुजुर्ग नेता पर उंगली उठा रहे थे, जो उस मेहनती लड़के में बहुत संभावनाएं देखते थे और उसके नाजाय़ज रिश्तों से आहत थे। खैर देश की जनता ने बता दिया कि नेताओं के एमएमएस को वह एक उपहार मानती है।

पकौड़ा क्रांति को लेकर जो पॉजेटिव अंडर करेंट देश के भीतर था, उसे विपक्ष सही तरीके से कोई पहचान नहीं पाया था। एक हज़ार साल के इतिहास के सबसे मंजे राजनेता यानी पीएम जी भी नहीं। अगर पहचान पाते तो इमरजेंसी क्यों लगाते? पूरे देश में रूलिंग पार्टी जीत का जश्न मना रही थी। पार्टी मुख्यालय में नेता एक दूसरे का मुंह मीठा करने के बजाय नमकीन कर रहे थे। गरीबों बंटवाने के लिए पार्टी ने सैकड़ो टन पकौड़े पकौड़े तलवाये। मीडिया वाले पार्टी के सभी नेताओं से एक ही सवाल पूछ रहे थे— ये प्रधानमंत्री की जीत है या पकौड़ो की? पार्टी के अध्यक्ष ने कहा कि यह प्रजातंत्र और प्रधानमंत्री की पकौड़ा पॉलिसी दोनो की जीत है। लेकिन पत्रकार यही सवाल दोहराते रहे। आखिर में अध्यक्ष जी ने एक जुमला फेंका— यह पकौड़ा तंत्र की जीत है। प्रजातंत्र और पकौड़ा तंत्र एक ही बात है। दोनो एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के बिना अधूरे है।

जिस तरह भारत की जश्न-ए-आज़ादी से दूर गांधी 15 अगस्त को बंगाल में थे, उसी तरह रामभरोसे भी चुनाव नतीजों के समय दिल्ली से बहुत दूर थे। वे मध्य-प्रदेश के गांवो में घूम रहे थे और ये जानने की कोशिश कर रहे थे कि पकौड़ा क्रांति की वास्तविक स्थिति क्या है। वे करारे सुनहरे होते पकौड़ो को एकटक से निहारा करते और बच्चो से पूछते कि तुम्हे इसमें अपना सुनहरा भविष्य दिखाई दे रहा है या नहीं? वे बाबा दिव्य लोचन चंदनदेव की तरह थे, जो हज़ारो करोड़ का साम्राज्य खड़ा करके भी कभी उद्योगपति नहीं बन पाया क्योंकि बनना ही नहीं चाहता था। छोटे

बच्चो के साथ पकौड़ा राष्ट्र के सपने बुनने में मसरूफ रामभरोसे जी के पास अचानक मैसेज आया— तुरंत दिल्ली पहुंचिये। पॉलिटिक्स से रामभरोसे को पहले भी चिढ़ थी। इमरजेंसी के बाद उन्होने तय कर लिया था कि ज्यादातर वक्त दिल्ली से बाहर रहेगे और अपना ध्यान सिर्फ पकौड़ा क्रांति को आगे बढ़ाने पर केंद्रित करेंगे। नेता साले एक नंबर के हरामी और कुत्ते के पिल्ले होते हैं, यह बात उनके प्रिय नेता ने उन्हे बताई थी। रामभरोसे कभी दिल्ली नहीं जाते लेकिन न्यौता किसी और ने नहीं बल्कि प्रधानमंत्री ने भेजा था, जो उनके बाप से बढ़कर थे।

वह नई सरकार के गठन का जश्न था, जिसमें सभी दलों के नेताओं के अलावा, देश के प्रमुख उद्योगपति, समाजसेवी, खिलाड़ी और कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। रामभरोसे पहुंचे तो किसी ने भी पहले की तरह लपक कर उनका स्वागत नहीं किया। वे चुपचाप बैठे रहे। बड़े-बड़े लोग प्रधानमंत्री को माला पहना रहे थे, उनकी तारीफ में बड़ी-बड़ी बाते कर रहे थे। रामभरोसे को पिछले कई महीनो से लगातार यह महसूस होता था कि प्रधानमंत्री के साथ रिश्तों में पहले वाली बात नहीं रही। माना कि वो व्यस्त हैं, लेकिन व्हाट्स एप चुटकुले और प्रेरक प्रसंग तो फारवर्ड कर ही सकते थे।

आखिरकार एनाउंसमेंट हुआ... भारत में पकौड़ा क्रांति के जनक रामभरोसे जी माननीय अतिथितियों को संबोधित करेंगे। रामभरोसे अकचका गये उन्होने सोचा नहीं था कि उन्हे इस तरह अचानक भाषण देने के लिए कहा जाएगा। वे उठे, माइक तक गये और बनारसी लहजे की हिंदी में उन्होने जो कहा उसका सार यही था कि मैं एक बहुत छोटा आदमी हूं। लेकिन पीएम जी ने अपने एक आशीर्वाद से ऐसा बना दिया है कि देश के लिए कुछ काम आ सकूं। इमरजेंसी का मतलब समझ में आया तो बहुत दुख हुआ। लेकिन पीएम जी ने मेरे कहने पर एक ही बार में इमरजेंसी हटा दी, इससे पता चलता है कि हमारे नेता गरीबों की बात किस तरह सुनते हैं। वैसे नेता बिरादरी बहुत नीच होती है। पीएम जी ठीक कहते हैं— ये सब कुत्ते के पिल्ले हैं लेकिन पीएम जी महान है। आपलोग उनका हाथ मजबूत कीजिये। प्रधानमंत्री जी आखिर में सभी अतिथियों का धन्यवाद करने आये तो बोले— कुत्ते का पिल्ला एक जुमला था, इसे गलत संदर्भ में समझा जा रहा है। राजनीति में जो भी आता है, वह देशसेवा के लिए आता है, चाहे हमारा विरोधी ही क्यों ना हो। मतभेद होना चाहिए मनभेद नहीं होना चाहिए।

पूरे प्रोग्राम में रामभरोसे और पीएम जी की नज़रे एक बार भी नहीं मिली। कार्यक्रम खत्म हुआ तो एक अधिकारी ने रामभरोसे के पास आकर कहा— आप जाइयेगा मत। प्रधानमंत्री आपसे मिलना चाहते हैं। रामभरोसे को हॉल से लगी लॉबी के उस पार एक कमरे में ले जाया गया। थोड़ी देर के इंतज़ार के बाद पीएम जी आये, रामभरोसे को देखकर उन्होने एक शेर पढ़ा—

तुम अगर मुझको ना चाहो कोई बात नहीं
तुम किसी और को चाहोगे तो मुश्किल होगी

तुम किसी और को चाहोगे तो बहुत मुश्किल होगी… रामभरोसे जी...

यह शेर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने पढ़ा होता तो रामभरोसे मान लेते कि अब उनके दिन पूरे हो गये हैं। इमरजेंसी के विरोध में वैसे भी वे अपनी जेड प्लस सिक्यूरिटी भी लौटा चुके थे। लेकिन शेर स्वयं पीएम ने पढ़ा था, जो उनके ही नहीं पूरे देश के बाप हैं। रामभरोसे सीधे चरणो में गिर गये— साहेब हमको माफ कर दीजिये। मानते हैं, ज़रूर कोई ना कोई गलती हुई होगी हमसे।

पीएम ने रामभरोसे को उठाया और बहुत गंभीर आवाज़ में बोले— रामभरोसे जी गलती मुझसे हुई है। मैं लोगो के बहकावे में आ गया था। इमरजेंसी लगाने से पहले मुझे आपसे पूछना चाहिए था। मैने इस देश के प्रजातंत्र और पकौड़ो दोनो का अपमान किया है, मैं अपराधी हूं। फिर भी देश की जनता ने मुझे माफ कर दिया। कितनी महान है यह जनता और सचमुच कितने बड़े आदमी हैं आप। कृपा बनाये रखियेगा।

रामभरोसे रोने लगे लेकिन पलभर में चुप भी हो गये क्योंकि उन्हे पीएम जी ने बताया था कि आंसू नारी का श्रृंगार है, मर्दों को शोभा नहीं देता। वे बोले— बस दो चीज़ के सहारे ही जिंदगी है अपनी साहेब। एक आप और दूसरे पकौड़े। हम जब पकौड़े तलते हैं, तो उसमें आपकी शक्ल दिखाई देती है। अब हमने एक फैसला किया है। बिजनेस का पूरा जिम्मा त्रिलोकी नाथ पर छोड़ देंगे और हर शहर, हर गांव में जाकर पकौड़ा क्रांति की अलख जगाएंगे, आपके सपनों का भारत बनाएंगे। पीएम जी का भी गला भर आया था, लेकिन रोये वे भी नहीं। दूसरो को जिस काम के लिए मना करते हैं, वह काम भला वे खुद कैसे कर सकते थे। वे बोले— तुमसे मुझे बहुत उम्मीद है रामभरोसे। आज से नहीं जब मैने तुम्हे पहली बार देखा था, उसी समय कह दिया था कि मैं भी रामभरोसे हूं। पकौड़ा क्रांति से इंडियन इकॉनमी रिवाइव हुई

है। अब भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनाना है। बहुत सारा पैसा चाहिए, इसलिए मैं एफडीआई को मंजूरी दे रहा हूं, विदेशी निवेश की सीमा 49 फीसदी रखी है, ताकि पकौड़ा उद्यमों पर नियंत्रण भारतीय कंपनियों का रहे। तुम्हारा दुनिया भर में सम्मान है। जाओ और घूम-घूमकर विश्व को बताओ कि भारत की पकौड़ा इकॉनमी में कितनी संभावना है।

रामभरोसे पीएम जी से आज्ञा लेकर निकलने लगे तभी उन्होने पीछे आवाज़ दी। रामभरोसे ने मुड़कर देखा। पीएम जी के गले मे एक गंदा सा ताबीज है। वे बोले— कुछ याद आया रामभरोसे जी? ये उसी पकौड़े से बनी ताबीज है, जो मैं आपके उपासना स्थल से लेकर आया था। रामभरोसे ने बदले में पीएमजी को अपने गले की ताबीज दिखाई। पीएम ने रामभरोसे को भींच लिया। वह गुरू और शिष्य या यूं कहें कि आत्मा और परमात्मा का मिलन था। पीएम जी को शायद पता नहीं चला लेकिन रामभरोसे धीरे-धीरे रो रहा था। थोड़ी देर बाद रामभरोसे के कान में एक फुसफुसाती आवाज़ आई— तुम बहुत अच्छे आदमी हो। बस एक बात कहनी थी। बात-बात में नेताओं को कुत्ते का बच्चा मत कहा करो वो भी पब्लिकली। नेता तो मैं भी हूं, ज़रा समझा करो बात को।

बुलेट ट्रेन में कैसे बिकेंगे पकौड़े?

पूरे भारत में यह ख़बर फैल चुकी थी कि रामभरोसे प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के मैनेजमेंट से अलग हो गये हैं। उन्होने एक ट्रस्ट बना दिया है, जिसके बोर्ड में देश के कई गरीब पकौड़े वाले हैं। त्रिलोकी नाथ की योग्यता और प्रतिबद्धता को देखते हुए उन्हे कंपनी का आजीवन चेयरमैन बना दिया गया है। रामभरोसे अब सिर्फ एक मेंटॉर हैं। वे बच्चो को घूम-घूमकर पकौड़े तलना सिखाएंगे। खौलते तेल में पकौड़े डालना हवन कुंड में समिधा डालने जैसा पवित्र काम है, क्योंकि इससे भारत निर्माण हो रहा है।

सरकारी महकमे में रामभरोसे को हेय दृष्टि से देखने वाले और उनसे जलने वालों की कमी नहीं थी। अंग्रेजी मीडियम से पढ़े मंत्री, पैसे के बल पर राजनीति में आये रईस और बड़े-बड़े पावर ब्रोकर रामभरोसे को अपना दुश्मन मानते थे। ददानी और कंपानी जैसे सेठ तो उन्हे अपना जानी दुश्मन समझते थे। आखिर प्रधानमंत्री जी ने उनके मुकाबले रामभरोसे को ज्यादा भाव देना जो शुरू कर दिया था। अमेरिका राष्ट्रपति पिछली बार जब भारत आये थे तब प्रधानमंत्री आवास पर हुई दावत में कई बड़े उद्योगपतियों के नाम नदारद थे। लेकिन रामभरोसे वहां मौजूद थे। पीएम ने अपने हाथों से चाय बनाई थी और रामभरोसे ने पकौड़े तले थे। चाय पीते-पीते अमेरिका राष्ट्रपति ने पूछा— एच वन बी वीजा का कोटा और कितना बढ़ाउं.. नब्बे हज़ार बढ़ाउं कि एक लाख? पीएम सोचने लगे। इतने में रामभरोसे ने पकौड़े सर्व किये। पहला पकौड़ा मुंह में डालते ही अमेरिका राष्ट्रपति खुद बोल उठे— चलिये सीधे सवा लाख बढ़ा देता हूं।

रामभरोसे ने जब से एक्टिव कॉरपोरेट लाइफ छोड़कर अपना पूरा जीवन पकौड़ा क्रांति को समर्पित करने का एलान किया, दुश्मनों का नज़रिया उन्हे लेकर बदलने लगा। ह्रदय परिवर्तन वाली विचारधारा के रूप में पकौड़ागीरी बहुत तेजी से गांधीगीरी को रीप्लेस कर रही थी। प्रधानमंत्री ने इस नई विचारधारा को एकात्म पकौड़ावाद का नाम दिया था। फिर से सत्ता में आने के बाद उन्होने अपने सभी मंत्रियों के लिए निर्देश जारी कर दिया था कि पकौड़ा सेक्टर की बेहतरी के लिए रामभरोसे जी जो-जो बातें कहें, उनपर तत्काल अमल किया जाये। अमल कितना हो रहा है, इसकी मॉनीटरिंग के लिए पीएमओ में एक स्पेशल सेल बना दिया गया था।

पकौड़ा उद्योग से जुड़े सवालों पर चर्चा के लिए आज रामभरोसे जी वित्त मंत्री से मिलने आये थे।

वित्त मंत्री और उनके राज्यमंत्री दोनो ने खड़े होकर रामभरोसे जी का स्वागत किया। राज्यमंत्री जोश में आकर बोला— आपने कहा था कि पकौड़ा विजन डॉक्युमेंट के बल पर हमारी पार्टी चुनाव जीत जाएगी और देखिये एकदम ऐसा ही हुआ। आप तो हमारे शुक्राचार्य हैं।

वित्त मंत्री ने दांत पीसते हुए कहा— शुक्राचार्य नहीं... ये साक्षात गुरुदेव बृहस्पति हैं। शुक्राचार्य तो राक्षसों के गुरु थे। इतना भी नहीं जानते अपने इतिहास के बारे में! तुम जैसे लोगो की वजह से ही विरोधियों को हमारा मजाक उड़ाने का मौका मिलता है। अपने `इतिहास बोध' पर शर्मिंदा हुए जूनियर ने सफाई में दांत निपोर दिये। रामभरोसे को इन बातों में कोई इंट्रेस्ट नहीं था। उन्होने समस्याओं की लिस्ट गिनानी शुरू की जिनसे पकौड़ा इंडस्ट्री जूझ रही थी। कुछ सवाल आसान थे, जिनका समाधान वित्त मंत्री ने तत्काल कर दिया। जैसे— गांवो में रसोई के गैस के कनेक्शन तो मुफ्त मिल गये हैं लेकिन गैस इतनी महंगी है कि सिलेंडर भरवा नहीं सकते। वित्त मंत्री ने जूनियर से कहा— नोट करो। हम इस बजट में पकौड़ा बनाने वालों को गैस सिलेंडर पर 50 परसेंट सब्सिडी देंगे। रामभरोसे के आग्रह पर वित्त मंत्री ने बेसन, सरसो तेल और रिफाइंड ऑयल पर सब्सिडी के लिए भी हामी भर दी। आलू बोंडा, समोसा, कचौड़ी, कटलेट और बर्रा जैसे करीब 110 प्रोडक्ट्स को पकौड़े का दर्जा देने की मांग लंबे अरसे से उठ रही थी। पकौड़ा बेचने वाले कुछ लोग इस मांग का विरोध कर रहे थे और उन्होने हिंसक प्रदर्शन भी किये थे। लेकिन रामभरोसे ने इन प्रोडक्ट्स को पकौड़ा लिस्ट में शामिल करने की मांग का समर्थन किया। उनका यह कदम कुछ वैसा ही था जैसे गांधी ने हिंदुओं की नाराज़गी मोल लेते हुए पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये दिलवा दिये थे। जाट और पाटीदार ओबीसी लिस्ट में शामिल होने का इंतज़ार करते रहे लेकिन आलू बोंडा और समोसा रामभरोसे की कृपा से अब पकौड़ा बन गये।

लेकिन रामभरोसे के कुछ सवाल वित्त मंत्री के लिए बहुत जटिल थे। जैसे एक देश में एक टैक्स है तो फिर पुलिस की हफ्ता वसूली अलग क्यों है? क्या पकौड़े वाले पुलिस को चुकाये गये हफ्ते का आईटी रीफंड बाद में ले सकते हैं? इससे आगे रामभरोसे ने वित्त मंत्री से एक ऐसा सवाल भी पूछा जो अर्थव्यवस्था के प्रति उनकी गहरी समझ को दर्शाता था। उन्होने कहा कि ठीक है, रीफंड ना हो। लेकिन जो पैसे वे हफ्ते के

रूप में देते हैं, उन्हे देश की प्रति व्यक्ति आय में जोड़ दिया जाये। इससे भारत की प्रति व्यक्ति आय बढ़ जाएगी और विदेश में हमारे देश का सम्मान भी बढ़ेगा। वित्त मंत्री ने कहा कि सुझाव जटिल है लेकिन बहुत अच्छा है। इस पर गौर किया जायेगा। लेकिन वित्त मंत्री रामभरोसे के सबसे मुश्किल सवाल का जवाब नहीं दे पाये। रामभरोसे ने पूछा कि बुलेट ट्रेन इस देश में पकौड़ा सेक्टर को किस तरह मजबूती देगा? इतने बड़े प्रोजेक्ट में हमारे लोगो का क्या भला होगा?

वित्त राज्यमंत्री ने कहा कि पकौड़े वालो को भी रोजगार मिलेगा। रामभरोसे ने कहा कि ट्रेन के भीतर पकौड़े तलने की इजाज़त सुरक्षा कारणों से नहीं होगी। अगर पकौड़े बाहर से छानकर ट्रेन में लाये गये तो अंदर आते ही ठंडे हो जाएंगे। दूसरी समस्या यह कि मान लीजिये अहमदाबाद में कोई पकौड़े वाला ट्रेन में सवार होगा तो वह 200 रुपये के पकौड़े बेचते-बेचते सीधे मुंबई पहुंच जाएगा। फिर उसे अपने घर वापस भी आना पड़ेगा। एक आम पकौड़ा वाले के लिए बुलेट ट्रेन में बिजनेस की वाइबिलिटी क्या है? क्या पकौड़ा सेक्टर के लिए बुलेट ट्रेन में कोई विशेष प्रावधान नहीं होने चाहिए? वित्त मंत्री ने पानी पिया और फिर बोले— देखिये ये एक ऐसा सवाल है, जिसमें रेल मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, खाद्य मंत्रालय, नीति आयोग और पीएमओ इंवॉल्व है। हम उनके साथ एक मीटिंग करेंगे, फिर आपको अपडेट बताएंगे। रामभरोसे को सुस्ती से चिढ़ है। मगर वे सरकारी कामकाज की पेचीदगियां समझते है, इसलिए वित्त मंत्री की बात पर उन्होने अपनी सहमति जता दी।

रामभरोसे के जीवन का अब एक ही मकसद था, पकौड़ा क्रांति को नेक्स्ट लेबल तक पहुंचाना । ठेले से लेकर येल तक अपना पिछला जीवन वे भूल चुके थे। उनके लिए तो हर दिन एक नया दिन था। येल यूनिवर्सिटी में उन्हे एंटायर कुकरी साइंस में डी लिट की मानद उपाधि दी थी। लेकिन संघर्ष और शोहरत दोनो में अब उन्हे कुछ भी याद नहीं था। उन्हे याद थी तो प्रधानमंत्री की एक बात `कुछ भी करो विजन बड़ा होना चाहिए।' बड़े विजन का परिणाम यह था कि वे पकौड़े को समग्रता में देखना सीख चुके थे। पकौड़े के आर्थिक ही नहीं सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष जिस तरह रामभरोसे देख पा रहे थे, वैसा उनसे पहले किसी ने नहीं देखा था। वे अपने भाषणों में जो में जो कुछ कहते थे, उसे सेक्रेटरी सपना मल्होत्रा नोट करती जाती थी। इस इस तरह `एकात्म पकौड़ावाद' का एक आधुनिक दर्शन तेजी से आकार ले रहा था। प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के मेंटॉर बनने के बाद पकौड़े के ज़रिये सांस्कृतिक पुनर्जागरण और उसे वैश्विक स्तर पर पकौड़े को लोकप्रिय बनाना उनकी प्राथमिकताओं में सबसे उपर थे। त्रिलोकी नाथ अपने गुरु की भावनाओं को समझता

था। इसलिए इन कामों के लिए उसने 5000 करोड़ रुपये का एक कोष गठित कर दिया था। इस फंड के ज़रिये रामभरोसे जी `मेरे पास पकौड़ा है' और `कसम पकौड़े वाले की' जैसी सुपरहिट बॉलीवुड फिल्मों को प्रोड्यूस कर चुके थे। `कसम पकौड़े वाले की' फिल्म का एक डायलॉग बहुत मशहूर हुआ था— मैने आपका पकौड़ा खाया है। बहुत तेजी से अब लोग पूरे भारत में नमक की जगह पकौड़े की सौगंध खाने लगे थे। `मेरे पास पकौड़ा है' फिल्म को मशहूर डायरेक्टर निहलानी जी ने डायरेक्ट किया, जिसका एक गाना यू ट्यूब पर 50 करोड़ से ज्यादा लोग देख चुके थे —

पकौड़ा है पकौड़ा है, पकौड़ा है
कड़ाही से निकला पकौड़ा है
बोल-बोल बोल... बोल गोरी बोल
खोल-खोल-खोल... मुंह तो तू खोल
पकौड़ा है. पकौड़ा है... पकौड़ा है

अगर कैरेबियन आइलैंड्स का चटनी म्यूजिक पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो सकता है तो फिर भारत का पकौड़ा संगीत क्यों नहीं। इस गीत ने एक रास्ता दिखाया। ख़बर आई कि लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के कई हिस्सों में गुरिल्ला छापामार यह गीत आ रहे हैं और जंगलों पकौड़े तल रहे हैं।

पकौड़े से आ रहा सांस्कृतिक पुनर्जागरण सिर्फ बॉलीवुड या पॉपुलर सेगमेंट तक सीमित नहीं रहा। एक मशहूर क्लासिक सिंगर ने रामभरोसे जी को प्रस्ताव दिया कि पकौड़ा घराना शास्त्रीय संगीत का नया घराना बन सका है। उस गायक की नाक पकौड़े जैसी थी, जिसे देखने के बाद रामभरोसे जी ने कुछ और पूछताछ नहीं की और सीधे उसे इस काम के लिए 30 करोड़ रुपये दे दिये। इसी तरह कुछ लोगो ने कहा कि भोपाल के भारत भवन की हालत बहुत खराब है। अगर उसी तर्ज पर दिल्ली में पकौड़ा भवन बनाया जाये तो देश की सोई सांस्कृतिक चेतना को जगाने में बहुत मदद मिलेगी। रामभरोसे ने इस प्रस्ताव पर भी फौरन हामी भर दी।

एक दिन रामभरोसे जी से मिलने एक बहुत बुजुर्ग व्यक्ति आये। कमर झुकी हुई थी, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और सिर के बाल अजीब ढंग से खड़े थे। उन्होने बताया कि वे एक जनप्रिय साहित्यकार हैं। जिस वक्त इस देश में पकौड़े की कोई बात नहीं करता था, तब उन्होने अपनी कलम के जोर पर पकौड़ा चिंतन को स्थापित किया था। सरकारी

तंत्र की बेरूखी और सामाजिक वर्जनाओं के बावजूद उनकी पुस्तक `जीजा साली और भांग की पकौड़ी' करोड़ो लोगो द्वारा पढ़ी और सराही गई थी। पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए उन्होने इसके कई खंड लिखे थे। रामभरोसे जी हाथ जोड़कर बोले— आप लेखक हैं, हम आपकी इज्ज़त करते हैं, लेकिन हम पढ़े-लिखे नहीं हैं, इसलिए जानते नहीं है, आपको।

सेक्रेटरी ने फुसफुसकार कहा— अरे ये तो मस्तराम जी हैं। बहुत बूढ़े हो गये हैं, लेकिन इनकी कलम युवाओं में अब भी जोश भर सकती है। बहुत मशहूर थे अपने जमाने में। जब से इंटरनेट आया है इन्हे कोई पूछता भी नहीं है।

बुजुर्ग ने सिर हिलाकर हामी भरी। रामभरोसे जी सोचते रहे। टेक्नोलॉजी हमेशा फायदा नहीं पहुंचाती है, नुकसान भी करती है। फिर उन्होने अपने सेक्रेटरी से कहा — एक पेंशन फंड बना दो। जिन लोगो ने भी पकौड़े की सेवा की है, उन सबको पेंशन मिलना ही चाहिए।

अमेरिका फर्स्ट नहीं पकौड़ा फर्स्ट

जून 2023, टेक्सास, अमेरिका

अतीत के गलियारों यानी फ्लैश बैक से निकलकर रामभरोसे की कहानी अब वर्तमान में आ चुकी है। रामभरोसे पिछले चार-पांच साल में लगभग आधी सदी जितनी जिंदगी जी चुके हैं। कितना बदलाव आ चुका है, उनकी जिंदगी में। हिंदी बोलने में अंटकते थे। अब अंग्रेजी फर्राटे से बोलते हैं। लेकिन जब अपने लोगो के बीच होते हैं तो बनारसी बोली वापस लौट आती है। उनकी सेक्रेटरी सपना फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश और पुर्तगाली जानती हैं। तो इस तरह दुनिया भर से संवाद करने में रामभरोसे को कोई कठिनाई नहीं होती है। आधी से ज्यादा दुनिया के लोग पकौड़ामैन ऑफ इंडिया को सामने से देख चुके हैं.. एकदम लाइव। आखिर क्यों करते हैं, रामभरोसे इतना ट्रैवल? इसका जवाब रामभरोसे जी को देने की ज़रूरत नहीं है।

जवाब इंडियन इकॉनमी के आंकड़े देती है। दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है, जिसकी जीडीपी पांच साल में तीन-गुना बढ़ी हो। आज़ादी के 75 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ जब भारत का विदेशी मुद्रा भंडार चीन को पार कर गया है। ग्रोथ रेट लगातार 14 परसेंट चल रहा है और पूरी दुनिया के इनवेस्टर लाइन लगाकर भारत के दरवाज़े पर खड़े हैं। प्रधानमंत्री जी से किया गया अपना वादा रामभरोसे पूरा कर रहे हैं। एफडीआई केवल पकौड़े में नहीं आ रहा है, उसके पीछे-पीछे एग्रो प्रोडक्ट्स, रीटेल और लॉजिस्टिक्स में भी आ रहे है। पकौड़े की लोकप्रियता की वजह से जिम वालों की भी चांदी है। फिटनेस को लेकर क्रेज बढ़ रहा है तो देश में स्पोर्ट्स कल्चर भी बढ़ रहा है। ओलंपिक में भारत एक ब्रांज मेडल के लिए तरसता था। लेकिन अब अपना देश सबसे ज्यादा गोल्ड मेडल जीतने वाले पांच देशों की लिस्ट में शामिल है। पकौड़ा रेस अब ट्रैक एंड फील्ड में हंड्रेड मीटर रेस के बाद ओलंपिक का सबसे पॉपुलर इवेंट है। प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के नये चेयरमैन त्रिलोकीनाथ ने देश के सभी स्पोर्ट्स लीग को खरीदकर उन्हे एक बैनर के तले ले आये है, जिसका नाम है आईपीएल। यानी इंडियन पकौड़ा लीग।

भारत में तरक्की हर क्षेत्र में हो रही है, लेकिन तरक्की का इंजन पकौड़ा है। पकौड़ा आगे-आगे और बाकी सब पीछे-पीछे। वेबस्टर डिक्शनरी ने पकौड़े की परिभाषा

कुछ इस तरह लिखी है— एन इंडियन स्नैक विच ट्रांसफॉर्म्ड द वर्ल्ड इनवेंटेडे बाय ए परसन कॉल्ड रामभरोसे। रामभरोसे जी ज्यादा पढ़े-लिखे आदमी नहीं हैं। लेकिन किसी ने उन्हे वेबस्टर्स डिक्शनरी वाली बात बताई तो दुखी हो गये। ठीक है पकौड़े ने दुनिया बदली है। लेकिन इसकी खोज उन्होने नहीं की है। यह तो भारत में सदियों से खाया जाता है। फिर भी अगर किसी को क्रेडिट देना ही था, तो परधान जी को देते। बाद में वेबस्टर ने अपनी भूल सुधार कर ली।

अमेरिका को जब दुनिया भर में अपने माल बेचने के लिए मार्केट की ज़रूरत थी, तब उसने ग्लोबलाइजेशन का नारा दिया। बीस साल बाद यह लगा कि ग्लोबलाइजेशन से फायदा अमेरिका को नहीं बाकी दुनिया को भी हो रहा है, तो नया नारा आ गया— अमेरिका फर्स्ट। लेकिन पकौड़ामैन ऑफ इंडिया अमेरिका की इस दोहरी नीति को ध्वस्त करने के लिए कृतसंकल्प है। आज न्यूयार्क टाइम्स के फ्रंट पेज की बॉटम स्टोरी यही है। मेक्सिको में पकौड़ा वर्कशॉप करवा कर रामभरोसे जी टेक्सास आये हैं। मेक्सिको में वर्कशॉप ही नहीं हुआ बल्कि उसके फौरन बाद भारतीय पकौड़ा कंपनियों ने तीन बिलियन डॉलर के निवेश का एलान भी कर दिया। इससे एक मोमेंटम क्रियेट हो चुका है। दूसरे क्षेत्रों से जुड़ी बाकी मल्टी-नेशनल कंपनियां भी तेजी मेक्सिको आएंगी। मेक्सिको की इकॉनमी सरपट दौड़ेगी और उसका सेहरा रामभरोसे यानी भारत के सिर बंधेगा। मेक्सिको से माइग्रेशन रूकेगा और अमेरिका को सस्ते मजदूर मिलने बंद हो जाएंगे। अमेरिका परेशान है लेकिन पूरी दुनिया में रामभरोसे जी की वाहवाही हो रही है। न्यूयार्क टाइम्स ने अपने लेख में यह सब विस्तार से लिखा है। अख़बार ने अमेरिका की आर्थिक नीति और विदेश नीति पर तीखे सवाल उठाते हुए उसे भारत से सीखने की नसीहत दी है। लेख में कहा गया है कि अमेरिका फर्स्ट की जगह पकौड़ा फर्स्ट की नीति अपनाई गई होती तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में उनका देश इस तरह नहीं फिसलता।

टेक्सास से रामभरोसे जी को कोलंबिया जाना है। एक ऐसा देश जो लंबे समय तक ड्रग माफिया की चपेट में रहा। हज़ारो नौजवान मौत की नींद सो गये। गरीबी बहुत ज्यादा है। अशिक्षा भी है। यानी पकौड़ा उद्योग के फलने-फूलने के लिए कोलंबिया एक आदर्श जगह है। कोलंबियन प्रेसिडेंट लंबे अरसे से रामभरोसे जी तशरीफ लाने का आग्रह कर रहे थे। आखिर वह समय आ ही गया है। इधर भारत में प्रधानमंत्री रामभरोसे की यात्रा को लेकर परेशान हैं। उन्हे रामभरोसे की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता से ईर्ष्या नहीं है। वे तो भारत की आन-बान और शान पकौड़ा किंग की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। रामभरोसे दुनिया में जहां भी जाते हैं, प्रधानमंत्री दूतावास

को पहले आगाह कर देते हैं कि स्थानीय अधिकारियों से बात करके सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करें। लेकिन रामभरोसे अब एकदम गांधी हो गये हैं। डर नाम की कोई चीज़ ही नहीं है, उनके मन में। प्रधानमंत्री के सुझाव को ठुकराकर वे सीरिया और यमन की यात्रा कर चुके हैं। सीरिया में तो वे अपने साथ आध्यात्मिक गुरू श्री श्री भवानी शंकर को भी ले गये थे। गोलियों की बौछार के बीच रामभरोसे जी ने पकौड़े तले। कई लोगो ने बंदूके फेंक दी और उनके आशीर्वाद से बेसन फेंटने लगे। कैमरे के सामने बंधकों का गला काटने वाले श्रद्धाभाव से पकौड़े के लिए प्याज काटने लगे। यह सब देखकर श्री श्री भवानी शंकर ने भारत को भी सीरिया बनाने का संकल्प लिया। लेकिन रामभरोसे के इस प्रयास के बावजूद सीरिया और यमन में अब भी पूरी तरह शांति नहीं आ पाई है। दुनिया अगर इतनी आसानी से बदल जाती तो फिर कहना ही क्या था।

भारत का नर्क भी स्वर्ग है

रामभरोसे अब एक जीती-जागती किंवदंती बन चुके हैं। सिर्फ चार-पांच साल में पकौड़ा इकोनॉमी ने भारत को इस तरह बदला कि देशवासियों के लिए टैक्स देने की ज़रूरत खत्म हो गई। उल्टे बेरोजगारी भत्ता इतना मिलने लगा कि अगर कोई नौजवान चाहे तो वह जिंदगी भर बिना कुछ किये म्यूज़िक सुनना या पेंटिंग बनाना अफोर्ड कर सकता है। लेकिन बेरोजगारी भत्ता लेने वाले नौजवान बहुत कम हैं। पकौड़ा इंडस्ट्री और उसके प्रभाव से पैदा हुई ढेर सारी दूसरी संभावनाओं ने उनके लिए विकल्पों के अंबार लगा दिये हैं, फिर भला वे बेरोजगार क्यों रहें? 2018 तक वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स यानी खुशहाली के अंतरराष्ट्रीय सूचकांक में भारत 156 वें नंबर पर था, अब वह आठवें नंबर पर हैं। सिर्फ चंद यूरोपीय देश ही भारत से आगे हैं।

भारत के कई शहरो में बड़े-बड़े पकौड़ा थीम पार्क भी खुल गये हैं। ये पार्क आकार और टेक्नोलॉजी के मामले में डिज़्नीलैंड से भी मीलो आगे हैं। पार्क ऐसे हैं कि वहां पहुंचते ही इंसान खुद को पकौड़ा मानने लगता है। ज्वॉय राइड पर जानेवाला व्यक्ति सबसे पहले एक विशालकाय बेसन कुंड में गिरता है। बेसन में कई तरह की आर्युवेदिक जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जो त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद हैं। व्यक्ति बेसन के घोल में तैर रहा होता है, तभी एक बड़ा चम्मच नुमा क्रेन आता है और घोल में गिरे लोगो को एक-एक करके उठाता है। ये सभी लोग एक दैत्याकार कड़ाहे में फेंक दिये जाते हैं। बाहर से देखने में ऐसा लगता है कि कड़ाहे में गर्मागर्म तेल खौल रहा है। कड़ाहे में फेंके जानेवाले लोगो के मुंह से चीख निकलती है। दर्शक मान लेते हैं कि अंदर फेंके गये लोग अच्छी तरह फ्राई हो रहे हैं। लेकिन दरअसल ये एक तरह का ऑप्टिकल इल्यूज़न यानी दृष्टि भ्रम है। भीतर गये लोग परम आनंद में हैं, क्योंकि कड़ाह में गर्मी नहीं शीतलता है। वे लाइफ जैकेट पहने मजे से तैर रहे हैं। जब ये लोग बाहर निकाले जाते हैं तब धुलकर एकदम साफ-शफ्काक हो चुके होते हैं। फिर उन्हे चाय के साथ अलग-अलग फ्लेवर वाले गर्मागर्म पकौड़े सर्व किये जाते हैं। पिछले साल हुए ग्लोबल इंटरनेट सर्वे में वडनगर के पकौड़ा थीम पार्क को विश्व का सबसे क्रियेटिव पार्क करार दिया गया था। इंग्लैंड के मशहूर इंडस्ट्रियलिस्ट रिचर्ड ब्रैनसन ने थीम पार्क के विजिटर बुक में लिखा है— हिंदू माइथोलॉजी में यह मान्यता है कि दुष्टात्माओं को खौलते तेल में पकाया जाता है। मुझे वडनगर के पकौड़ा थीम

पार्क में फ्राई होकर होकर बहुत मज़ा आया। इन भारतीयों का नर्क ऐसा है तो फिर स्वर्ग कैसा होगा? अब तो यहां का नर्क भी स्वर्ग है।

सचमुच स्वर्ग बन चुका है यह देश और स्वर्गवासियों के बीच प्रधानमंत्री की लोकप्रियता उफान पर है।पांच साल की उपलब्धियां इतनी कि गिनने वाला थक जायें। जिन गांवों तक पहुंचने के लिए गाड़ी से उतरकर पांच किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है, वे गांव भी सोलर एनर्जी से प्रकाशमान हैं। फाइव जी नेटवर्क इन गांवों में बिना रुकावट काम करते हैं और सबसे बड़ी बात— प्रजातंत्र पकौड़ा लिमिटेड के आउटलेट हर गांव में हैं। सिर्फ पकौड़ा ही नहीं साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी बहुत तरक्की हो चुकी है। अब ऐसे ऐप बन चुके हैं कि कोई अगर खुले मेनहोल में गिरे तो घर वालों को फौरन पता चल जाये। ऑपरेशन थियेटर में मरीज की बायीं टांग की जगह अगर डॉक्टर गलती से दायीं टांग में चीरा लगा दे तो अलार्म ज़ोर-ज़ोर से बजने लगे। विकास के ऐसे सैकड़ो उदाहरण हैं।

इन सबसे बड़ी यह थी कि देश की जनता का माइंड सेट अब पूरी तरह पॉजेटिव हो चुका है। इसके दो बड़े सबूत हैं। पहला यह कि समाज में अब कोई पॉलिटिक्स की बात नहीं करता। पूरा देश खा-पीकर मस्त है। दूसरा बड़ा सबूत यह है कि विपक्ष का ह्रदय परिवर्तन हो चुका है। लोकसभा का टर्म पूरा होने को है लेकिन विपक्ष इस देश में चुनाव के लिए तैयार ही नहीं है। नेता प्रतिपक्ष ने दलील दी है कि देश समृद्धि की वजह से पकौड़े की तरह फूलकर कुप्पा है और यह सब प्रधानमंत्री जी की वजह से हुआ है। फिर चुनाव किसलिए? पीएम एक संविधान संशोधन लाकर अपना कार्यकाल कम से कम दस साल बढ़वा लें, विपक्ष पार्लियामेंट में इस संशोधन का पुरजोर समर्थन करेगा। प्रधानमंत्री को याद आया जब पिछली बार उन्होने लोकतंत्र को बचाने के लिए उसे लॉकर में रखा था। इस बार लोकतंत्र फिर से खतरे में है। भला चुनाव के बिना लोकतंत्र कहां? प्रधानमंत्री इस बात पर अड़ गये कि चुनाव तो होकर रहेगा। उधर ऑपोजीशन लीडर ने धमकी दे दी कि अगर आप दोबारा चुनाव शब्द भी अपनी जुबान पर लाये तो हम आपके घर के बाहर अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठ जाउंगा। एक विपक्षी सांसद ने लोकसभा में प्राइवेट मेंबर बिल लाने की कोशिश की, जिसमें मौजूदा सरकार का कार्यकाल अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाये जाने का प्रस्ताव था। लेकिन सरकारी पक्ष के सांसदों ने बिल पेश होने से पहले ही उसे छीनकर फाड़ दिया। उसके बाद दोनो पक्षों के बीच मार-कुटाई हो गई। सत्ता पक्ष कह रहा था कि हम लोकतंत्र बचाना चाहते हैं, विरोधी पार्टी कह रही थी कि हम भी लोकतंत्र बचाना चाहते हैं क्योंकि प्रधानमंत्री ही असली लोकतंत्र हैं।

मामला उलझता देखकर पीएम अपने चाणक्य की शरण में गये। पार्टी अध्यक्ष ने हंसते हुए कहा— पकौड़े का मुद्धा भुनाने के लिए कहां तो वे लोग अपना नाम बदलकर यूनाइटेड पकौड़ा एलायंस रखने को तैयार थे, अब चुनाव लड़ने को राजी नहीं है। उन्हे भय है कि अगर खाता भी नहीं खुला तो क्या होगा। आप उन्हे लड़ने के लिए राजी करवाइये हम उन्हे 20-30 सीटे ऐसे ही दे देंगे। प्रधानमंत्री प्रस्ताव लेकर विपक्ष के पास गये। विपक्षी नेता ने कहा कि हम हार से नहीं डर रहे हैं, सवाल सिद्धांतों का है। जब आप इस इस देश के सर्वमान्य नेता हैं तो फिर चुनाव क्यों हो? आखिरकार बड़ी मुश्किल से पीएम ने लोकतंत्र की दुहाई देकर विपक्ष को चुनाव लड़ने के लिए मनाया। तारीखों के एलान के बाद चुनाव प्रचार शुरू हो गया। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में यह पहला मौका था, जब विपक्षी नेता भी सरकार का खुलकर प्रचार कर रहे थे। विपक्षी नेता कह रहे थे कि हमारी बदकिस्मती कि ये हमे आज़ादी के फौरन बाद नहीं मिले। अगर नेहरू के बदले यही देश के प्रधानमंत्री होते तो देश की स्थिति कुछ और होती। तब आज ना तो लोकतंत्र की ज़रूरत होती और ना विकास की, क्योंकि दोनो उपलब्धियां उसी वक्त प्राप्त कर ली गई होतीं।

प्रधानमंत्री जी ने भी चुनाव प्रचार में बड़ा दिल दिखाया। उन्होने कहा कि ये लोग विपक्ष में हैं लेकिन इन्हे हल्के में मत लीजिये। राष्ट्रप्रेम की भावना इनमें बहुत ज्यादा है, भले ही वो मेरे मुकाबले एक प्रतिशत भी ना हो। इनकी बात सुनिये और ठीक लगे तो इन्हे ज़रूर वोट ज़रूर दीजिये। लोकसभा के पिछले चुनाव में दोनो गठबंधनो ने मतदाताओं को जमकर पकौड़े खिलाये थे। उस समय पकौड़ा क्रांति की शुरुआत थी, उसका प्रतीकात्मक महत्व था। साथ ही पकौड़े खिलाने से तकनीकी तौर पर किसी कोड ऑफ कंडक्ट का उल्लंघन नहीं होता था। इस बार इन बातों की ज़रूरत नहीं है। चमकता-दमकता स्वर्ग से सुंदर देश जनता के सामने है।

पहले राउंड की वोटिंग पूरी हो गई। चुनावी गहमा-गहमी के बीच लोग यह भूल गये थे कि राष्ट्र ऋषि रामभरोसे जी कहां हैं और क्या कर रहे हैं? बीच-बीच में अंतरराष्ट्रीय न्यूज़ एजेंसियां कभी उनके साइप्रस, कभी मोरक्को और कभी ट्यूनीशिया में होने की ख़बरें देती रहती थीं। एक ख़बर यह भी आई थी कि उत्तर कोरियाई तानशाह किम जोंग ने ट्वटीट किया है कि वह भी अपने देश में भारत जैसी पकौड़ा क्रांति चाहता है। जोंग ने लिखा था— अगर हमें पकौड़े बनाना आता, तो हम न्यूक्लियर मिसाइले क्यों बनाते? रामभरोसे जी ने उत्तर दिया- बिना प्रजातंत्र के अच्छे पकौड़े नहीं बनते। तुम प्रजातंत्र ले आओ, उत्तर कोरिया में पकौड़ा क्रांति मैं ले आउंगा। दुनिया भर, खासकर तीसरी दुनिया के कई बड़े नेताओं ने रामभरोसे के ट्वीट को रीट्वीट किया

था। अमेरिका की खुफिया एजेंसी सीआईए का कहना है कि सेंसरशिप के बावजूद रामभरोसे का ट्वीट चोरी-छिपे उत्तर कोरिया के लोगो के बीच शेयर किये जा रहे हैं और ताज्जुब नहीं अगर अगले दो-चार महीने में जनता डिक्टेरशिप के खिलाफ सड़क पर आ जाये।

इन सबके बावजूद रामभरोसे से जुड़ी ख़बरें भारतीय मीडिया में उस तरह से कवर नहीं हो रही थीं, जैसे पहले होती थीं। किसी को पता भी नहीं चला कि कि रामभरोसे सूडान, मिस्र, इराक और ईरान होते हुए कब अफगानिस्तान जा पहुंचे हैं। अफगानिस्तान में रामभरोसे का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। अफगान राष्ट्रपति ने रामभरोसे को बर्र-ए-सगीर यानी उप-महाद्वीप का सबसे बेशकीमती नगीना बताया। रामभरोसे काबुल में नहीं रुके। वे कंधार, गजनी और हेरात जैसे शहरों में गये। बामियान में उन्होने खंडित बौद्ध प्रतिमाओं के सामने पकौड़े तले। टूटी हुई प्रतिमा की शक्ल वाले पकौड़े, खंडित होकर भी पकौड़ो की शक्ल मुस्कुराते बुद्ध! न्यूज़ एजेंसी एएफी ने तस्वीरें रीलीज़ की और यह लिखा कि पकौड़ा क्रांति का एक कलात्मक पक्ष भी है, जिसे दुनिया अब त नज़रअंदाज़ करती आई है। चुनाव में व्यस्त भारतीय मीडिया ने इस ख़बर पर भी ध्यान नहीं दिया। मीडिया को क्या पता था कि उन्हे रामभरोसे से जुड़ी एक ऐसी ख़बर चलानी पड़ेगी जिसकी उन्होने सपने में भी कल्पना नहीं की थी।

पाकिस्तान बनेगा पकौड़िस्तान

24 मार्च 2024

बनारस के गदोलिया में भजिया भवन से एक चीत्कार उठी और पूरा देश हिल गया। भजिया भवन जिसे रामभरोसे जी ने अपनी पत्नी परमरेसी देवी के लिए बनवाया था। भजिया भवन नाम रखे जाने के दो कारण थे। पहल यह कि `भ' से `भ' मिलता था जो सुनने में अच्छा लगता था। लेकिन यह सबसे बड़ा कारण नहीं था। सबसे बड़ा कारण यह था कि भारत के कई हिस्सों में पकौड़े को भजिया कहते हैं। प्रधानमंत्री औपचारिक रूप से पकौड़े को पकौड़ी कहा करते हैं और जब बेतकल्लुफ होते थे तो भजिया। भजिया भवन नामकरण के पीछे की मंशा अपने गुरू के प्रति आदर जताना था। इसी आलीशन भजिया भवन में परमेसरी देवी पिछले कई साल से मीराबाई जैसा जीवन व्ययीत कर रही थीं।

...हाय रे दैय्या... हे देवी मैय्या
कहां चल गये इ हमके छोड़ के...

रामभरोसे ने परमेसरी देवी का त्याग छह साल पहले कर दिया था। पड़ोसनो से बातचीत में परमसेरी देवी कभी-कभी अपने दुख का बयान कर रो पड़ती थी। लेकिन ऐसा बुक्का फाड़ विलाप उन्होने कभी नहीं किया था। उनका मुंहबोला भतीजा विनोद तीन मकान छोड़कर रहता है। सुबह-सुबह उसने मातमी आवाज़े सुनी तो पायजामा और बनियान में ही बुआ के घर की तरफ भागा। वहां का मंज़र देखकर विनोद सन्न रह गया। करीब बीस औरतें परमसेरी देवी को घेरकर बैठी थी। परमसेरी देवी सिर धुन रही थीं— ई का कइलह हो भगवान...

अचानक मुहल्ले की एक तंदुरुस्त औरत सिल-बट्टे का पत्थर हाथ में लिये भागी-भागी आई और परमेसरी देवी की तरफ बढ़ी। विनोद के चाचा ने इशारा किया... ह... ह... ई कर थऊ भउजी?

इनकर चूड़ी ना तोड़ाई का?

अरे रुकिये दिमाग खराब हो गया का आपलोग का। पहिले खबर कनफर्म तो होने दीजिये— विनोद के चाचा गुस्से में बोले।

ख़बर कहीं से भी कनफर्म नहीं हो रहा थी, लेकिन हवाइयां सबके चेहरे की उड़ी हुई थी। प्रधानमंत्री अपने सारे चुनावी कार्यक्रम बीच में छोड़कर दिल्ली लौट आये थे। गृह मंत्री ने पूरी रात बिना सोये गुजारी थी। विदेश मंत्रालय अफगान सरकार के नियमित संपर्क में था। लेकिन पता कुछ भी नहीं चल रहा था। शक की सुई पाकिस्तान पर थी। लेकिन पाकिस्तान सरकार ने हमेशा की तरह टका सा जवाब दिया है— भारत बिना सोचे समझे हर बात इल्जाम पर हम पर मढ़ देता है। हमें फिर बैनल अक्कामी सतह पर बदनाम करने की कोशिश की जा रही है, ये हम हर्गिज बर्दाश्त नहीं करेंगे।

इधर प्रधानमंत्री ने रक्षा मंत्री से साफ-साफ कह दिया है —पाकिस्तान को इस बार ऐसा सबक सिखाना होगा कि उसकी सात पुश्ते याद रखें। लेकिन हमारी पहली चिंता रामभरोसे जी की सलामती है। कोई अपडेट है किसी के पास?

बैठक में मौजूद विदेश मंत्री ने सिर झुकाकर जवाब दिया— अपडेट है लेकिन अच्छा नहीं है। पाकिस्तान के खूंखार आतंकवादी संगठन तरहीक-ए-तालिबान ने रामभरोसे को अगवा करने का दावा किया है। संगठन ने न्यूज़ चैनल अल-ज़जीरा को एक वीडियो भेजा है। अल-ज़जीरा इस वीडियो का प्रसारण आज शाम छह बजे करने वाला है। प्रधानमंत्री ने घड़ी देखी, छह बजने में तो सिर्फ 25 मिनट बाकी हैं। उन्होने कहा— अल-जजीरा ट्यून कीजिये। मैं आता हूं थोड़ी देर में।

प्रधानमंत्री दूसरे कमरे में चले गये। आस्था उनके लिए नितांत व्यक्तिगत चीज़ है। धर्म के सार्वजनिक प्रदर्शन से उन्हे नफरत हैं। उन्होने आंखे बंद की। महामृत्युंजय, द्वारिकाधीश, बाबा बद्री विशाल और केदारनाथ को याद करने के बाद उन्होने अपनी ताबीज निकाली और सचिदानंद पकौड़ेश्वरनाथ भगवान की प्रार्थना में जुट गये। वही पकौड़ेश्वरनाथ जिनका मंदिर बनवाने के लिए विपक्ष ने दंगे-फसाद कराये थे। प्रधानमंत्री की प्रार्थना यह बता रही थी कि सच्ची आस्था और धर्म की राजनीति मे क्या फर्क होता है।

ठीक पांच बजकर 59 मिनट पर प्रधानमंत्री उस हॉल में पहुंचे जहां सरकार के वरिष्ठ मंत्री और अधिकारी अल-ज़जीरा के प्रसारण का इंतज़ार कर रहे थे। ब्रेकिंग न्यूज़ कैप्शन के साथ अल-जज़ीरा चैनल के एंकर ने घोषणा कि— तहरीक-ए-तालिबान का कहना है कि उसने जो किया उसे उसका अफसोस है। लेकिन इसके अलावा

उनके पास कोई और रास्ता नहीं था। तालिबान ने हमें जो वीडियो भेजा है, अब हम उसे आपको बिना एडिट किये पूरा दिखा रहे हैं।

वीडियो शुरू हुआ। पहले ही शॉट में एक मुजाहिदीन मशीनगन से गोलियां बरसा रहा था। विदेश मंत्री ने आंखें बंद कर ली। रक्षा मंत्री की आंखों में आंसू थे क्योंकि इसके बाद रामभरोसे जी का क्षत-विक्षत शव दिखाई देनेवाला था। लेकिन प्रधानमंत्री एकदम स्थितप्रज्ञ थे, महाभारत के पार्थसारथी की तरह। अपरिमित हिंसा और असंख्य शव मानव जाति का इतिहास रहे हैं। नियति पर किसी का कोई वश नहीं है। जो होना है, वो होकर रहेगा। आत्मा ना तो कभी जन्म लेती है, ना कभी मरती है। रामभरोसे का शरीर मर सकता है लेकिन अगर पकौड़ा क्रांति की हानि हुई तो सचिदानंद जगदगुरू पकौड़ेश्वरनाथ फिर से किसी ने शरीर में जन्म अवश्य लेंगे।

प्रधानमंत्री के चिंतन में थोड़ा खलल पड़ा जब कैमरा थोड़ा और पैन हुआ। नौजवान आतंकवादी हवा में इस तरह गोलियां चला रहे थे मानो पकौड़ा पुरुष रामभरोसे की निर्मम हत्या का जश्न मना रहे हों, जंगली कहीं के! लेकिन यह क्या, जब कैमरा पूरी तरह वाइड शॉट में आया तो दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अल-ज़जीरा चैनल देख रहे करोड़ो लोगो के मुंह एक साथ खुल गये। काश मुंह की तरह दुनिया अपने दिल और दिमाग़ भी खोल देती! रामभरोसे जी तख्त-ए-ताउस जैसी एक कुर्सी पर विराजमान थे। पीछे पॉपुलर पकौड़ा ट्रैक...`पकौड़ा है पकौड़ा है. पकौड़ा है'... बज रहा था। जिन कंधों पर रॉकेट लांचर होते थे, उनमें चाय की केतलियां थीं और ट्रे में पकौड़े थे। जंगजू रामभरोसे को घेरकर नाच रहे थे। दूसरी तरफ ऐसे लोग भी थे जो लाइन लगाकर रामभरोसे से मिलने आ रहे थे और उनकी कदमबोसी कर रहे थे।

इसके बाद तहरीक-ए-तालिबान का कमांडर कैमरे के सामने आया और बोला— आलमी बिरादरी कान खोलकर सुन ले। हम ये मानते हैं कि हमने जो किया है, वो गुनाह-ए-अज़ीम है। फिर भी बहुत हसीन है। इस गुनाह में केवल हम अकेले नहीं बल्कि सूबा ए सरहद की तमाम लड़ाकू तंजीमे शरीक हैं। बारिश, धूप और हवा के झोंके की तरह जनाब रामभरोसे भी इस कायनात को अल्लाह की नेमत हैं। इसलिए उनपर भी हमारा भी बराबर का हक़ है। हमें इन्हे इस तरह नहीं लाना चाहिए था लेकिन अगर हम अफगान हुकूमत से दरख्वास्त करते कि रामभरोसे जी को हमारी मेहमाननवाज़ी कुबूल करने दो क्या वे मान जाते? क्या हुकूमत ए हिंद जनाब रामभरोसे की इसकी इजाज़त देती? दुनिया वालों तुम्हे मालूम नहीं कि रामभरोसे जी की अहमियत हमारे लिए क्या है।

दुनिया में कोई ऐसा मुजाहिदीन फिरका नहीं है, जो हम जैसी मुश्किल जंग लड़ रहा हो। दिन में आसमान से बम बरस रहे हैं और रात को ड्रोन कहर बनकर टूट रहे हैं। एक तरफ पाकिस्तान फौज़ हमारी जान की दुश्मन है तो दूसरी तरफ अफगान आर्मी खून ही प्यासी है। इन खाइयों और गुफाओं में अल्लाह के नाम अलावा दो ही चीज़ें हमारे जीने का सहारा हैं— वो पकौड़े जो हमने जनाब रामभरोसे के यू ट्यूब वीडियो देखकर बनाने सीखे और दूसरी वो मौसिकी जो रामभरोसे जी की फिल्मों में हुआ करती है— पकौड़ा है.. पकौड़ा है... पकौड़ा है... वल्लाह क्या रूहानी धुन है। इसलिए अगले 15 दिन रामभरोसे जी हमारे मेहमान होंगे। हमने उनसे पकौड़े बनाने की नई तरकीबे सीखेंगे और उसके बाद बरास्ता पाकिस्तान उन्हे बाइज्जत वापस भेज देंगे।

हमारे उस्ताद कहा करते थे, पश्तो पुख्तो लब्ज से बना है। पकौड़ा भी पुख्तो से बना है। हमारा हिंद से और पकौड़ो से गहरा रिश्ता है। इंशा अल्लाह हम आज़ाद होंगे और रामभरोसे जी को फिर से अपने वतन में बुलाएंगे। अगवा करके नहीं शाही मे मेहमान बनाकर और इंकलाब- ए -पकौड़ा के ज़रिये उनसे अपनी गुरबत दूर करवाएंगे। एक आखिरी बात जो सबसे अहम है.. अब हमारे नये मुल्क का नाम अब पख्तूनिस्तान नहीं बल्कि पकौड़िस्तान होगा। उसके बाद जंगुओं ने नारे लगाने शुरू कर दिये—

अल्लाह का एक ही फरमान
पकौड़िस्तान पकौड़िस्तान

कांफ्रेंस हॉल में अल-ज़जीरा देख रहे तमाम मंत्री और अफसरों की जान में जान आई। पीएम ने धीरे अपने गले की ताबीज निकाली और उसे माथे से लगाया । पास बैठे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने प्रिय चेले यानी उस मेहनती लड़के के कान में कहा— पूरे देश में चुनाव चल रहे हैं, ऐसे में अचानक ये नौटंकी कहां से आ गई?

लेकिन यह वह नौटंकी नहीं थी बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक बहुत बड़ी सामरिक और कूटनीतिक हलचल की आहट थी। स्वेज नहर संकट और क्यूबा में मिसाइलों की तैनाती जैसा ही मामला था— रामभरोसे का अपहरण। जो पाकिस्तान अब तक डिफेंसिव था, उसने अचानक अपने सुर बदल लिये। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय चीखने लगा— रामभरोसे रॉ का एजेंट है। वीडियो देखकर साफ पता चलता है कि वह तहरीक-ए-तालिबान के दहशतगर्दों को ट्रेनिंग देने हमारे इलाके में आया है

ताकि सूबा-ए-सरहद में तश्दुद की कार्रवाइयां तेज़ हो सकें। पाकिस्तान इसका मुंहतोड़ जवाब देगा। तालिबान पर ड्रोन हमले बढ़ाये जाएंगे साथ ही हर इंटरनेशनल फोरम पर हिंदुस्तान को भी बेनकाब किया जाएगा।

भारत ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान सरकार रामभरोसे जी की सकुशल रिहाई सुनिश्चित करे। वे पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन द्वारा बंदी बनाकर अफगानिस्तान से पाक लाये गये हैं, लिहाजा रिहाई का जिम्मा भी वहां की हुकूमत का है। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से भी ऐसी ही मांगे उठने लगी। संयुक्त राष्ट्र ने प्रस्ताव पारित करके रामभरोसे को अगवा किये जाने की निंदा की और उन्हे फौरन छोड़ने की अपील जारी की। इधर भारत में दो राउंड की पोलिंग बाकी थी। विपक्ष ने देखा की रामभरोसे के अपहरण को लेकर देश की जनता में भारी गुस्सा है, तो उसने अपनी रणनीति बदल दी। जो विपक्ष चुनाव ना करवाने और प्रधानमंत्री को कायम रखे जाने की मांग कर रहा था, उसने रामभरोसे की सुरक्षा पर सरकार को घेरना शुरू कर दिया। विपक्ष ने कहा कि यह भारत सरकार की सामरिक, कूटनीतिक और नैतिक विफलता है। अगर रामभरोसे जी को कुछ भी हुआ तो देश प्रधानमंत्री को कभी माफ नहीं करेगा।

उधर पाकिस्तान में एक अलग डेवलपमेंट हुआ, जिसपर यकीन कर पाना मुश्किल था। लाहौर, कराची और पेशावर की सड़कों पर हज़ारो लोग हाथो में तख्तियां थामे निकल आये जिनपर लिखा था— अमन के फरिश्ते रामभरोसे को रिहा करो। सिविल सोसाइटी के लोग मांग कर रहे थे कि पाकिस्तान सरकार तहरीक-ए-तालिबान के खिलाफ कड़े कदम उठाने से बचे वर्ना रामभरोसे की जान को खतरा पैदा हो जाएगा। लाहौर में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर लाठी चार्ज किया और देशद्रोह के इल्जाम में सैकड़ों लोग गिरफ्तार कर लिये गये। इसके बाद हालात बेकाबू होने लगे। क्वेटा से यह ख़बर आई कि कुछ लोगो ने जुलूस निकाला है, जिसमें नारे लगे हैं.. पूरा पाकिस्तान अब बनेगा पकौड़िस्तान। आर्मी ने गोली चलाई और 6 लोग हलाक हुए।

शाम को पाकिस्तान के जियो टीवी पर एक डिबेट चल रहा था, जिसमें शामिल ज्यादातर स्पीकर कह रहे थे कि रामभरोसे जी पकौड़ा क्रांति के ज़रिये जिस तरह हिंदुस्तान और दुनिया के एक बड़े हिस्से में इंकलाब लाने में कामयाब हुए हैं, उससे पाकिस्तानी आवाम बहुत मुतासिर है। अगर पाकिस्तान बनेगा पकौड़िस्तान नारे लग रहे हैं तो इस पर नाराज़ होने के बदले यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि लोगो के जेहन में क्या चल रहा है। आवाम भी मानती है कि पाकिस्तान एक नाकाम

मुल्क है। इसलिए अगर वह पकौड़िस्तान बन भी जाये तो कोई हर्ज नहीं। ये डिबेट अभी खत्म भी नहीं हुआ था कि अचानक कुछ फौजी टीवी स्टूडियों में घुस आये। उन्होने एंकर और पैनलिस्ट्स को पकड़ लिया। पकड़े जाने से पहले एंकर ने भी कहा— पाकिस्तान बनेगा पकौड़िस्तान।

एटम बम नहीं पकौड़े चाहिए

पाकिस्तान में हालात बेकाबू हुए तो आईएसआई और आर्मी की बन आई। तख्तापलट का एलान नहीं हुआ लेकिन वज़ीर-ए-आजम की हालत कठपुतली जैसी हो गई। पाकिस्तानी आर्मी चीफ ने प्रेस कांफ्रेंस बुलाकर कहा— हम जंग के लिए तैयार हैं। हमे हालात का अंदाज़ा पहले से ही था, इसलिए हमने फ्रंट पर फौज की तैनाती शुरू कर दी थी। ना तो हम हमला करने से गुरेज करेंगे और ना ही एटमी हथियारों का पहले इस्तेमाल करने में पीछे रहेंगे। एक सहाफी ने आर्मी चीफ से पूछा — यहां की आवाम तो शहंशाह-ए-पकौड़ा रामभरोसे जी का इकॉनमिक मॉडल लागू करने की मांग कर रही है, ऐसे माहौल में आप जंग को किस तरह जायज़ ठहरा पाएंगे? जनरल ने चिढ़ते हुए जवाब दिया— आप तय कर लें पाकिस्तान को एटम बम चाहिए या पकौड़ा? जवाब में कई आवाज़ें एक साथ उठी— पकौड़े।

जनरल ने गुर्राते हुए कहा— ख़बरदार अगर किसी ने पकौड़े का नाम भी लिया। हमारे पास एटम बम है।

एक पत्रकार ने दूसरे से फुसफुसाकर कहा— पकौड़े का नाम दोबारा मत लेना वर्ना जनरल साहब नाराज़ होकर यही बम फोड़ देंगे। लेकिन दूसरा पत्रकार ढीठ था, वह पूछ बैठा— पकौड़ा मुल्क की तकदीर बदल सकता है लेकिन एटम बम नहीं। क्या आप एटम बम खा सकते हैं? जनरल ने कहा— हमारे एटम बम पकौड़े से भी ताकतवर है। अगर हिंदुस्तान ने कोई ऐसी-वैसी हरकत की तो मैं उसपर पकौड़ो से हमला करूंगा, मेरा मतलब है, एटम बम से हमला करूंगा।

ब्लैकमेलिंग कमज़ोर का हथियार होता है। पाकिस्तान ब्लैकमेलिंग पर उतर आया था। इंडियन थिंक टैक ने जब पिछले कुछ समय के घटनाक्रम पर गौर किया तो होश उड़ गये। पिछले दो महीने से चीनी बॉर्डर पर बढ़ रहा तनाव अकारण नहीं था। चीन ने तनाव इसलिए बढ़ाया था ताकि ज्यादातर फौज उधर तैनात करनी पड़े और पाकिस्तान की तरफ भारत का ध्यान ना जाये। अपने अध्ययन कक्ष में बैठे प्रधानमंत्री ने गहरी सांस ली। भारतीय लोगो को उदारता का फायदा दुश्मन हमेशा उठाते आये हैं।

चीन का फन कुचलने के अनगिनत मौके आये लेकिन भारत ने दरियादिली दिखाई। ठीक उसी तरह जिस तरह पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को पकड़ने के बावजूद अभयदान दिया था। ...और कुछ नहीं तो चीनी प्रधानमंत्री जब भारत आया था, उसी समय समय उसे बंदी बनाया जा सकता था। लेकिन ये मौका भारत ने अपनी उदारता में गंवा दिया। तीन एटम बम और पाकिस्तान का पूरी तरह खात्मा। सैकड़ो एटम बम पड़े हैं, भारत के पास लेकिन कभी इस्तेमाल करने का ख्याल तक नहीं आया क्योंकि हम `सर्वे भवतु सुखिन' और `वसुधैव कुटुंबकम' में यकीन रखते हैं। दुनिया इसी का फायदा उठाती है। फौज का बड़ा हिस्सा चीनी बॉर्डर पर है और बाकी इलेक्शन ड्यूटी पर। कुछ जगहों पर बाढ़ पीड़ितों की मदद हो रही है। ऐसे में सेना को बॉर्डर तक पहुंचने में अच्छा-खासा वक्त लग जाएगा। इस बीच अगर हमला हो गया तो? इस हालत से बचने का एकमात्र तरीका यही है कि पाकिस्तान को अभी कुछ वक्त तक बातचीत में उलझाकर रखा जाये ताकि भारतीय फौज बॉर्डर तक पहुंच जाये। लेकिन ये कैसे होगा? सोचते-सोचते प्रधानमंत्री ने अपनी आंखें बंद कर ली।

ले पाकिस्तान फिर तेरा मुंह काला हो गया,
पीएम ने बंद की आंखे तेरा दिवाला हो गया!

शिवजी जब तीसरा नेत्र खोलते थे तो धरती पर प्रलय आ जाता था। पीएम ने उस रात आंखे बंद की तो सरहद पर हड़कंप मच गया। भारत भूमि की यही विशेषता युगो-युगो से रही है। ईश्वर आंखे बंद करे या नेत्र खोले कुछ ना कुछ होता है। लेकिन भारत की सीमाओं पर अचानक जो कुछ हुआ, वह अकल्पनीय था। प्रधानमंत्री भी भूल चुके थे कि उनके पास एक ऐसी ताकतवर अदृश्य फौज है जो सिर्फ तीन घंटे में बॉर्डर तक पहुंच सकती है, भले ही सेना को तीन दिन का वक्त लगे। ना तो सरकार को ख़बर थी ना भारत के आम नागरिको को इल्म लेकिन बॉर्डर पर पाकिस्तान के हाथ-पांव फूल चुके थे। पाकिस्तानी रेंजर्स ने पंजाब बॉर्डर पर देखा— हिमाद्रि तुंग श्रृंग से हज़ारों प्रबुद्ध शुद्ध भारती चले आ रहे हैं। ना तोप ना टैंक बस हाथों में लाठियां हैं। आखिर कौन हैं ये लोग जो इस तरह निर्भय होकर दावानल की तरह बढ़े आ रहे हैं। सेनानियों का मस्तक गर्व से ऊंचा था, माथे पर तिलक लगा था। और होठो पर था पंडित पीयूष मिश्रा विरचित उत्तर आधुनिक वैदिक युद्ध गीत—

आरंभ है प्रचंड बोले मस्तको के झुंड
आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो
आन-बान शान या कि जान का हो दान
एक धनुष के बाण पे तुम उतार दो

पंजाब ही नहीं राजस्थान और कश्मीर बॉर्डर पर भी यही हाल था। पाकिस्तानी कमांडर अपने सीनियर्स से फायरिंग के आदेश मांग रहे थे। लेकिन सीनियर हिचकिचा रहे थे। उनकी दलील थी कि ये निहत्थे हैं। मतलब हाथ में केवल लाठियां हैं। अगर हमने इन पर गोली चलाई तो पूरी दुनिया हम पर आर्थिक प्रतिबंध लगा देगी। बैलेंस ऑफ पेमेंट दो ही हफ्ते का है। भुखमरी हो जाएगी पाकिस्तान में। लेकिन सच यह है कि भारतीय रणबांकुरों के तेज ने उन्हे भयभीत कर दिया था। पाकिस्तान के बड़े अफसर चुपचाप देखते रहे। आखिर उरी सेक्टर पर पाकिस्तानी सैनिक अपना संयम खो बैठे। उन्होने गोले दाग दिये। गोल दगते ही भारतीय रणबांकुरो के कप्तान ने रणघोष किया— आक्रमण!

आदेश सुनते ही वीरो ने अपनी लाठियों को निशाना बांधकर फेंका और दुश्मनों के तोप के मुंह बंद हो गये। तोप बेअसर हो गये तो दुश्मनों का कमांडर चिल्लाया— या अल्लाह! ये तो सेवक हैं, भागो। वायरलेस मैसेज सीधा आर्मी हेडक्वार्टर पहुंच गया। वहां मौजूद लेफ्टिनेंट जनरल ने कहा— खुदा खैर करे। ये वही सेवक हैं, जिन्होने गुमनाम रहकर हिंदुस्तान को अंग्रेजों से आज़ाद कराया था। उसके बाद इन्होने बांग्लादेश से लेकर करगिल तक हर लड़ाई में बिना सामने आये हिंदुस्तान को फतह दिलाई थी। जब ये बिना सामने आये लड़ते थे, तब भी हमें घुटने टेकने पड़ते थे। इस बार सामने आ गये हैं, हमारे फौजी तो इन्हे देखते ही बेहोश जो जाएंगे, रब जाने आगे क्या होगा?

पाकिस्तान के आला-अफसर पसीना-पसीना हो रहे थे लेकिन उनके जवान अब भी जान पर खेलकर लड़ रहे थे। उनकी बंदूको ने गोलियां उगलनी तेज़ की तो सेवको ने अपनी लाठी को बंदूक की तरह पकड़कर हिलाना शुरू किया। उन लाठियों में लेज़र जैसी तरंगे निकलनी शुरू हुई और शत्रुओं को गाजर मूली तरह काटने लगी। यह मेकिंग ओनली इन इंडिया परियोजना के तहत रक्षा उत्पादन का काम प्राइवेट कंपनियों को सौंपने का प्रभाव था, जो सीधे-सीधे सीमा पर दिख रहा था। हरेक लाठी अब लेज़र गन बन चुकी थी।

बॉर्डर पर पाकिस्तानी फौज के पांव तेजी से उखड़ रहे थे। पूरी दुनिया सांस रोककर सेवको की बहादुरी देख रही थी। युद्ध का ऐसा महान दृश्य ट्रॉय, थ्री हंड्रेड और बाहुबली तो छोड़िये 21वीं सदी के सबसे बड़े शोमैन बाबा गुरमीत राम-करीम भी अपने मैग्नस ओपम `भारत का नापाक को जवाब' में नहीं रच पाये थे। अब यह लगभग तय हो गया था कि पाकिस्तान लड़ाई में दो-तीन दिन से ज्यादा नहीं टिक पाएगा। भारत के मित्र देशों को यह डर सताने लगा था कि कहीं पाकिस्तान के सिरफिरे फौजी सिपाहसलार एटमी जंग ना छेड़ दे। लेकिन इस बीच अचानक पाकिस्तान में कुछ ऐसा हुआ जिसके बारे में किसी ने नहीं सोचा था।

अचानक सिंध और बलूचिस्तान की असेंबलियों ने आनन-फानन प्रस्ताव पारित करके कहा कि फौज ने मुल्क पर कब्जा बनाये रखने के लिए यह जंग थोपी है, जिसकी हम मजम्मत करते हैं। प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि हम फ्रंटियर से उठने वाले पकौड़िस्तान की मांग की समर्थन करते हैं और उसका हिस्सा बनना चाहेंगे। एक बदहाल मुल्क की कमर जंग ने तोड़ दी थी। लोग लाखों की तादाद में सड़क पर उतर आये थे। नज़ारा कुछ वैसा ही था, जैसे 1989 में मॉस्को और बर्लिन की सड़कों पर था। लाहौर हो या कराची हर पाकिस्तानी शहर आसमान को हिला देने वाले नारों से गूंज रहा था। थालियां बजाकर आवाम नारे लगा रही थी—

हम क्या चाहें- पकौड़ी
लड़के लेगें- पकौड़ी
सिंध मांगे— पकौड़ी
बलूचिस्तान मांगे— पकौड़ी
पंजाब मांगे— पकौड़ी
फ्रंटियर मांगे- पकौड़ी

वीर सेवक लाहौर तक पहुंच गये थे। पीछे-पीछे इलेक्शन खत्म ड्यूटी करके सेना भी तेजी से आ रही थी। लेकिन सेवको के सर-कार्यवाह-सेनापति ने हाथ जोड़कर आर्मी की लेफ्टिनेंट जनरल से निवेदन किया— देश की सेवा में तो आपलोग हमेशा तत्पर रहते हैं। कुछ दायित्व हमारे भी हैं। चीन या अमेरिका से लड़ाई होगी तब आपलोग आइयेगा। ये तो छोटा-मोटा मामला है। हम लोग ही संभाल लेंगे। ...और सेना वहीं रुक गई।

उधर हालात बेकाबू होता देखकर पाकिस्तान ने विश्व-बिरादरी से गुहार लगाई। दुनिया ने कहा कि गलती चाहे पाकिस्तान की ही क्यों ना हो युद्ध रुकना चाहिए। पाकिस्तान में माहौल बदल चुका था। वहां के प्रधानमंत्री जनभावनाओं को समझ रहे थे। वहां की चुनी हुई सरकार और आवाम दोनो सेना के खिलाफ थे और सेना के हौसले बिल्कुल पस्त। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री ने भारत के पीएम को फोन किया और जो कुछ हुआ उसके लिए क्षमा याचना की। उन्होने कहा कि करगिल में भी हमें फौज से धोखा मिला था। इस बार भी मिला है। हम हार कबूल करते हैं। भारतवर्ष के सेवक लाहौर तक पहुंच चुके हैं, हम उनकी बहादुरी को सलाम करते हैं। उनसे कहिये कि वापस लौट जायें। हमारी तहरीक-ए-तालिबान से बात हो गई है। रामभरोसे जी शाम तक इस्लामाबाद महफूज़ पहुंच जाएंगे और नागरिक अभिनंदन के बाद हम उन्हे सुरक्षित भारत भेज देंगे। पीएम ने अपने पाकिस्तानी काउंटर पार्ट की पूरी बात ध्यान से सुनी.. और इस तरह राज राजेश्वर पृथ्वीराज चौहान ने गलीज़ गौरी को एक बार फिर अभयदान दिया।

रामभरोसे को जिस रास्ते से इस्लामाबाद लाया गया उसके दोनो तरफ हज़ारो की तादाद में पाकिस्तानी आवाम खड़ी थी। भीड़ अमन और भाईचारे के तराने गा रही थी। जंग खत्म होने के बाद पकौड़ो पर लगा बैन हटा लिया गया था। खुशी मनाने के लिए लोग सड़क के दोनो तरफ बड़े-बड़े कड़ाहो में पकौड़े तल रहे थे। लाइव रिपोर्टिंग कर रहे टीवी पत्रकार चीख-चीखकर कह रहे थे कि जिस तरह अमेरिका के इतिहास में बोस्टन टी पार्टी अमर है, इसी तरह दक्षिण एशिया के इतिहास में पाकिस्तान पकौड़ा पार्टी को हमेशा याद रखा जाएगा। इस मौके पर पीपीए ने एलान किया कि आइंदा उसे पाकिस्तान पकौड़ा पार्टी के नाम जाना जाएगा।

सुरक्षा कारणों से रामभरोसे के काफिले की सारी गाड़ियां एक जैसी थी। ऐसे में यह पता करना मुश्किल था कि वे किस गाड़ी में है। फिर भी लोग इस उम्मीद में लगातार हाथ हिलाये जा रहे थे कि उनका अभिवादन किसी तरह शहंशाह-ए-पकौड़ा तक पहुंच जाये। काफिला सीधे पीएम हाउस पहुंचा, जहां उनकी अगवानी के लिए पाकिस्तान प्रधानमंत्री खड़े थे। रामभरोसे को देखते ही उन्होने कहा— वल्लाह जिंदा पीर! पीएम रामभरोसे के कदमों का बोसा लेना चाहते थे। लेकिन रामभरोसे ने कहा — कृपया शर्मिंदा ना करें मैं भारत का एक गरीब आदमी हूं। आखिर मामला हथेली के चुंबन पर सैटल हुआ। शाम को पाक पीएम उनसे मिलने उनके कमरे में आये और धीरे से बोले— दो इल्तजाएं थीं।

रामभरोसे को समझ में नहीं आया। पाक पीएम बोले— मतलब दरख्वास्त, मतलब रिक्वेस्ट यानी दो अनुरोध करना चाहता हूं आपसे। पहला यह कि पाकिस्तानी आवाम की ख्वाहिशों का मान रखते हुए आप इम्तियाज-ए-पाकिस्तान ले लें। …यह हमारा भारत रत्न है।

जी दूसरा?

आप पाकिस्तान भी ले लें…

रामभरोसे बुरी तरह चौक गये। पाक पीएम ने कहा— देखिये ये पूरा बर्र-ए-सगीर यानी उप-महाद्वीप पहले एक ही था। एक मुल्क के तौर पर भारत बुलंदियों को छू रहा है और हम पूरी तरह नाकाम हो चुके है। भाई फिर से भाई को गले लगा ले तो परेशानी क्या है। अब हम घर वापसी चाहते हैं। इसलिए मैं भारत में पाकिस्तान के विलय का प्रस्ताव लेकर आया हूं। लेकिन यह काम बहुत धीरे-धीरे करना होगा। दोनो सरकारें अगर 2050 तक ऐसा करने का रोडमैप तैयार करें तो बहुत अच्छा रहेगा।

रामभरोसे की आंखों मे आंसू आ गये। पाक पीएम आगे बोले— मैं अपनी तरफ से नहीं कह रहा हूं। पाकिस्तानी आवाम की भी दिली ख्वाहिश यही है कि दोनो मुल्क फिर से एक हो जायें। यहां कि आवाम बस केवल एक ही लफ्ज से डरती है— हिंदू राष्ट्र।

रामभरोसे थोड़ा गंभीर हुए और फिर बोले— इसमें डरने की क्या बात है। जो हिंदू है, वही पकौड़ा है और जो पकौड़ा है वही हिंदू है। जिस तरह हमारा शरीर पंच तत्वों से बना है, उसी तरह पकौड़ा भी पंच तत्वों से ही बना होता है। यह पंचतत्वों वाला पकौड़ा हमारे पाचन तंत्र में जाकर विलीन हो जाता है। लेकिन पंचत्वों से बने होने के बावजूद पकौड़ा आत्मा की तरह अमर है, क्योंकि वह दरअसल हमारी आत्मा है। हमारी अतड़ियों से निकलकर पकौड़ा खेतो तक ज्यादा है, वहां सरसो, चना, प्याज़ और गोभी जैसी वनस्पतियों को पोषित करता है और इस तरह पकौड़ा फिर से हमारे प्लेट में वापस आ जाता है। पकौड़े मुसलमान भी खाते हैं। इसलिए जो हिंदू है वही मुसलमान है, दोनो में तनिक भी फर्क नहीं। दोनो एक ही प्लेट में रखे दो पकौड़े हैं। समझ लीजिये आप प्याज वाले हैं तो हम गोभी वाले। बस इससे ज्यादा कुछ नही..

और इस बार रामभरोसे जी पाकिस्तानी प्रधानमंत्री को अपने कदमों का बोसा लेने से नहीं रोक पाये।

रामभरोसे डिनर के बाद विदा लेने लगे तो पाकिस्तानी प्रधानमंत्री उन्हे कोने में ले गये और बोले— आपकी सारी बात ठीक हैं, मगर गुजारिश है कि आप हिंदू और मुसलमान को कभी एक प्लेट में मौजूद दो पकौड़े मत कहियेगा। इससे टू नेशन थ्योरी की बू आती है और आप जानते ही हैं, टू नेशन थ्योरी ने ही सब -कांटिनेंट का बेड़ा गर्क किया है।

जवाब में रामभरोसे ने बस मुस्कुराकर पाकिस्तानी पीएम का हाथ पकड़ लिया।

शाम को अपने कमरे में जाने के बाद रामभरोसे ने दिल्ली में पीएम जी को फोन लगाया और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के साथ हुए महत्वपूर्ण वार्तालाप की जानकारी दी।

चाय से पकौड़े तक का कालचक्र

8 अप्रैल 2024, नई दिल्ली

पूरे देश को आज रात 8 बजे का इंतज़ार है, जब प्रिय पीएम जी देशवासियों को संबोधित करेंगे। 8 तारीख, 8 बजे और राष्ट्र के नाम संबोधन ये तीन ऐसे शब्द हैं, जो सुनते ही बहुत से देशवासी अब भी डर जाते हैं। इतिहास ही ऐसा है। लेकिन 2108 से 2024 के बीच केवल अच्छा ही अच्छा हुआ है इसलिए फिलहाल डरने का कोई कारण नहीं है।

निर्धारित समय पर जनता ने टीवी और रेडियो ऑन किये— भाइयों और बहनो। इस संसार की कोई ऐसी उपलब्धि नहीं है, जो हमारे महान राष्ट्र ने पिछले एक दशक में प्राप्त ना की हो। आज हम विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। सैन्य महाशक्ति इतनी बड़ी है कि पाकिस्तान ने स्वयं भारत में विलय की इच्छा जताई है। यह ख़बर आई तो बांग्लादेश के प्रधानमंत्री ने मुझे फोन किया और बोले— पीएम जी हमने क्या बुरा किया है। हमें भी मिला लीजिये अपने साथ। हम तो घर वापसी के लिए जाने कब से तैयार बैठे हैं। तो भाइयो और बहनो इस तरह अखंड भारत का सपना जल्द ही पूरा होनेवाला है। नेपाल, भूटान और अफगानिस्तान और बर्मा ही नहीं पूर्वी एशिया के कई देशों ने भी भारत में विलय का आवेदन दिया है। वसुधैव कुटुबंकम हमारा आदर्श वाक्य है,हम पूरी दुनिया को अपना मानते हैं। लेकिन प्रशासनिक दृष्टि से विश्व के इतने बड़े भूभाग का भारत में मिलाना फिलहाल उचित नहीं है। आगे इन आवेदनों पर अवश्य विचार किया जाएगा। इसके लिए विदेश मंत्रालय से अलग हम एक विलय मंत्रालय का गठन करने जा रहे हैं।

समय का एक चक्र होता है। यह चक्र आज पूरा हो रहा है। यह चक्र है, चाय की टपरी से लेकर पकौड़े के ठेले तक का। क्या कोई यह कह सकता था कि एक चायवाला भी कभी इस देश का प्रधानमंत्री बनेगा? लेकिन चायवाला बन गया। दुश्मनों की बोलती बंद हो गई। लेकिन थोड़े समय बाद उन्होने कहना शुरू कर दिया कि चायवाले के पीएम बनने से क्या होता है, हम तो असली लोकतंत्र तभी मानेंगे जब कोई पकौड़ेवाला इस देश का प्रधानमंत्री बने।

विरोधियों के ताने सुन-सुनकर मैं तंग आ गया था। फिर बहनो-भाइयों एक दिन मैने संकल्प लिया कि एक पकौड़ेवाले को इस देश का प्रधानमंत्री बनाकर दिखाउंगा।

तो मित्रो क्या किया मैने? मैने उसी तरह एक होनहार पकौड़े वाला ढूंढा जिस तरह चाणक्य ने चरवाहे चंद्रगुप्त को ढूंढा था। मेरा चंद्रगुप्त ने मेरे विचार मेरे एक शब्द को क्रांति में बदल दिया। इस क्रांति से पूरी दुनिया बदल गई। विश्वविजय कर चुका मेरा चंद्रगुप्त वाघा बॉर्डर के रास्ते भारत आ रहा है। आज राष्ट्रीय उत्सव का दिन है। आपलोग जश्न मनाइये। आप तो जाननते ही हैं कि जनता ने हमें एक बार फिर आशीर्वाद दिया है। लेकिन समय का चक्र पूरा हो चुका है। मित्रो अब मेरे मार्गदर्शक मंडल में जाने का समय आ गया है। रामभरोसे जी अब इस देश के नये प्रधानमंत्री होंगे।

अगर सचिन तेंदुलकर 2011 की वर्ल्ड कप जीत के फौरन बाद रिटायरमेंट का एनाउंसमेंट करते तब भी ऐसा भावुक माहौल नहीं बनता जो प्रधानमंत्री की इस घोषणा के बाद बना। लाखो देशवासियो ने रेडियो को पीएम जी के चरण मानकर उस पर सिर टिका दिया और फूट-फूटकर रोने लगे। टीवी देखने वालों का भी यही हाल था। एक महानायक की विदाई हो रही थी तो दूसरा महानायक आ रहा था। नया महानायक दिल्ली पहुंच गया। भव्य समारोह में श्री रामभरोसे ने भारत गणराज्य के अगले प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। रामभरोसे जी अपनी अर्धांगिनी परमसेरी देवी को इस शपथ ग्रहण समारोह में बुलाना चाहते थे लेकिन पत्नी ने फोन पर कहा — हम नहीं आएंगे। हम आइब त परंपरा टू जाई। मेहरारू को निकाले बिना इस देश में कोई महारपुरुष नहीं बनता है। हम टीविये पर आपको देख के खुस है। आप अइसे ही देस का मान बढ़ाते रहिये हम आपके लिए व्रत उपवास सब करते रहेंगे। रामभरोसे बुक्का फाड़कर रोने वाले थे। लेकिन याद आया कि गुरुजी ने कहा था कि — आंसू वीरो को शोभा नहीं देता है। उन्हे तो वीरता के कई और काम करने थे।

शपथ ग्रहण समारोह के बाद आधुनिक भारत के दो शीर्ष नेता एक-दूसरे से मिले। एक निवर्तमान प्रधानमंत्री और दूसरा वर्तमान प्रधानमंत्री। यह संबंध अब विष्णु और महेश की तरह हो चुका था। यानी यह तय करना मुश्किल था कि कौन किसका ज्यादा सम्मान करता है। रामभरोसे की इच्छा थी कि वे अपने गुरु के चरण छुएं लेकिन वे जानते थे कि कामयाब नहीं हो पाएंगे। दोनो नेताओं ने झुककर एक-दूसरे को प्रणाम किया।

रामभरोसे जी मैने कहा था कि मैं भी रामभरोसे हूं, तब आप इसका अभिप्राय समझ पाये थे— निवर्तमान प्रधानमंत्री ने मुस्कुराकर पूछा।

रामभरोसे अपने आंसुओं को नहीं रोक पाये— साहेब उस समय कुछ नहीं समझ पाया था। लेकिन अब समझ में आ गया। लोग एकदम गलत कहते हैं कि आप पिछले एक हज़ार साल के सबसे बड़े नेता हैं। आपके जैसा व्यक्ति ना कभी पैदा हुआ है और ना होगा।

निवर्तमान प्रधानमंत्री ने रुंधे हुए गले से कहा— मेरे लिए तो आप जगदगुरु सचिदानंद भगवान श्री पकौड़ेश्वरनाथ जी महाराज के अवतार... लेकिन वे वाक्य पूरा करने से पहले ही ठिठक गये। उन्हे याद आ गया कि पकौड़ेश्वरनाथ का नाम सुनते ही रामभरोसे को बीसी-एमसी का दौरा पड़ जाता है। पद की गरिमा बनी रहनी चाहिए। भारत के किसी प्रधानमंत्री ने आजतक कभी मां-बहन की गाली नहीं दी, वो भी एक ब्रहलीन संत को और वो भी राष्ट्रपति भवन में अपने शपथ ग्रहण के तुरंत बाद।

लेकिन अचानक एक चमत्कार हुआ। रामभरोसे जी ने पहली बार पकौड़ेश्वरनाथ का नाम सुनने के बाद कोई गाली नहीं दी उल्टे मुस्कुरा कर बोले— हम तो बाबा विश्वनाथ के अलावा किसी और को मानते ही नहीं थे। लेकिन संजोग देखिये। परमात्मा का ऐसा चमत्कार हुआ कि मानना पड़ा। भगवान पकौड़ेश्वरनाथ सचमुच थे। अगर नहीं होते तो ना देश बदलता ना और पकौड़ा छानकर हम कभी प्रधानमंत्री बन पाते। हम तो साक्षात भगवान पकौड़ेश्वरनाथ के सामने खड़े हैं। ...और इतना कहते ही रामभरोसे पूर्व पीएम जी के चरणों में गिर गये।

भक्त ने भगवान को पहचान लिया था। भगवान भी अपने असली रूप में आ गये। रामभरोसे के कानो में आकाशवाणी जैसी आवाज़ गूंज रही थी— उठो रामभरोसे! तुम्हे देश और दुनिया के लिए अभी बहुत कुछ करना है।

नये प्रधानमंत्री रामभरोसे ने पूर्व पीएम जी की टांगे इस तरह कसकर पकड़ रखी थी कि अगर पूर्व पीएम का शरीर योगियों जैसा बलिष्ठ नहीं होता तो वे मुंह के बल गिर जाते। उन्होने बैलेंस बनाते हुए आकाशवाणी आगे बढ़ाई— इस पावन धरती को ऐसा स्वर्ग बनाओ कि यहां का हर निवासी स्वर्गवासी हो जाये। देवताओं का मन भी धरती पर प्रवास को ललचाये। उठो तुम्हे अभी तुम्हे कई बहुत बड़े-बड़े काम करने हैं।

रामभरोसे उठकर खड़े हुए और बोले— पहला काम तो हमको यह करना है कि आपके मंदिर और भगवान पकौड़ेश्वरनाथ जन्मभूमि का कनफ्यूजन दूर करना है। दोनो एक ही हैं। इसलिए अब हम वहां आपकी यानी भगवान पकौड़ेश्वरनाथ की 360 फीट ऊंची मूर्ति लगवाएंगे। खाली एक ठो रिक्वेस्ट है— जगदगुरू सचिदानंद भगवान श्री पकौड़ेश्वरनाथ जी महाराज बहुत लंबा नाम है। यूथ को अपील नहीं करेगा। इसकी जगह खाली बाबा पकौड़ेश्वर रख दें तो कैसा रहेगा? पूर्व पीएम चेले की समझदारी देखकर अभिभूत हो गये।

उन्होने शिष्टाचार से दोनो हाथ जोड़ दिये और प्रस्थान की आज्ञा मांगी। बदले रामभरोसे ने कहा कि आप देश के पहले ऐसे नेता हैं जो मार्गदर्शक मंडल में अपने आप जा रहे हैं, भेजे नहीं गये हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि आप जैसा ना कोई पैदा हुआ है और ना होगा। मुझे इस बात की आज्ञा दीजिये कि मैं हर रविवार को अपने हाथो से मशरूम के पकौड़े बनाकर खिला सकूं। पूर्व प्रधानमंत्री की आंखें भर आईं। उन्होने कहा— मार्गदर्शक मंडल में बैठा मैं आपका मार्ग देखा करूंगा। चलते वक्त उन्होने अपनी ताबीज दिखाई। बदले में रामभरोसे ने भी अपनी ताबीज दिखाई और आंखों में आंसू लिये दोनो ने नज़रे इस तरह फेरी जैसे आज के बाद जीवन में कभी नहीं मिलेंगे।

पकौड़ेश्वरम वंदे जगदगुरूम्

1, अप्रैल 2030, श्रीहरिकोटा

मंगलमम भगवान विष्णु मंगलम गरुड़ध्वज
मंगलम पुंडीरकाक्ष मंगलाय तनो हरि

नासा से आये साइंटिस्ट्स ने भारतीय वैज्ञानिकों के साथ अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर इस पवित्र मंत्र का उच्चारण किया। 202 देशों के राष्ट्राध्यक्ष इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बनने के लिए अपनी-अपनी सीट पर विराजमान थे। दुनिया पिछले बारह साल में बहुत आगे बढ़ चुकी थी। सहारा मरूस्थल से लेकर अंटार्टिका तक विश्व का कोई ऐसा कोना नहीं था जो भारत से शुरू हुई पकौड़ा क्रांति के महान प्रभाव से अछूता हो। पूरे विश्व में खुशहाली आ चुकी थी। मृत्यु दर घटने और आर्थिक विकास का नतीजा यह था कि इंसानी आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही थी। दुनिया का वैज्ञानिक समुदाय इस बात को लेकर चिंतित था कि आनेवाले समय में मानव जाति का क्या होगा? इस धरती पर रहने लायक सारी जगहें खत्म हो जाएंगी, फिर होमो सीपियंस कहां रहेंगे? इस मामले में भी दुनिया को रास्ता एक बार फिर विश्वगुरू भारत ने दिखाया।

इसरो का मंगलयान कई बार वहां उतर चुका था और मंगल पर जीवन होने के संकेत ग्रहण कर चुका था। मंगलयान ने जो तस्वीरें भेजी थीं, उनससे पता चलता था कि मंगल ग्रह के पास विशाल भूभाग है। बहुत सी वनस्पतियां हैं, जलाशय हैं। लेकिन जीवन बहुत कम है, नहीं के बराबर। फिर भी यह तय है कि जीव वहां बसते हैं। 2028 में लौटकर आये मंगलयान पर खरोंच जैसे कुछ निशान मिले। बहुत समय तक अध्ययन के बाद इसरो के वैज्ञानिक इस निष्कर्ष तक पहुंचे कि यह एक संदेश है, जो मंगल के लोगो ने पृथ्वी वासियों को भेजा है। संदेश बहुत अस्पष्ट था। दुनिया भर के विशेषज्ञो ने इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश की। उकेरी गई चीज़ की तस्वीर ली गई उसे अलग-अलग कोण से घुमाया गया तो `हीदुिहषांविुह और `मनोुजंव्यहेदी ' की दो आकृतियां निकलकर सामने आईं। वैज्ञानिकों की समझ में फिर भी कुछ नहीं

आया। फिर प्राच्य विद्या के कुछ विशेषज्ञों की मदद ली गई। उन्होने बहुत दिमाग़ लगाया और अंतत: जो परिणाम सामने आया उससे पूरी दुनिया की आंखें फटी रह गईं। यह देवभाषा संस्कृत का सबसे शुद्ध रूप था, जिसमें दो-तीन मात्राएं अतिरिक्त लगी थीं। इन मात्राओं को निकालकर अक्षरों का संयोजन करने पर दो वाक्य बनते थे — हविषां देहि और व्यंजनम् देही। मतलब हविषा यानी ईंधन यानी भोजन मांग रहे हैं, मंगल ग्रह वासी। अगर उन्हे कोई उत्तम पकवान भेजा जाये तो धरतीवासियों से उनके संबंध सुदृढ़ होंगे और हो सकता है एक दिन वे पृथ्वी वालों को अपने ग्रह पर ज़मीन देने को भी तैयार हो जायें।

मंगल ग्रहवासियों से संपर्क करना संपूर्ण धरतीवासियों का सामूहिक उत्तरदायित्व था, जिसे भारत के प्रधानमंत्री श्री रामभरोसे के नेतृत्व में पूरा किया जा रहा था। इस धरती की सबसे नायाब चीज़ यानी पकौड़ी मंगलयान में भरकर भेजी जा रही थी और वह भी भारतीय प्रधानमंत्री के हाथ की बनी। यान पर जहां मंगलवासियों द्वारा उकेरे गये संदेश प्राप्त हुए थे, ठीक उसी के बगल में वैज्ञानिकों ने लिखा—

मंलगसीवाहे। स्यकोल विलुमतलास्य प्रजातंत्र पक्कटाविका कुरुस्वीकार।

संदेश उसी संस्कृत में लिखा गया था, जिसमें मंगल से संदेश आया था। अतिरिक्त मात्राएं हटाने और अक्षरों के क्रमवार संयोजन के बाद वाक्य इस प्रकार बनता था—

हे मंगलवासी! अस्य लोकस्य विशालमतस्य प्रजातंत्रस्य पक्कवाटिका: स्वीकुरु।

अर्थात— हे मंगलवासी! आप इस लोक के सबसे बड़े प्रजातंत्र के पकौड़े स्वीकार कीजिये।

मंगलयान तैयार था। मंगलयान जब पहली बार भेजा गया था, तब उसकी यात्रा की लागत हवाई जहाज के बराबर थी। फिर लागत घटकर रेल के किराये के बराबर हुई और वैज्ञानिक प्रगति के कारण सफर का खर्च घटते-घटते कोलकाता के ट्राम के बराबर जा पहुंचा। देश के विजनरी प्रधानमंत्री रामभरोसे जी ने वैज्ञानिकों और नीति आयोग से पूछा कि मंगलयान को अपने देश में यातायात के साधन के रूप क्यों इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है? सुझाव पंसद आया और इसे 2040 तक अमल में लाने की योजना पर काम शुरू हो गया।

लेकिन श्रीहरिकोटा में आज जो हो रहा था कि उसका अपना महत्व था। इसरो के वैज्ञानिक भी कंट्रोल में रूम तैयार थे। नासा वाले पोजीशन ले चुके थे। दुनिया भर के वैज्ञानिक और अध्येता दम साधकर देख रहे थे। नागपुर वाले वेदपाठी ब्राहण ने शंख

फूंका... पूं...ऊ...ऊ... ऊ… पाकिस्तान से आये तिलकधारी मौलानाओं ने घड़ियाल बजाने शुरू किये। ग्यारह हज़ार नारियल एक साथ फोड़े गये और मंगलायन चल पड़ा पकौड़े लेकर।

थोड़ी देर बाद कंट्रोल के वैज्ञानिको ने यह सूचना दी कि मिशन कामयाब हो गया है। मंगलयान सफलतापूर्वक अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा है। दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों ने गले लगकर एक-दूसरे को बधाई दी। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री श्री रामभरोसे बहुत गंभीर थे। परियोजना की सफलता को लेकर वे और ज्यादा आश्वस्त होना चाहते थे। उन्होने इसरो के निदेशक को पास बुलाया और पूछा— पकौड़े के साथ चटनी रखवा दी थी ना दोनो तरह की?

इसरो के निदेशक ने जवाब में थंप्स अप किया। पास खड़े नासा के डायरेक्टर ने एचआरडी और साइंस एंड टेक्नोलॉजी मिनिस्टर सपना मल्होत्रा से कहा— कितने परफेक्शनिस्ट हैं आपके प्रधानमंत्री! सपना ने मुस्कुरा कर जवाब दिया— हां बिल्कुल अपने गुरु की तरह।

~पकौड़ेश्वरम वंदे जगदगुरूम्~

लेखक परिचय

व्यंग्य ना तो संस्कारी होते हैं ना दरबारी। टेढ़ापन ही व्यंग्य का असली संस्कार है। राकेश कायस्थ मौजूदा पीढ़ी के उन चंद लेखकों में शामिल हैं, जो व्यंग्य की ताकत और व्यंग्यकार होने की जिम्मेदारी को ठीक से समझते हैं। समय, समाज और सत्ता की विसंगतियों को देखने जो लेंस इनके पास है, वह विरल है। 2015 में आई राकेश की किताब कोस-कोस शब्दकोश ने खूब चर्चा बटोरी। यथावत पत्रिका में पिछले पांच साल से चल रहा कॉलम बतरस भी काफी लोकप्रिय है। टीवी पत्रकारिता के लंबे सफर में आजतक, तेज़ और न्यूज़ 24 जैसे चैनलों के लिए कई लोकप्रिय व्यंग्य कार्यक्रमों की परिकल्पना, लेखन और निर्देशन भी इनके खाते में दर्ज़ हैं। एंटरेनमेंट टेलिविजन से पुराना नाता रहा है, जिसकी निशानियां मूवर्स एंड शेकर्स जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों में पाई जाती हैं। सिनेमा, विज्ञापन और खेलों की दुनिया में गहरी रूचि रखने वाले राकेश फिलहाल स्टार टीवी नेटवर्क से जुड़े हैं।

rakesh.kayasth@gmail.com

राकेश कायस्थ की लोकप्रिय किताब कोस-कोस शब्दकोश आप इस लिंक से प्राप्त कर सकते हैं।

http://bit.ly/KosKosShabdKosh

राकेश कायस्थ का व्यंग्य कॉलम बतरस आप इस लिंक को चटकाकर पढ़ सकते हैं।

https://www.yathavat.com/category/बतरस/

फर्स्ट फोस्ट के लिए लिखी गई लेखक की सम-सामयिक और व्यंग्यात्मक टिप्पणियां पढ़ने के लिए नीचे दिये गये लिंक को क्लिक करें।

https://hindi.firstpost.com/author/rakesh-kayasth/